अफ्रीका की लोक कथाऐं

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Africa Ki Lok Kathayen (Folktales of Africa)
Cover Page picture: African Drums
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2014
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Africa

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

अफ्रीका की लोक कथाऐं 7

अफ्रीका की लोक कथाऐं 9

1 चालाक बूढ़ा बिल्ला 11

2 पशुओं और पक्षियों की लड़ाई 14

3 गिलहरी और शेर 18

4 तीन चूहे 23

5 बड़ा अंडू और छोटा अंडी 31

6 शेर का राज्य मन्त्री 43

मध्य अफ्रीका की लोक कथाऐं 49

7 बन्दर और खरगोश 51

उत्तरी अफ्रीका की लोक कथाऐं 59

पूर्वीय अफ्रीका की लोक कथाऐं 61

8 तीन उम्मीदवार 63

9 हयीना जिसने एक लड़की से शादी की 69

10 गधे के कान वाला राजा 77

दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं 81

11 हमेशा के लिये गया पेड़ 83

12 ताश खेलने वाला 88

13 वुनगेलेमा 107

14 जादुई खीरे 117

पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं 131

15 सरदार जो बेवकूफ नहीं था 133

16 शेर की मूँछ 141

17 काला साँप और अंडे 146

18 दस तक गिनने के दो तरीके 152

19 तीन आश्चर्यजनक लड़के 163

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

अफ्रीका की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। इस तरह अफ्रीका साइज़ और जनसंख्या दोनों में एशिया से दूसरे नम्बर पर आता है। अफ्रीका की जनसंख्या **1** बिलियन से ज़्यादा है और उनमें से भी इसमें **50** प्रतिशत जनता **20** साल की उम्र से कम की है। इस तरह से यह दुनियॉ का सबसे ज़्यादा जवानों का महाद्वीप है।

इस महाद्वीप में संसार के सातों महाद्वीपों से सबसे ज्यादा देश हैं – **54** देश। मिश्र, इथियोपिया, यूगान्डा, तनज़ानिया, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, ज़िम्बाब्वे और नाइजीरिया यहॉ के जाने माने देशों में आते है। इस महाद्वीप में संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान भी है – सहारा रेगिस्तान। इसने अफ्रीका का **25** प्रतिशत हिस्सा घेरा हुआ है। इसकी मुख्य नदियॉ हैं नील नदी, ज़ाम्बेज़ी नदी, कौंगो नदी। इसकी मुख्य झील है विक्टोरिया झील जो तीन देशों में बॅटी है – केन्या, यूगान्डा और तनज़ानिया। नील नदी इस विक्टोरिया झील से यूगान्डा के उत्तर की तरफ से निकलती है और उत्तर की तरफ भूमध्य सागर की ओर चली जाती है। इसका मुख्य पहाड़ है किलिमन्जारो जो तनज़ानिया में है। इसमें तीन ज्वालामुखी चोटियॉ हैं।

इसके इथियोपिया देश को "तेरह महीने की धूप का देश" पुकारा जाता है। इसके लिसोठो देश को "आकाश में राज्य" नाम से पुकारा जाता है।[1] इसके मिश्र देश के पिरामिडों को कौन नहीं जानता। वे संसार के आठ आश्चर्यों में से एक हैं।

बहुत बड़ा होने की वजह से इसमें पूर्व से ले कर पश्चिम तक और उत्तर से ले कर दक्षिण तक बहुत भिन्नता है – खाने में, पीने में, पहनने में, रहने सहने में, लोगों की शक्लों में, भाषा में। पर एक बात सबमें एक सी है कि यहॉ के बहुत सारे देश फुटबाल खेलते हैं। यहॉ की जनसॅख्या में ईसाई और मुसलमान करीब आधे आधे हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में बहुत कम मिलता है इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है। इस महाद्वीप से हमने **550** से भी अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। अफ्रीका के **54** देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – नाइजीरिया, घाना, मिश्र, ज़ंजीबार, पश्चिमी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, इथियोपिया आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाए इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। दूसरे, अफ्रीका में नाइजीरिया और घाना देशों की लोक कथाओं में अनन्सी मकड़े, खरगोश और कछुए का अपना एक अलग ही स्थान है इसलिये इन तीनों की लोक कथाऐं भी अलग से ही दी गयीं है।

इन सब देशों की अपनी अपनी लोक कथाऐं है और अपनी अपनी दंत कथाऐं हैं। उदाहरण के लिये नाइजीरिया की योरुबा जनजाति की दंत कथाओं के अनुसार दुनियॉ का पहला आदमी नाइजीरिया के एक शहर इले–इफे में पैदा हुआ था इसलिये दुनियॉ यहीं से शुरू होती है और यहॉ की सभ्यता दुनियॉ की हर सभ्यता से पुरानी है। उधर इथियोपिया में करीब साढ़े तीन मिलियन साल पुराना एक ढॉचा ऐसा मिला है जिससे ऐसा लगता कि दुनियॉ का सबसे पुराना आदमी यहीं था। मिश्र के पिरामिडों को कौन नहीं जानता।

[1] "Land of Thirteen Months of Sunshine" and "Kingdom in the Sky"

इस पुस्तक में अफ्रीका की कुछ ऐसी लोक कथाओं का संग्रह है जिनके बारे में या तो यह निश्चित नहीं है कि वे उसके किस देश की हैं और या फिर वे उन देशों की हैं जिनकी लोक कथाऐं इतनी कम हैं कि उनको किसी अलग पुस्तक में प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। इसमें मध्य अफ्रीका और उत्तरी अफ्रीका के सभी देशों को शामिल कर लिया गया है क्योंकि वहाँ की लोक कथाऐं बहुत कम हैं। मिश्र नाइजीरिया घाना इथियोपिया ज़ंज़ीबार और दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयी हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लागों को पसन्द आयेंगी और अफ्रीका के बारे में बहुत कुछ जानकारी देंगी। सो प्रस्तुत है तुम्हारे हाथों में यह अफ्रीका की लोक कथाओं का पहला सग्रह – "अफ्रीका की लोक कथाऐं"।

संसार के सात महाद्वीप

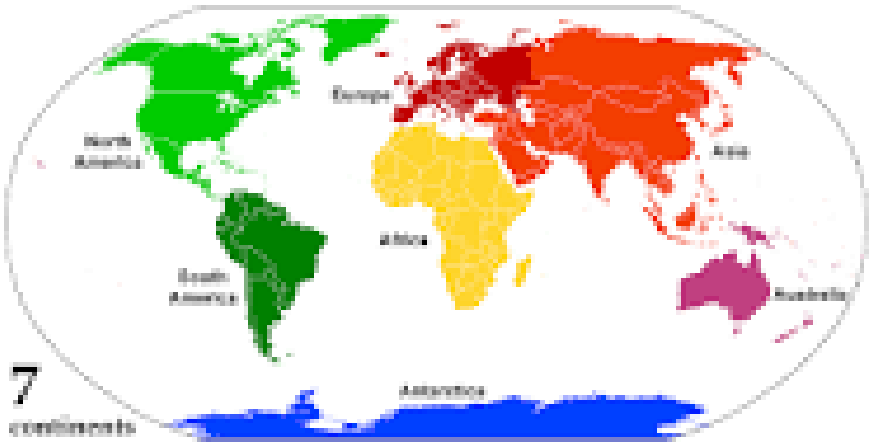

Principal Countries of Africa

North Africa (6)
(1) Algeria (2) **Egypt** (3) Libya (4) Morocco (5) Tunisia (6) Western Sahara

East Africa (8)
(1) Djibouti (2) Eritrea (3) **Ethiopia** (4) Kenya (5) Madagascar (6) Sudan (7) **Tanzania** (8) Uganda

Southern Africa (10)
(1) Botswana (2) Lesotho (3) Malawi (4) Moratius (5) Mozambique (6) Namiba (7) **South Africa** (8) Swaziland (9) Zambia (10) Zimbabwe

West Africa (16)
(1) Benin (2) Burkina Faso (3) Cape Verde (4) Ivory Coast (5) Gambia (6) **Ghana** (7) Guinea (8) Guinea-Bissau (9) Liberia (10) Mali (11) Mauritania (12) Niger (13) **Nigeria** (14) Senegal (15) Sierra Leone (16) Togo and Dahomey

Central Africa (7)
(1) Angola (2) Cameroon (3) Central African Republic (4) Chad (5) Congo (6) Gabon (7) Zaire

Folktales of highlighted countries are given under their own titles.

अफ्रीका की लोक कथाऐं

इस भाग में अफ्रीका की वे लोक कथाऐं दी गयी हैं जिनके देशों का पता नहीं लग पाया है।

1 चालाक बूढ़ा बिल्ला[2]

एक बार एक समय में अफ्रीका में एक जवान बिल्ला रहता था। वह बहुत तेज़ था, बहुत ताकतवर था और हमेशा ही उसके पास बहुत सारा खाना रहता था। वह वहाँ का सबसे अच्छा चूहे पकड़ने वाला बिल्ला था सो सारे चूहे उससे बहुत डरते थे।

धीरे धीरे वह बिल्ला बूढ़ा हो गया। उम्र के साथ साथ वह शरीर से भी कमजोर होता गया और उसके शरीर की तेज़ी भी खत्म होती गयी। इस वजह से अब उसको कभी कभी खाना भी नहीं मिलता था और उसको भूखे ही रह जाना पड़ता था।

पहले चूहे जब भी उसको आते देखते थे तो भाग जाते थे और छिप जाते थे परन्तु अब जबसे वह बूढ़ा हो गया था तबसे न उनको उससे भागने की जरूरत थी और न ही छिपने की।

अब वह खड़े खड़े देखते रहते, हँसते रहते। बूढ़ा बिल्ला बेचारा इतना कमजोर हो गया था कि वह उनके पास होते हुए भी उनको नहीं पकड़ सकता था।

एक दिन जब बिल्ला बहुत भूखा था तो उसने अक्लमन्दी से चूहा पकड़ने की सोची। वह एक जगह जा कर अपनी पीठ के बल

[2] Sly Old Cat – a folktale from Africa. Retold by Mike Lockett. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=192

बिना हिले डुले लेट गया। उसको ऐसे शान्त लेटा देख कर चूहे उसके पास आये और हॅसने लगे।

चूहों ने सोचा कि "अरे आज बिल्ले को क्या हो गया यह तो हमको पकड़ने की कोशिश भी नहीं कर रहा है।" पर फिर भी बिल्ला न बोला और न हिला।

धीरे धीरे एक छोटी चुहिया उसके पास तक पहुॅच गयी और उसको छू कर तुरन्त ही दूसरे चूहों के पास वापस आ गयी। पर बिल्ले ने सोच रखा था कि आज वह बिल्कुल नहीं हिलेगा सो वह बिल्कुल भी नहीं हिला।

उसको इस तरह शान्त लेटा देख कर चूहों की हिम्मत बढ़ गयी। उनमें से एक चूहा बोला — "लगता है कि यह बिल्ला आज मर गया।"

बस फिर क्या था चूहे धीरे धीरे उसके पास आने लगे। फिर वे एक एक कर के उसके शरीर पर चढ़ कर खेलने लगे। वे कभी आगे जाते, कभी पीछे जाते। इस तरह दौड़ते हुए वे हॅस भी रहे थे पर वह बिल्ला न कुछ बोला और न हिला।

एक बार एक चूहा भागते भागते बिल्ले के सिर तक पहुॅच गया और हॅस हॅस कर नाचने लगा "आहा, बिल्ला तो मर गया। आहा, बिल्ला तो मर गया।"

पर तभी बिल्ले ने ऑख खोली और उस चूहे को मुॅह में दबा लिया। दो चूहे उसने अपने दोनों अगले पंजों में पकड़ लिये।

उस रात उन दो चूहों से उसकी खूब अच्छी दावत हुई। अगली कुछ रातों में भी उसने खूब खाना खाया। उसके खाने में वे बेवकूफ चूहे होते थे जो यह सोचते थे कि वह मर गया है और वे उसके पास तक आ जाते थे।

कभी कभी बिल्ले की तरह से झूठ बोलना भी फायदा करता है।

2 पशुओं और पक्षियों की लड़ाई[3]

एक बार की बात है कि एक मुर्गा और एक हाथी पास पास रहते थे। एक दिन हाथी ने मुर्गे की झोंपड़ी का डंडा तोड़ दिया तो मुर्गे ने भी बदले में हाथी की झोंपड़ी में कूड़ा कबाड़ फेंक दिया।

हाथी ने जब अपने घर में इतना सारा कूड़ा कबाड़ देखा तो वह आग बबूला हो गया और बोला — "ज़कारा, इस बात का फैसला तो अब लड़ाई से ही होगा। तुम ऐसे नहीं मानोगे।"

मुर्गा बोला — "ठीक है ठीक है, पर लड़ाई से पहले हम लोग अपने अपने सम्बन्धियों को इस लड़ाई के बारे में तो बता दें।"

सो हाथी ने जंगल के सभी जानवरों को और मुर्गे ने जंगल के सभी पक्षियों को कहला भेजा कि उन दोनों में लड़ाई होने वाली है और सारे जानवर और पक्षी लड़ाई के लिये तैयार हो जायें।

दोनों ओर से लड़ाई की पूरी पूरी तैयारियॉ हो गयीं। जानवरों का कप्तान बना भेड़िया और पक्षियों की कप्तान बना चील।

[3] The War Between the Birds and the Beasts (AT 222) – a folktale from Africa

चील ने शुतुरमुर्ग को पशुओं की सेना को देखने के लिए भेजा। इसी समय भेड़िये ने भी यही सोचा कि पक्षियों की सेना की जॉच की जाये और दोनों एक दूसरे की तरफ चल दिये।

भेड़िया बोला — "कहो जिमिना, क्या तुम्हारी सेना तैयार है?"

शुतुरमुर्ग बोला — "बिल्कुल, और तुम्हारी?"

भेड़िया बोला — "हमारी भी।"

शुतुरमुर्ग बोला — "ठीक है, तुम अपने साथियों को बोलो और मैं अपने साथियों को जा कर बोलता हूँ कि हम सब लड़ाई के लिये तैयार हैं।" और शुतुरमुर्ग वापस अपनी सेना की ओर चल दिया।

जैसे ही शुतुरमुर्ग वापस जाने के लिए मुड़ा तो भेड़िये ने देखा कि शुतुरमुर्ग की टॉगों पर तो बहुत मॉस है। उस मॉस को देख कर उसके मुँह में पानी भर आया।

वह तुरन्त बोला — "जिमिना रुको, क्यों न पहले हम तुम आपस में ही लड़ लें। हममें से जो जीतेगा वह जीत जायेगा।"

शुतुरमुर्ग बोला — "ठीक है, पहले तुम मुझे तीन बार मारो फिर मैं तुम्हें तीन बार मारूँगा।"

भेड़िया अपनी जगह से उठा और उसने शुतुरमुर्ग पर तीन बार वार किया।

"अब मेरी बारी है।" कह कर शुतुरमुर्ग ने अपनी चोंच से भेडिये को नोचा और अपने पंजे भी मारे।

भेड़िया परेशान हो गया और बोला — "तुम्हारी बारी अब खत्म हो गयी।"

शुतुरमुर्ग बोला — "नहीं, अभी मेरी बारी खत्म कैसे हो गयी, यह तो अभी एक ही बार हुआ है। अभी तो मेरे दो बार और बाकी हैं।"

कह कर वह उड़ा और अपनी चोंच से भेड़िये की दोनों ऑखें निकाल लीं। इसके बाद वे दोनों अपनी अपनी सेनाओं में चले गये।

जानवरों ने जब भेड़िये को अन्धा देखा तो पूछा — "भाई भेड़िये, यह क्या हुआ?"

भेड़िया बोला — "वे लोग हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं। देखो न उन्होंने मेरे साथ कैसा बर्ताव किया है।"

यह देख कर सभी जानवरों को बड़ा गुस्सा आया। लड़ाई का ऐलान कर दिया गया और दोनों सेनाऐं आगे बढ़ने लगीं।

चील आगे बढ़ा, उसने मुर्गे को सलामी दी और मुर्गी के कुछ अंडे उठा कर हाथी के सिर पर दे मारे और चिल्लाया — "देखो देखो, हाथी का सिर फूट गया। हाथी का सिर फूट गया।"

जब हाथी ने यह सुना तो अपनी सूँड़ से अपना सिर छू कर देखा और बोला — "हे भगवान, अभी तो मेरा सिर सलामत है।"

उसके बाद चील ने एक रस्सी ली और हाथी के आगे फेंकता हुआ बोला — "देखो देखो, हाथी की सूँड़ कट गयी, देखो हाथी की सूँड़ कट गयी।"

जानवरों ने उस रस्सी को हाथी की सूँड़ समझा और वहाँ से उलटे पैरों भाग खड़े हुए। उन जानवरों के पीछे पीछे और जानवर भी भाग लिये। लड़ाई का मैदान जानवरों से खाली हो गया। बस फिर क्या था मुर्गा जीत गया और हाथी हार गया।

लड़ाई के बाद मुर्गा अपने घर वापस गया। उसने चील को बुलाया और कहा — "शैफ़ो, मैं तुम्हें इस लड़ाई में किये गये काम के लिए कुछ इनाम देना चाहता हूँ। वह यह कि आज के बाद जब भी हमारी पत्नियाँ बच्चे देंगी तो तुम एक बच्चा हर परिवार से ले सकते हो यही तुम्हारा इनाम है।"

अक्लमन्दी से काम लेने पर अपने से ज़्यादा ताकतवर दुश्मन को भी हराया जा सकता है इसलिये ताकतवर दुश्मन के सामने ताकत से नहीं बल्कि अक्लमन्दी से ही काम लेना चाहिये। चील ने अक्लमन्दी से काम लिया तो बड़े बड़े जानवरों को भी हरा दिया।

3 गिलहरी और शेर[4]

एक बार जंगल के जानवरों ने देखा कि शेर उनमें से बहुत से जानवरों को खा गया है और उनके जानवर कम होते जा रहे हैं।

यह देख कर उन्होंने आपस में एक मीटिंग बुलायी और कहा — "देखो भाइयो अगर हम लोग ज़िन्दा रहना चाहते हैं तो हमें अपने बचाव की कोई न कोई तरकीब जरूर सोचनी होगी नहीं तो यह शेर एक दिन हम सबको खा जायेगा।"

एक जानवर बोला — "अगर हम शेर जी को एक जानवर रोज भेज दिया करें तो शायद शेर जी के जानवरों के मारने में कुछ कमी हो जाये।"

ऐसा सोच कर इस मीटिंग के बाद वे सब मिल कर शेर के पास गये। उन्होंने शेर से कहा — "हे जंगल के राजा, हम सब आपसे एक प्रार्थना करने आये हैं। वह यह कि अगर हममें से एक जानवर आपके खाने के लिए रोज सुबह आपके पास आ जाया करे तो बाकी जानवरों को आप छोड़ दें।"

शेर को उनकी यह प्रार्थना पसन्द आयी वह बोला — "ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा।"

---

[4] The Squirrel and the Lion – a folktale from Africa.
[My Note: This story is told by African children but our Indian children also tell and hear this story. The only difference between them is that in Indian story this job is done by a rabbit not by squirrel.]

शेर को उनकी यह प्रार्थना इसलिये भी पसन्द आयी क्योंकि इस तरह उसको तो घर बैठे खाना मिल रहा था और जानवर इसलिये खुश थे कि शेर अब बहुत सारे जानवरों को एक साथ नहीं खायेगा।

सभी जानवर खुशी खुशी अपने अपने घरों को वापस लौट गये और आ कर रोज एक पर्ची निकालने लगे। अब पर्ची से जिस जानवर का भी नाम निकलता उसको शेर के पास सुबह होते ही भेज दिया जाता।

पहली बार भैंसे का नाम निकला सो उसको पकड़ कर शेर के पास भेज दिया गया। दूसरे दिन बारहसिंगे की बारी आयी तो उसको भी पकड़ कर शेर के पास भेज दिया गया।

इस तरह जानवर रोज पर्ची निकालने लगे और शेर को अब रोज घर बैठे ही खाना मिलने लगा। अब उसको शिकार के लिए बाहर नहीं निकलना पड़ता था। शेर भी खुश था और जानवर भी खुश थे।

लेकिन एक दिन यह पर्ची गिलहरी के नाम निकली। जानवरों ने उसे पकड़ा और उसको शेर के पास ले जाने लगे तो गिलहरी बोली — "आप लोग मुझे छोड़ दें मैं अपने आप ही शेर के पास चली जाऊँगी।"

जानवर मान गये और उन्होंने उसको छोड़ दिया। गिलहरी अपने घर चली गयी और अगले दिन दोपहर तक सोती रही।

उधर शेर को बहुत तेज़ भूख लगी थी। वह परेशान सा झाड़ियों के आस पास घूमता रहा और खाने के लिये कुछ कुछ ढूँढता रहा।

तीसरे पहर गिलहरी उठी और शेर की माँद की तरफ चली। वहाँ जा कर उसने देखा कि शेर तो पागलों की तरह इधर उधर घूम रहा है। उसको यह देख कर बड़ा मजा आया। वह एक पेड़ पर चढ़ गयी और शेर से बोली — "आप इतने परेशान क्यों हैं शेर जी।"

शेर बोला — "मैं सुबह से खाने का इन्तजार कर रहा हूँ और तुम लोगों ने अभी तक मेरे खाने के लिए कुछ भी नहीं भेजा है।"

गिलहरी बोली — "ओह शेर जी, वह ऐसा हुआ कि आज जब हम लोगों ने पर्ची निकाली तो उस पर्ची में मेरा नाम निकला।

मैं आपके लिए शहद भरा प्याला ले कर चली आ रही थी कि रास्ते वाले कुँए के पास मुझे एक और शेर मिल गया। वह मेरे हाथ से शहद का प्याला छीन कर भाग गया।"

शेर तो यह सुन कर गुस्से में भर गया और बीच में ही बात काट कर बोला — "अच्छा दूसरा शेर? मगर वह दूसरा शेर है कहाँ?"

गिलहरी बोली — "वह तो अन्दर कुँए में है पर वह आपसे बहुत ज़्यादा ताकतवर है।"

यह सुन कर तो शेर को और अधिक गुस्सा आ गया और उसके तन बदन में आग सी लग गयी।

वह गिलहरी से बोला — "चलो, मुझे दिखाओ उस शेर को। वह मुझसे ज़्यादा ताकतवर कैसे हो सकता है। मैं अभी मारता हूँ उस शेर को।"

गिलहरी शेर को साथ ले कर उस कुँए तक आयी जिसमें उसने बताया था कि वह दूसरा शेर छिपा हुआ है। शेर ने उस कुँए में झाँका।

कुँए में उसको अपनी परछाईं दिखायी दी तो उसे लगा कि गिलहरी तो सच ही कह रही थी। वहाँ तो सचमुच ही दूसरा शेर उस कुँए में बैठा उसे घूर रहा था।

उसने आव देखा न ताव बस उस शेर पर हमला कर दिया। वह उस कुँए में कूद गया और कूदते ही डूब कर मर गया।

गिलहरी अपने घर वापस चली गयी और जा कर जानवरों से बोली — "मैंने आज शेर को मार दिया है इसलिये आप सब आज से आजाद हैं। अब आप आराम से रहें। मैं अपने घर चली।"

यह सुन कर सभी जानवरों को बड़ा आश्चर्य हुआ वे सब एक साथ बोले "कैसे?"।

तब गिलहरी ने उनको अपनी सारी कहानी सुनायी।

फिर सभी एक साथ बोले — "किसी ने सच ही कहा है अक्लमन्दी ताकत से बड़ी होती है। देखने में छोटी सी गिलहरी ने अपनी अक्लमन्दी से इतने बड़े शेर को मार दिया।"

4 तीन चूहे[5]

एक चूहा नगर था जिसमें तीन अजीब चूहे रहते थे। उनमें से एक चूहा लम्बी टॉगों वाला था, उसको सारे चूहे लम्बू के नाम से पुकारते थे। दूसरा चूहा बहुत मोटा था, उसको सारे चूहे मोटू के नाम से पुकारते थे और तीसरा चूहा बहुत ही छोटा था सो उसका नाम छोटू पड़ गया।

एक बार उन तीनों चूहों ने अपनी किस्मत आजमाने की सोची। इस पर लम्बू छोटू से बोला — "अरे छोटू, तू क्या अपनी किस्मत आजमायेगा, तू तो है ही बहुत छोटा। जा घर में बैठ और अपनी मूँछें सँवार। इतनी बड़ी दुनिया और तू छोटा सा, तू कर ही क्या सकता है।"

[5] Three Rats – a folktale from Africa

इस पर मोटू ने लम्बू भाई की तरफ से बोलते हुए कहा — "हॉ हॉ, तू कर ही क्या सकता है छोटू। जा जा, घर भाग जा।"

पर छोटू गिड़गिड़ाते हुए बोला — "नहीं नहीं, मोटू और लम्बू भाई ऐसा न कहो। मैं भी तुम लोगों के साथ अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ। मुझे भी अपने साथ ले चलो न। मुझे भी अपनी किस्मत आजमाने दो न।"

सो तीनों चूहे अपनी अपनी किस्मत आजमाने निकल पड़े।

वे तीनों बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि उनको एक सरकस दिखायी दिया। उन्होंने पास जा कर देखा तो वह सरकस तो चूहों का ही निकला।

एक चूहा सरकस के बाहर खड़ा आवाज लगा रहा था — "आओ आओ, दुनियॉ का सबसे लम्बा चूहा देखो, केवल एक पैसे में, आओ, आओ।"

लम्बू बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि इस सरकस का चूहा मुझसे अधिक लम्बा नहीं हो सकता।"

सो उन तीनों ने एक एक पैसा दिया और उस लम्बे चूहे को देखने के लिये उस सरकस में घुस गये। वह दुनियॉ का सबसे लम्बा चूहा तो सचमुच में ही बहुत लम्बा था परन्तु वह लम्बू के बराबर लम्बा नहीं था।

सरकस के मालिक ने जब लम्बू को देखा तो बोला — "तुम हमारे सरकस में क्यों नहीं आ जाते? मैं तुमको दूसरे चूहों से दोगुनी तनख्वाह दूँगा क्योंकि तुम तो हमारे लम्बे चूहे से भी अधिक लम्बे हो।"

नेकी और पूछ पूछ। लम्बू राजी हो गया। उसकी किस्मत अच्छी थी उसको तुरन्त ही नौकरी मिल गयी थी। लम्बू ने अपने दोनों भाइयों को विदा कहा और सरकस में चला गया। छोटू और मोटू अपने सफर पर आगे बढ़ गये।

वे लोग कुछ ही दूर आगे गये थे कि उनको एक और सरकस दिखायी दिया। इत्तफाक से वह सरकस भी चूहों का ही था।

यहाँ एक चूहा सरकस के बाहर खड़ा चिल्ला रहा था — "केवल एक पैसा दो और दुनियाँ का सबसे मोटा चूहा देखो, आओ आओ, जल्दी करो।"

मोटू बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि इस सरकस का चूहा मुझसे अधिक मोटा नहीं हो सकता।" सो दोनों ने यहाँ भी एक एक पैसा दिया और दुनिया का सबसे मोटा चूहा देखने उस सरकस के अन्दर पहुँच गये।

उस सरकस में दुनियाँ का सबसे मोटा चूहा मोटा तो जरूर था पर फिर भी वह मोटू जितना मोटा नहीं था।

मोटू को देख कर सरकस का मालिक मोटू से बोला — "क्या तुम मेरे सरकस में काम करना पसन्द करोगे? मैं तुमको बहुत अच्छे

पैसे दूँगा क्योंकि तुम हमारे सरकस के मोटे चूहे से भी ज़्यादा मोटे चूहे हो।"

मोटू को और क्या चाहिये था, वह राजी हो गया। उसकी भी किस्मत चमक उठी थी।

उसने छोटू को विदा कहा और सलाह दी — "छोटू, तुम अब भी मान जाओ, तुम इतनी बड़ी दुनियॉ में कुछ भी नहीं कर पाओगे। तुम बहुत छोटे हो। घर जाओ और घर जा कर अपनी मूँछें सँवारो।"

"नहीं, मैं भी अपनी किस्मत आजमाऊँगा।" कह कर छोटू अकेला ही अपने सफर पर आगे बढ़ गया।

कुछ दूर जाने पर उसको एक और सरकस मिला। इत्तफाक से वह सरकस भी चूहों का था। वहॉ एक चूहा बाहर खड़ा चिल्ला रहा था — "इधर आओ और एक पैसे में दुनियॉ का सबसे छोटा चूहा देखो।"

छोटू ने सोचा "शायद यहीं मेरी किस्मत चमकेगी"।

सो उसने अपना आखिरी पैसा उस सरकस वाले को दिया और दुनियॉ का सबसे छोटा चूहा देखने सरकस में चला गया। वहॉ दुनियॉ का सबसे छोटा चूहा तो जरूर मौजूद था परन्तु वह छोटू जितना छोटा चूहा नहीं था।

पर वहॉ कोई भी छोटू को काम देने के लिये आगे नहीं बढ़ा, तो वह बेचारा खुद ही उस सरकस के मालिक के पास गया और बोला — "मैं तो तुम्हारे इस छोटे से चूहे से भी बहुत छोटा हूॅ फिर तुम मझे अपने सरकस में काम क्यों नहीं देते?"

सरकस के मालिक ने उसे घूरा और प्यार से मुस्कुरा कर बोला — "मैं तुमको अपने सरकस में काम नहीं दे सकता। तुम निश्चय ही दुनियॉ के सबसे छोटे चूहे हो क्योंकि मैं खुद ही तुमको बड़ी मुश्किल से देख पा रहा हूॅ।

पर तुम्हारे साथ परेशानी यह है कि तुम सचमुच में ही बहुत छोटे हो। जब मैं सामने खड़ा तुमको ठीक से नहीं देख पा रहा हूॅ तो जनता तुमको कैसे देख पायेगी? और जनता अपना पैसा ऐसी चीज़ों को देखने में खराब नहीं करेगी जिसे वह ठीक से देख ही न सकती हो।"

बेचारा छोटू दुखी सा अपनी पूॅछ हिलाता हुआ खाली जेब वहॉ से चल दिया। वह सोचता जा रहा था कि उसके दोनों भाई ठीक ही कह रहे थे कि "छोटू, तू दुनियॉ में कुछ नहीं कर सकता, जा घर जा कर अपनी मूॅछें सॅवार।"

पर फिर भी वह सड़क के किनारे किनारे धीरे धीरे चलता जा रहा था कि शायद कहीं कभी कुछ हो जाये।

चलते चलते अॅधेरा होने लगा था और छोटू को अब भूख भी लग आयी थी। इतने में उसे सामने एक किला दिखायी दिया।

उसने सोचा यहाँ तो खाने पीने को खूब मिलेगा सो उसने उस किले के अन्दर जाने का विचार किया।

उस किले में अन्दर जाने के लिये बहुत सारे छेद थे सो एक छोटे से छेद में से हो कर छोटू किले के अन्दर पहुँच गया। उसने वहाँ खूब खाया और खूब बिगाड़ा।

जब वह खा बिगाड़ कर खूब थक गया तो उसने चारों तरफ निगाह दौड़ायी। एक कोने में उसको एक सुनहरा गोला दिखायी दिया जिस पर बहुत सारे कीमती हीरे जवाहरात जड़े हुए थे और जो बहुत चमक रहे थे।

वास्तव में वह एक अंगूठी थी पर छोटू यह बात नहीं जानता था। उसने उसे खेलने की चीज़ समझा और उसने उससे खेलना शुरू कर दिया। वह उसे कभी इधर लुढ़काता तो कभी उधर। अंगूठी भारी थी, छोटू को उसको लुढ़काने के लिये काफी ज़ोर लगाना पड़ रहा था।

परन्तु उसकी चमक उसको अच्छी लग रही थी कि यकायक वह अंगूठी और छोटू दोनों ही एक छेद से बाहर गिर पड़े।

"ओह, मेरी खोयी हुई अंगूठी।" मीठी सी आवाज में किसी ने कहा। छोटू की तो बस जान ही निकल गयी जैसे। उसने उस अंगूठी को किसी स्त्री को उठाते हुए देखा तो वह वहाँ से डर के मारे भागा।

पर उस स्त्री ने पुकारा — "रुको रुको, छोटे चूहे, तुम भागो नहीं, यहाँ आओ मेरे पास। मैं तुमको सजा नहीं दूँगी। मैं तो अपनी इस अंगूठी के पा जाने के बदले में तुम्हें धन्यवाद देना चाहती हूँ। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ?"

यह सब सुन कर चूहे का डर भाग गया। वह उस स्त्री के पास आ कर बोला — "मैं नहीं जानता, मैं तो अपनी किस्मत बनाने निकला था।"

वह स्त्री बोली — "किस्मत बनाने के लिये तुम अभी बहुत छोटे हो छोटे चूहे। पर अगर तुम इतने छोटे न होते तो मुझे मेरी अंगूठी कैसे मिलती। मेरी यह अंगूठी बहुत कीमती है इसलिये इसे खोजने के बदले में मैं तुमको इनाम दूँगी। तुम कहाँ रहते हो?"

छोटू बोला — "चूहा नगर की चूहा गली के चूहा घर में।"

स्त्री बोली — "ठीक है, तुम घर जाओ। जब तक तुम घर पहुँचोगे तुम्हारी किस्मत तुम्हारा इन्तजार कर रही होगी।"

छोटू को वहाँ से अपने घर का रास्ता ढूँढने में पूरे दो दिन लग गये। जब वह घर पहुँचा तो उसकी माँ दरवाज़े पर खड़ी थी।

माँ बोली — "मेरे बेटे, तुम्हारी किस्मत तो बन चुकी है। तुमने अपने भाइयों को हरा दिया है। सोने के सिक्कों से भरे दो थैले तुम्हारे लिये आज ही आये हैं। हम अब आराम से ज़िन्दगी गुजारेंगे।"

और छोटू घर में बैठ कर अपनी मूँछें सँवारने लगा। छोटू ने सब्र किया और हिम्मत नहीं हारी थी उसी का फल उसको मिला था।

5 बड़ा अंडू और छोटा अंडी[6]

एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसके दो पत्नियॉ थीं। इत्तफाक से दोनों पत्नियों ने एक ही दिन दो बेटों को जन्म दिया। एक ने सुबह को, और दूसरी ने तीसरे पहर को।

सुबह पैदा हुए बेटे का नाम रखा गया अंडू बाबा, और तीसरे पहर में पैदा हुए बेटे का नाम रखा गया अंडी करामी।

जन्म के दिन से ही वे दोनों बिल्कुल एक जैसे लगते थे और एक साथ ही रहते थे। जब वे जवान हो गये तो उनके पिता ने उनके लिये दो अलग अलग मकान बनवा दिये।

अंडू बाबा के मकान के आगे लगा डुरूमी का पेड़, और अंडी करामी के मकान के आगे लगा चेदिया[7] का पेड़।

कुछ दिनों के बाद अंडी करामी की मॉ मर गयी तो उसके पिता ने उसको अंडू बाबा की मॉ की देखभाल में रख दिया। उस दिन से तो वे दोनों हर समय एक साथ ही रहने लगे। यहॉ तक कि कोई एक दूसरे के बिना खाना भी नहीं खाता था।

जब वे कुछ और बड़े हो गये तो उनके पिता ने उन दोनों की शादी कर दी, और वह भी एक ही दिन। जब शादी की रस्में खत्म

[6] Elder Andee and Younger Andoo – a folktale from Africa

[7] Both Durumi and Chedia are the trees of Africa.

हो गयीं तो अंडी करामी बातें करने के विचार से अंडू बाबा के घर गया।

वे दोनों रात गये तक बातें करते रहे। बाद में अंडू बाबा बोला — "अंडी, अब काफी समय हो गया है अब तुम अपने घर जाओ। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ।"

अंडी करामी बोला — "कमाल है, हम और तुम इतनी बढ़िया बातें कर रहे हैं और तुम कहते हो कि मैं घर चला जाऊँ।"

अंडू बाबा बोला — "बुरा न मानो अंडी, मैं तो तुम्हारी पत्नी के बारे में सोच रहा था। मैं नहीं चाहता कि वह तुमसे रूठ कर मेरे बारे में यह कहे कि मैं फालतू आदमी तुमको उससे दूर रखता हूँ। इसलिये चलो, घर चलो।"

अंडी को यह बात समझ में आ गयी और वह जाने के लिये तैयार हो गया। अंडू बाबा अंडी को घर तक छोड़ने गया, मगर वह खुद अंडी के घर बैठ गया और फिर वहाँ वे दोनों रात भर बातें करते रहे। सारी रात बीत गयी थी परन्तु उनकी तो बातें हीं खत्म होने पर ही नहीं आ रही थीं। लग रहा था जैसे वे बरसों बाद मिले हों।

अंडी करामी ने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे थोड़ा पानी दो, मैं हाथ मुँह धो कर अंडू बाबा के घर जा रहा हूँ।" अंडी करामी की

पत्नी ने उसको पानी ला दिया और अंडी करामी हाथ मुँह धो कर अंडू बाबा के साथ उसके घर चला गया।

लेकिन जब वे अंडू बाबा के घर आ गये तो अंडू बाबा ने फिर उसे चेतावनी दी — "देखो, औरतों को अक्ल कम होती है, उनके दिमाग में सन्तुलन की भी कमी होती है इसलिये तुमको घर पर ही अधिक समय बिताना चाहिये नहीं तो तुम्हारा अपनी पत्नी से झगड़ा हो जायेगा।"

उस दिन के बाद से अंडी करामी सोता तो अपने घर में था परन्तु सुबह शाम अंडू बाबा के घर जरूर जाता था और वे दोनों साथ ही खाना खाते थे। पर अंडू बाबा की पत्नी को भोजन का यह हिस्सा बॉट अच्छा नहीं लगता था।

एक दिन उसने अपने पति के लिये एक खास पकवान बनाया और जैसे ही अंडू बाबा उसे खाने बैठा कि अंडी करामी आ गया। अंडू बाबा बोला — "आओ आओ, बड़े मौके से आये हो, आओ तुम भी मेरे साथ ही खाना खा लो।"

लेकिन अंडी करामी को यह देख कर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा कि अंडू बाबा उसके बिना ही खाना खा रहा था। उसने बहाना बनाते हुए कहा — "मैंने अभी दवा खायी है इसलिये मैं अभी कुछ नहीं खा सकता, तुम खाओ।"

अंडी करामी वहॉ कुछ देर बैठ कर जल्दी ही अपने घर वापस चला गया और अपने एक नौकर से अपना घोड़ा सजाने को कहा।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह घोड़े पर बैठ कर अंडू बाबा के घर गया और बोला कि वह यात्रा पर जा रहा है।

अंडू बाबा ने पूछा — "लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो?"

अंडी करामी बोला — "मुझे खुद ही नहीं पता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, पर जिस दिन भी मेरे चेदिया के पेड़ की पत्तियाँ झड़ें तो तुम समझ लेना कि मैं इस दुनियाँ में नहीं हूँ।"

अंडू बाबा बोला — "क्या सचमुच ऐसा है?"

अंडी करामी बोला — "हाँ सचमुच ही ऐसा है।" और यह कह कर अंडी करामी ने अपने घोड़े की लगाम सँभाली और अपनी यात्रा पर चल दिया।

अंडी करामी और उसका नौकर अभी कुछ ही दूर गये थे कि उनको एक आलूबुखारे का पेड़[8] दिखायी दिया जिस पर दो आलूबुखारे लगे हुए थे।

वह अपने नौकर से बोला — "तुम वह दो आलूबुखारे देख रहे हो न? उनमें से एक आलूबुखारा तुम तोड़ लो और दूसरा उसके लिये छोड़ दो, शायद वह कभी इधर आ निकले।"

नौकर ने उनमें से एक आलूबुखारा तोड़ लिया। अंडी करामी ने आधा आलूबुखारा खुद खाया और आधा अपने नौकर को दे दिया।

[8] Translated for the word "Plum". See the picture of a plum tree above.

चलते चलते रात हो गयी थी इसलिये रात बिताने के लिये वे लोग एक शहर में रुके। वहॉ एक शीनट[9] का पेड़ लगा हुआ था।

उसमें दो शीनट लगे थे। सो उसमें से उसने एक शीनट तोड़ लिया, आधा खुद खाया और आधा अपने नौकर को दे दिया, और दूसरा शीनट अंडू बाबा के लिये उसी पेड़ पर छोड़ दिया।

शहर में जिस घर में उन्होंने खाना खाया उस घर के मालिक ने शाम के खाने के लिये चार मुर्गे मारे थे।

जब वह उनको अंडी करामी के पास लाया तो उसने उन मुर्गों में से दो मुर्गे उसे वापस कर दिये और कहा — "आप मेहरबानी कर के इन्हें मेरे लौटने तक बचा कर रखें।"

अगले दिन अंडी करामी अपनी यात्रा पर फिर से निकल पड़ा। दूसरे दिन वे जिस घर में रुके वहॉ उनके लिये एक भेड़ मारा गया।

वहॉ भी उसने आधा भेड़ वापस कर के घर के मालिक से कहा — "मेहरबानी कर के आप इसे मेरे लौटने तक बचा कर रखें।"

तीसरे दिन वे जिस शहर में रुके वहॉ एक कुँए में एक आदमी खाने वाला राक्षस रहता था। वहॉ के लोग उसे खुश करने के लिये साल में एक बार खाने के लिये एक लड़की दिया करते थे।

[9] Shea Nut tree is found in Africa. Its nut is used to extract cooking oil. See its picture above.

इस शहर में वे एक बुढ़िया के घर ठहरे। अंडी करामी ने घोड़े को खोल कर उसे एक पेड़ से बॉध दिया और बुढ़िया से एक बालटी मॉगी ताकि वे अपने घोड़े को कुॅए से ला कर पानी पिला सकें।

बुढ़िया बोली — "बेटा, तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो। उस कुॅए में तो एक आदमखोर राक्षस रहता है। हर साल हम लोग उसको एक लड़की खाने के लिये देते हैं।

अगर हम ऐसा न करें तो हमें पानी नहीं मिल सकता और इस समय तो हम लोग घर से बाहर बिल्कुल भी नहीं निकल सकते।"

अंडी बोला — "मॉ जी, आप मुझे बालटी तो दीजिये। उस राक्षस को मैं देख लूॅगा।"

अंडी करामी बुढ़िया से बालटी ले कर कुॅए की ओर चल दिया। उस दिन उस राक्षस को देखने की गॉव के सरदार की बेटी की बारी थी सो सरदार की बेटी वहॉ बैठी उस राक्षस का इन्तजार कर रही थी।

अंडी करामी ने अपनी बालटी पानी निकालने के लिये कुॅए में डाली तो उसे लगा कि किसी ने उसकी बालटी पकड़ ली है।

अंडी करामी बोला — "जो कोई भी कुॅए के अन्दर हो वह मेरी बालटी छोड़ दे और यदि वह मुझसे लड़ना चाहता है तो बाहर आ कर लड़े।"

कुँए में राक्षस था। वह वहीं से बोला — "ठीक है, तुम अपनी बालटी खींच लो। पर यह सोच लो कि बालटी के पीछे पीछे मैं भी बाहर आ रहा हूँ। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम यहाँ से चले जाओ।"

अंडी करामी ने अपनी बालटी ऊपर खींच ली और तलवार निकाल कर राक्षस से लड़ने को तैयार हो गया। जैसे ही राक्षस का सिर कुँए के बाहर आया तलवार के एक ही झटके से उसने उसका सिर काट दिया।

राक्षस का सिर कटा शरीर तुरन्त कुँए में गिर पड़ा। उसका शरीर कुँए में गिरने से कुँए में एक ज़ोर की आवाज हुई और कुँए का पानी उछल कर सारे शहर में बिखर गया।

राक्षस को मारने के बाद अंडी करामी ने उसकी पूँछ भी काट ली। उसने सरदार की बेटी को वापस उसके घर भेज दिया।

नौकर को पानी ले कर बुढ़िया के पास भेज दिया और वह खुद राक्षस का सिर व पूँछ ले कर घर चल दिया। सुबह होने पर लोगों ने देखा कि सारे शहर में तो पानी फैला पड़ा है।

इतने में सरदार की बेटी ने भी अपने पिता को इस अजनबी के बारे में सब कुछ बता दिया।

सरदार बोला — "तुमको छोड़ कर वह अजनबी फिर कहाँ चला गया?"

सरदार की बेटी बोली — "वह तो बुढ़िया के घर ठहरा है।"

सरदार ने अपने नौकर से कहा कि वह उसको तुरन्त ही उसके घर ले कर आये।

अंडी करामी ने सरदार के नौकर से पूछा — "मैं तो कल रात ही यहाँ आया हूँ, सरदार को कैसे मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ?"

नौकर बोला — "यह न सोचिये। सरदार ने आपको बुलाया है सो मेहरबानी कर के आप हमारे साथ चलें।"

इधर अंडी करामी सरदार के घर जा रहा था और उधर सरदार के घर में शादी की तैयारियाँ हो रही थीं।

जैसे ही वह सरदार के घर पहुँचा, सरदार बोला — "अपनी बेटी की जान बचाने के लिये मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ और इसके लिये मैं तुमको "यारीमा"[10] का "खिताब"[11] देता हूँ।"

और फिर उसने अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में दे दिया। दोनों की शादी हो गयी और वे दोनों सरदार के दिये हुए एक घर में रहने लगे।

कुछ समय बाद एक खास तरह की चिड़िया का एक झुंड उस शहर में आया तो यह समाचार सरदार के महल में पहुँचा। सरदार ने अपने लोगों को हुक्म दिया — "जल्दी जाओ और उन चिड़ियों को उड़ा दो।"

[10] Yarima – a title in that society

[11] Translated for the word "Title"

अंडी करामी ने जब यह सुना तो वह भी दूसरे घुड़सवारों के साथ वे चिड़ियें उड़ाने चल दिया।

उन सबके आते ही चिड़ियों का वह झुंड पहाड़ी की तरफ उड़ चला। अंडी करामी भी उनके पीछे पीछे चल दिया। पहाड़ी के पास पहुँचते ही वहाँ एक रास्ता खुल गया और वे चिड़ियाँ उस रास्ते में से हो कर पहाड़ी के अन्दर उड़ चलीं।

अंडी करामी घुड़सवारों में सबसे आगे था। वह भी उसी रास्ते से उनके पीछे पीछे चलता गया। उसके अन्दर जाते ही पहाड़ी में बना वह रास्ता अपने आप ही बन्द हो गया।

दूसरे घुड़सवार उससे बहुत पीछे थे। वे जब तक पहाड़ी के पास तक पहुँचे पहाड़ी वाला रास्ता बन्द हो चुका था। वे नाउम्मीद हो कर घर वापस लौट आये। घर पर भी उन्होंने अंडी करामी को कहीं नहीं देखा तो वे बोले "यारीमा मर गया, यारीमा मर गया"।

इसी समय अंडी करामी के घर के सामने लगे चेदिया पेड़ की शाख से एक पत्ती गिरी। अंडू बाबा उधर से ही जा रहा था। उसने चेदिया के पेड़ की पत्ती गिरती देखी तो बोला — "लगता है अंडी करामी अब नहीं रहा, जल्दी से मेरा घोड़ा तैयार करो।" और तुरन्त ही वह भी यात्रा पर चल दिया।

चलते चलते वह भी उसी आलूबुखारे के पेड़ के पास आया जिस पेड़ पर अंडी करामी ने अंडू बाबा के लिये एक आलूबुखारा छोड़ा था। उसने देखा कि आलुबुखारा सूख गया था। उसने समझ

लिया कि अवश्य ही वह आलूबुखारा अंडी करामी ने उसके लिये छोड़ा होगा।

आगे चलने पर उसे एक शीनट का पेड़ मिला। वहाँ से भी उसने अंडी करामी का छोड़ा हुआ एक शीनट तोड़ा और बोला — "लगता है कि यह शीनट भी अंडी करामी ने मेरे लिये ही छोड़ा होगा।"

अब अंडू बाबा पहले गॉव में उसी घर में रुका जिसमें अंडी करामी रुका था। दोनों की सूरत बहुत मिलती जुलती थी सो घर के मालिक को लगा कि अंडी करामी वापस आ गया।

घर का मालिक बोला — "अजनबी, तुम वापस आ गये? हमने तुम्हारे लिये अभी भी वे दोनों मुर्गे रख छोड़े हैं।" कह कर वह दोनों मुर्गे ले आया जो अंडी करामी छोड़ गया था।

अगले शहर में भी यही हुआ। अंडी करामी की रखी आधी भेड़ भी अंडू बाबा को मिल गयी।

अन्त में अंडू बाबा उस शहर में पहुँचा जहाँ अंडी करामी ने राक्षस मारा था। उसको देखते ही लोग बोले — "यारीमा आ गया, यारीमा आ गया"।

सरदार ने सुना तो अपने नौकरों द्वारा उसे अपने घर बुलवाया। अंडू बाबा का "यारीमा" के रूप में उस महल में स्वागत किया गया।

अगले दिन वे चिड़ियॉ फिर आयीं। सरदार ने फिर घुड़सवारों को उन चिड़ियों के पीछे भेजा। इस बार अंडू बाबा भी उनके साथ चल दिया।

चिड़ियॉ जब पहाड़ी के पास पहुँचीं तो वहॉ उस दिन की तरह फिर से रास्ता खुल गया और वे उस रास्ते से अन्दर चली गयीं और रास्ता बन्द हो गया।

यह देख कर अंडू बाबा ने पहाड़ी पर अपनी तलवार से वार किया और पहाड़ी में रास्ता खुल गया। लो, उस पहाड़ी में से तो अंडी करामी बाहर निकल आया।

बाहर निकल कर अंडी करामी बोला — "मैं अंडी हूँ राक्षस को मारने वाला।"

उधर अंडू खुशी से चिल्लाया — "और मैं अंडू हूँ पहाड़ी को खोलने वाला।" दोनों भाई एक दूसरे से लिपट गये और खुशी खुशी सरदार के महल को वापस आये।

सरदार ने जब दोनों को देखा तो बोला — "यह तुम्हारा भाई होगा।"

अंडी बोला — "जी हॉ, यह मेरा बड़ा भाई है।"

सरदार बोला — "यदि ऐसा है तो मैं इसको "गलाडीमान गारी"[12] का खिताब देता हूँ। और यारीमा, तुम घर जा कर अपनी पत्नी से मिलो वह कबसे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।"

[12] Galadiman Gari

फिर वे दोनों भाई वहीं रहने लगे और अपने घर ही नहीं गये।

6 शेर का राज्य मन्त्री[13]

बच्चो यह तो तुम जानते ही हो कि शेर जंगल का राजा होता है। पर शायद तुमने यह नहीं सुना होगा कि शेर अपने राज्य का एक नया मन्त्री खोज रहा है। क्यों□

क्योंकि उसका पहला वाला मन्त्री अचानक गायब हो गया है। जानवरों को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि वह इस तरह अचानक क्यों गायब हो गया, खास कर के जबसे शेर का वजन बढ़ गया था और वह अक्सर अपने दॉत बजाता पाया जाता था। पर वे किसी से कुछ कह नहीं सकते थे।

जानवरों के राज्य में अब केवल तीन जानवरों की हिम्मत थी कि वे शेर के मन्त्री पद के लिये अपनी अर्जी दें। एक तो था मगर – लम्बा, हरा, खूँख्वार और भयानक जबड़े वाला।

दूसरा था भालू – ऊँचा, कत्थई और ताकतवर, खाल में घुस जाने वाले पंजों वाला। और तीसरा था छोटा सा भूरे रंग का बनी खरगोश जो हमेशा जंगल के नियमों का पालन करता था।

शेर ने तीनों को इन्टरव्यू के लिये बुलाया। शेर बोला — "जैसा कि ऐसी नौकरियों में होता है तुम लोगों को इस नौकरी को पाने के लिये एक इम्तिहान पास करना पड़ेगा। अब क्योंकि तुम

[13] Lion's Minister of State – an African folktale taken from http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=25

लोगों में से कोई वापस नहीं जा सकता इसलिये मैं तुम लोगों से केवक एक ही सवाल पूछूँगा।"

शेर ने पुकारा — "मगर, पहले तुम इधर आओ। आओ और मेरी सॉस को सूँघो।" कह कर शेर आगे की तरफ झुका और उसने अपनी सॉस मगर के मुँह पर छोड़ी।

वह फिर बोला — "क्या यह वैसी ही मीठी है जैसे फूल घास के मैदान में सुबह सुबह खिल रहे हों, या फिर वैसी बदबूदार है जैसे सड़ा हुआ मॉस दोपहर के समय?"

मगर का कहने का अपना तरीका था। वह चीज़ें जैसी होती थीं ठीक वैसी ही बोलता था। कोई उससे अपने लिये बहुत अच्छी बात नहीं कहलवा सकता था। सो वह बोला —

ओ जहॉपनाह□अगर आप खुश हैं
आपकी सॉस तो सैंकड़ों पेड़ गिरा सकती है
वह तो हाथी को भी झुका सकती है
पर मैं अपनी नाक मधुमक्खियों से बन्द करना ज़्यादा पसन्द करूँगा
बजाय आपकी बदबूदार सॉस सूँघने के।

शेर किसी तरह अपने आप को काबू में रखते हुए बहुत ही शान्ति से बोला — "गलत जवाब, मिस्टर मगर।"

फिर वह बहुत जोर से चिल्लाया — "तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मेरी सॉस को बदबूदार कहो? मैं तुमको अपने राज्य का मन्त्री नहीं रख सकता। तुम तो हम सबका अपमान कर दोगे।

तुम्हारे इस अपमान की वजह से सब हमारे दुश्मन हो जायेंगे और हमारे राज्य में लड़ाई करवा देंगे।" कह कर शेर मगर पर कूद पड़ा और उसे खा गया।

शेर फिर से शान्त हो कर बैठ गया और अबकी बार उसने भालू को बुलाया — "भालू, अब तुम आओ। अब तुम्हारी बारी है। अब तुम्हारा इम्तिहान है। मेरी सॉस को सूँघो।"

कह कर शेर अपना मुँह भालू के पास ले गया और उसके चेहरे पर ज़ोर से अपनी सॉस छोड़ी और उससे पूछा — "क्या मेरी सॉस जंगल के मीठे फूलों की खुशबू जैसी है या फिर यह मरी हुई और सड़ी हुई मछली की तरह बदबूदार है जो किसी जंगल के रुके हुए पानी वाले तालाब में तैरती रहती है?"

भालू वह सब देख चुका था जो मगर के साथ हुआ था। इस के अलावा वह यह जानता भी था कि शेर की सॉस कैसी है सो उसने झूठ बोलने का निश्चय किया –

ओ जहॉपनाह□कितना अच्छा है आपकी सॉस को सूँघना
यह तो बहुत ही मीठी है जैसे कि बहुत ही स्वादिष्ट मिठाई होती है
आपकी सॉस... ओह□अब मैं बिल्कुल झूठ नहीं बोल सकता
आपकी सॉस तो बहुत बदबूदार है।

शेर बोला — "भालू, बिल्कुल गलत जवाब।"

फिर वह चिल्ला कर बोला — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतना बड़ा झूठ बोलने की। जब हर आदमी तुम्हारा झूठ सुनेगा तो वह

समझेगा कि तुम डर रहे हो। लोग यह समझेंगे कि हम कमजोर हैं और हमारे राज्य पर हमला कर देंगे।"

यह कह कर वह भालू पर कूद पड़ा और उसको भी खा गया।

फिर उसने खरगोश को बुलाया और बोला — "अब तुम्हारी बारी है बनी खरगोश। यहॉ आओ और अपना इम्तिहान दो। मेरी सॉस को सूँघो।" इस बार शेर खरगोश की तरफ झुका और उसने अपनी सॉस उसके ऊपर कुछ आवाज करते हुए फेंकी।

"क्या यह उन फूलों की तरह से मीठी है जिनसे उनका पराग नीचे गिरता रहता है ताकि मधुमक्खी उससे शहद बना सकें, या फिर यह गिद्ध की चोंच पर लगे सड़े हुए मॉस की तरह बदबूदार है?"

खरगोश अब तक मगर और भालू दोनों का हाल देख चुका था। उसने हवा में अपनी नाक सिकोड़ी और उसको ऊपर हिलाया, नीचे हिलाया, दॉये हिलाया, बॉये हिलाया और बोला —

ओ जहॉपनाह, मुझे विश्वास है
कि मुझे सच बोलना है मगर इससे पहले कि मैं आपको जवाब दूँ
मैं आपको बता दूँ कि मुझे बहुत ज़ोर का जुकाम है

अपनी नाक सिकोड़ता हुआ वह बोला — "हॉ मैं ठीक कह रहा हूँ जहॉपनाह, मुझे जुकाम है। मुझे बहुत ही अफसोस है कि मुझे जुकाम है। शायद जहॉपनाह खुद मुझे यह बतायें कि उनकी क्या राय है तब मैं खुशी से जवाब दे सकूँगा।"

शेर बोला — "बहुत अच्छा जवाब है। मगर की तरह तुम किसी का अपमान नहीं करोगे और भालू की तरह तुम किसी से वह नहीं कहोगे जो वे सुनना चाहते हैं।

तुम दूसरों की बातों को सुनने के लिये तैयार हो और तुरत सोचते हो। तुम ही मेरे राज्य के नये मन्त्री हो। मैं आज से तुमको अपने राज्य का नया मन्त्री घोषित करता हूँ। बधाई हो।"

और उस दिन से बनी खरगोश शेर का राज्य मन्त्री बन गया। बधाई हो चतुर खरगोश।

आज कल तुम लोगों ने छोटे से बनी खरगोश को इधर से उधर कूदते देखा होगा। वह घूम घूम कर असल में शेर के राज्य मन्त्री का ही काम कर रहा होता है।

पर जब भी वह रुकता है तो रुक कर अपनी नाक सिकोड़ता है बस यह दिखाने के लिये कि उसको जुकाम है।

मध्य अफ्रीका की लोक कथाऐं

6 Countries of Central Africa
(1) Cameroon (2) Central African Republic (3) Congo (4) Equatorial Guinea (5) Gabon (6) Zaire

7 बन्दर और खरगोश[14]

यह लोक कथा मध्य अफ्रीका के कौंगो देश में बड़े लोग अपने बच्चों को यह सिखाने के लिये सुनाते हैं कि उनको भी बन्दर और खरगोश की तरह से आपस में अलग अलग स्वभाव का होते हुए भी एक दूसरे को सहते हुए प्यार से रहना चाहिये।

एक बन्दर और एक खरगोश बहुत अच्छे दोस्त थे। वे अक्सर साथ रहते थे और बहुत बात करते थे। वे एक दूसरे से बात करना बहुत पसन्द करते थे और उनकी दोस्ती भी बहुत अच्छी थी सिवाय दो बातों के।

बन्दर का साथ बहुत अच्छा था। वह बहुत अच्छी कहानी सुनाता था। पेड़ पर जहॉ वह बैठता था वहॉ से वह सारे जंगल को देख सकता था। उसको यह भी पता था कि किस जानवर के साथ क्या हो रहा था और वह उसे खरगोश को बताना चाहता था।

पर उसकी एक बुरी आदत थी वह यह कि बात करते समय वह खुजलाता रहता था। कभी वह अपना सिर खुजलाता, तो कभी वह अपना पेट खुजलाता, कभी वह अपनी बॉह खुजलाता और कभी अपना पिछवाड़ा।

---

[14] Monkey and Rabbit Together – a folktale from Congo, Central Africa. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=88

इस तरह वह बात करते समय कुछ न कुछ खुजलाता रहता, और खुजलाता ही रहता। उसकी बस यही एक बहुत ही बुरी आदत थी और खरगोश को इस बात से बहुत परेशानी होती थी।

उधर खरगोश सारे मैदान में घूमता रहता। तो उसको हर घर में, हर घास के हर छेद में क्या होता रहता, यह सब मालूम रहता। और वह भी अपने दोस्त बन्दर से यह सब कहने के लिये बेताब रहता।

बन्दर की तरह खरगोश भी बहुत अच्छी कहानी सुनाता था पर बन्दर की तरह खरगोश की भी एक बुरी आदत थी और वह थी कि वह जब भी बात करता तो वह हमेशा हिलता रहता और इधर उधर घूमता रहता।

वह एक जगह बिना हिले बैठ ही नहीं सकता था। वह अपने कान भी हिलाता रहता। वह अपना सिर भी हमेशा हिलाता रहता क्योंकि उसको कभी आगे देखना होता था तो कभी पीछे।

पहले वह एक तरफ देखता, फिर दूसरी तरफ देखता। वह बात करते समय अपनी नाक भी सिकोड़ता रहता जैसे कुछ सूँघने की कोशिश कर रहा हो।

उसका यह बार बार हिलना बन्दर को बहुत परेशान करता। वह जब खरगोश से बात करता तो उसको खरगोश के इस हिलने से बहुत परेशानी होती।

एक दिन आखिर बन्दर से रहा नहीं गया। एक दिन जब वे बात कर रहे थे तो बन्दर बोला — "बन्द करो यह सब।"

खरगोश बोला — "क्या यह सब?"

बन्दर बोला — "यही चारों तरफ देखना और हवा में चारों तरफ सूँघना। तुम हमेशा अपने कान फड़फड़ाते रहते हो और आगे पीछे देखते रहते हो। तुम अपनी इस बुरी आदत से मुझे बहुत परेशान करते हो।"

"तुमने क्या कहा? मैं तुमको परेशान करता हूँ? और तुम तो बिना खुजलाये बात ही नहीं कर सकते हो। ज़रा अपनी तरफ तो देखो। तुम्हारी भी तो खुजलाने की बुरी आदत है।

तुम तो हमेशा ही खुजलाते रहते हो। देखो तुम तो अभी भी खुजला रहे हो। तुम अपना सिर खुजलाते हो, तुम अपना पेट खुजलाते हो, तुम अपनी बाँहें खुजलाते हो, यहाँ तक कि तुम तो अपना पिछवाड़ा भी खुजलाते हो। तुम एक जगह बिना खुजलाये बैठ ही नहीं सकते।"

बन्दर बोला — "मैं जब चाहूँ तब बिना हिले बैठ सकता हूँ। समझे।"

खरगोश बोला — "वह तो मैं भी बैठ सकता हूँ। मुझे हमेशा सूँघने और हिलने की जरूरत नहीं होती। यह सब मैं जब भी चाहूँ छोड़ सकता हूँ।"

तब बन्दर ने उसको एक मुकाबले के लिये कहा। वह बोला — "मैं सारा दिन बिना खुजलाये रह सकता हूँ अगर तुम बिना सूँघे और बिना हिले रहो तो। हम अभी इसी समय से अपनी बुरी आदतें छोड़ देते हैं।"

और दोनों एक दूसरे की तरफ देखते हुए दुखी से बैठ गये। बन्दर बिना खुजलाये चुपचाप बैठा रहा और खरगोश भी बिना हिले और बिना सूँघे बैठा रहा। दोनों में से कोई भी नहीं हिला।

बन्दर कुछ परेशान सा हो उठा उसकी उँगलियाँ जहाँ रखी थीं वहीं हिलने लगीं क्योंकि वह अपना सिर खुजलाना चाहता था। उसके पेट पर भी खुजली आ रही थी, उसकी बाँहों पर भी खुजली आ रही थी पर फिर भी वह चुपचाप बैठा रहा।

खरगोश भी बिना हिले बैठा था। वह अपनी नाक हिलाना चाह रहा था, हवा में सूँघना चाह रहा था कि कोई खतरा है या नहीं। वह इधर उधर यह भी देखना चाह रहा था कि कोई जंगली जानवर शिकार तो नहीं कर रहा था।

पर उसके बाद खरगोश ने बिल्कुल भी नहीं सूँघा और वह हिला भी नहीं।

आखिर खरगोश बोला — "बन्दर भाई मुझे एक विचार आया है। जब तक हम यहाँ अपनी बुरी आदतों को छोड़ कर बैठे हुए हैं तब तक हम एक दूसरे से कहानी ही क्यों न कहें ताकि हमारा दिन जल्दी कट जाये।"

बन्दर बोला — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है। तो चलो तो पहली कहानी तुम सुनाओ।"

खरगोश बोला — "मैं एक बार तुमसे मिलने के लिये आने के लिये घास में से गुजर रहा था तो मैंने घास को सूँघा। मुझे पता चला कि घास में एक शेर था। मैं वहीं का वहीं रुक गया। पहले मैंने अपने बॉयी तरफ देखा फिर मैंने अपनी दॉयी तरफ देखा।

फिर मैंने हवा में सूँघा कि देखूँ कि शेर की खुशबू हवा में भी है या नहीं। फिर मैंने अपने कान हिलाये और सुनने की कोशिश की कि वहॉ शेर था कि नहीं।

पर वहॉ तो कोई शेर नहीं था सो फिर मैं नदी की तरफ चला जहॉ मुझे तुम मिल गये और फिर हम लोगों ने खूब बातें कीं।"

इसके बाद वह फिर से चुपचाप बैठ गया। पर इस बीच बन्दर ने देख लिया कि कहानी सुनाते समय खरगोश हिला भी, उसने सूँघा भी और इधर उधर देखा भी। सो बन्दर ने भी कुछ ऐसी ही कहानी सुनाने का विचार किया।

अब बन्दर ने अपनी कहानी शुरू की — "कल जब मैं नदी के किनारे की तरफ जा रहा था तो रास्ते में मुझे गॉव के कुछ लोग मिल गये। उन्होंने सोचा कि मैंने उनके खेतों से उनका खाना चुराया है सो उन्होंने मेरे ऊपर पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। एक पत्थर मेरे यहॉ लगा।"

जैसे ही उसने यह कहा तो खरगोश ने देखा कि उसने अपना सिर छुआ और वहॉ खुजलाया।

"दूसरा मुझे यहॉ लगा, फिर एक यहॉ लगा, एक यहॉ लगा।" यह सब कहते हुए उसने उन उन जगहों को छुआ जहॉ जहॉ उसको पत्थर लगे थे क्योंकि वहॉ वहॉ उसको खुजली आ रही थी और वहॉ वहॉ खुजलाया।

जब वह खुजला चुका तो वह बोला — "जब मुझे लगा कि अब सब खत्म हो गया तो फिर मैंने अपने सारे शरीर पर हाथ फेर कर देखा कि मुझे कहीं कोई चोट तो नहीं आयी थी। यह पक्का करने के बाद कि मैं बिल्कुल ठीक था मैं तुम्हारे पास चला आया।"

यह सुन कर खरगोश मुस्कुराया और साथ में बन्दर भी। फिर उसके बाद दोनों ज़ोर से हॅस पड़े। खरगोश जान गया था कि बन्दर क्या कर रहा था और बन्दर को भी पता चल गया था कि खरगोश क्या कर रहा था।

खरगोश बोला — "तुम यह मुकाबला हार गये। तुम अपनी सारी कहानी में खुजलाते रहे।"

बन्दर बोला — "और तुम भी यह मुकाबला हार गये क्योंकि तुम भी अपनी कहानी में सारा समय सूँघते रहे, हिलते रहे और कूदते रहे।"

खरगोश बोला — "मेरा ख्याल है कि हम दोनों में से कोई भी सारा दिन चुपचाप नहीं बैठ सकता। सूँघना, हिलना और कूदना यह खरगोश की आदत में है।"

बन्दर बोला — "और खुजलाना एक ऐसी चीज़ है जो बन्दर लोग करते ही हैं। सो अगर हम एक दूसरे के दोस्त बने रहना चाहते हैं तो हम लोगों को एक दूसरे की बुरी आदतों की आदत डालनी ही पड़ेगी।"

और फिर ऐसा ही हुआ। दोनों साथ साथ खुजलाते रहे, हिलते रहे, सूँघते रहे, कूदते रहे और एक दूसरे के दोस्त बने रहे।

उत्तरी अफ्रीका की लोक कथाऐं

6 countries of Northern Africa
(1) Western Sahara (2) Morocco (3) Algeria (4) Tunisia (5) Libya **(6) Egypt**
Egypt's folktales are given separately.

पूर्वीय अफ्रीका की लोक कथाऐं

10 Countries of East Africa
(1) Djibouti, (2) Eritrea, **(3) Ethiopia**, (4) Kenya, (5) Madagasker, (6) Reunion, (7) Somalia, (8) Sudan, **(9) Tanzamia,** (10) Uganda
Ethiopia's and Tanzania's tales are given separately.
Zambia's and Zimbabwe's tales are not given here, because practically they are not counted under East African countries – see them in Southern Africa's section given later.
Only three stories from Somalia are givn here.

8 तीन उम्मीदवार[15]

एक बार की बात है कि सोमालिया देश के एक गॉव में तीन लड़के एक ही लड़की से प्यार करते थे। तीनों बराबर के अमीर थे और बराबर की हैसियत के थे सो तीनों ने ही उस लड़की से शादी का प्रस्ताव रखा।

हालॉकि इस बात से उस लड़की के पिता को बहुत खुश होना चाहिये था परन्तु ऐसा नहीं हुआ। उस लड़की के पिता का मन खुशी से भरने की बजाय और दुखी हो गया क्योंकि वह जिस किसी लड़के से भी अपनी बेटी की शादी करता उससे दूसरे दो लड़कों का अपमान होता।

उधर उस लड़की को इस बात से कोई मतलब नहीं था कि उसकी शादी किससे होती है और न ही उसने कभी यही कहा कि वह उनमें से किससे प्यार करती थी या नहीं। इसलिये इस चिन्ता का बोझ भी उसके पिता पर ही था।

उन तीनों लड़कों के पिता रोज आ कर उस लड़की के पिता से कहते कि अब उसको उनके बेटों के बारे में कुछ न कुछ निश्चय

---

[15] Three Suitors – a folktale from Somalia, Eastern Africa
There are a few similar tales in Vikram Vaitaal Stories also, read them at :
(1) Three Princes - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/5-three-princes.htm (2) Three Suitors - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/2-three-suitors.htm (3) Varamaalaa - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/7-varmaalaa.htm

कर लेना चाहिये कि वह उनमें से किसके बेटे से अपनी बेटी की शादी करना चाहता है परन्तु वह उनको रोज ही टाल देता।

उसने अपने देश के बड़े बड़े समझदार लोगों से सलाह ली, कुरान में देखा, परन्तु उसको अपनी समस्या का कहीं कोई हल नहीं मिला। आखिर में उसे एक तरकीब सूझी कि क्यों न वह उन तीनों का इम्तिहान ले कि उनमें से कौन सा लड़का उसकी बेटी के लायक है।

देश के तीन सबसे बड़े और अक्लमन्द लोग इस इम्तिहान के जज बनाये गये। इम्तिहान यह था कि कोई भी लड़का, जो भी उसकी बेटी से शादी करना चाहे, अपनी अपनी होशियारी दिखायेगा और उनमें से जो भी लड़का सबसे ज़्यादा होशियार होगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा।

पहला लड़का तीनों में सबमें बलवान था सो उसने दो आदमियों को अपने कन्धों पर बिठाया और उन्हें नदी पार ले गया और वापस आ गया। गॉव वाले उसका बल देख कर बहुत प्रभावित हुए।

दूसरा लड़का भाला और राइफल चलाना बहुत अच्छी जानता था। उसने चैट[16] की डंडियॉ जो उसके एक दोस्त के मुॅह में लगी हुई थीं अपने निशाने से उड़ा दीं। एक उड़ती हुई चिड़िया को

[16] Chat – a kind of tree whose leaves are good to suppress hunger. Chewing these leaves are very common in Ethiopia and Somalia countries.

आसमान में ही मार दिया और एक चॉदी के उड़ते हुए सिक्के को भेद दिया।

तीसरा लड़का सबसे सुन्दर था। यह लड़का हार्प[17] बजाता था और गाता था। और ऐसा गाता था कि उसका गाना सुन कर चिड़ियॉ उड़ना भूल जाती थीं और जंगली जानवर अपना चिल्लाना बन्द कर के उसका गाना सुनने लग जाते थे।

इस लड़के ने अपना हार्प बजाया और गाया। गॉव की सारी लड़कियॉ आहें भरने लगीं और अपने अपने परदों में से निकल कर बाहर आ गयीं। यह देख कर गॉव के सारे लड़कों को गुस्सा आ गया।

तीसरे लड़के के हार्प बजाने के बाद तीनों अक्लमन्द लोग तय करने के लिये एक काफी की दूकान पर गये कि उनमें से किसको उस लड़की के लिये चुना जाये।

और उनका फैसला क्या था? क्या उनके फैसले ने लड़की के पिता को उसकी समस्या को हल करने में सहायता की?

इन तीनों अक्लमन्दों ने यह फैसला सुनाया — "पहले लड़के ने असाधारण ताकत का प्रदर्शन किया है, दूसरे लड़के ने असाधारण निशानेबाजी दिखायी है और तीसरा लड़का सबसे अच्छा गवैया

[17] Harp is a western string musical instrument. See its picture above.

है।" यद्यपि यह फैसला था तो अक्लमन्दी से भरा हुआ पर इससे लड़की के पिता का तो कोई भला नहीं होता था।

दिन और महीने बीतते गये और वे तीनों लड़के अब इतने अधिक चिन्तित हो गये कि उन्होंने अपने अपने तम्बू उस लड़की के घर के पास बहने वाली नदी के किनारे गाड़ लिये।

रोज उन लड़कों के पिता लड़की के पिता पर फैसला करने के लिये दबाव डालते ताकि उनके बच्चे घर लौट सकें परन्तु लड़की का पिता कोई फैसला ही नहीं कर पा रहा था।

एक दिन वह लड़की नदी पर कपड़े धोने गयी तो तीनों लड़के उसे देख रहे थे। लड़की अचानक कपड़े धोते समय किनारे से फिसल कर नदी में गिर गयी और बहने लगी।

उसी समय एक मगर उसकी तरफ बढ़ा तो हार्प बजाने वाले लड़के ने तुरन्त अपना हार्प उठाया और उसे बजाना शुरू कर दिया। हार्प के संगीत ने मगर पर जादू डाल दिया। उसने लड़की को छोड़ दिया और वह खुशी से नदी में इधर उधर लोटने लगा।

इसी बीच शिकारी ने अपनी राइफल उठा ली और मगर को मार डाला। तीसरा बलवान लड़का नदी में कूद कर लड़की को और ज़्यादा बहने से पहले ही बचा कर किनारे पर ले आया।

तीनों लड़के उस लड़की को ले कर उसके घर गये। लड़की बेहोश थी सो डाक्टर को बुलाया गया और उसे होश में लाया गया।

अब उन तीनों उम्मीदवारों ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया। हार्प बजाने वाला लड़का बोला — "मेरी शादी उस लड़की के साथ होनी चाहिये क्योंकि पहले मेरे ही गाने से उस जानवर ने उस लड़की को छोड़ा। अगर ऐसा न होता तो तुम दोनों की कोशिशें बेकार जातीं।"

शिकारी लड़का बोला — "गलत, तुम्हारे संगीत ने मगर को केवल एक मिनट के लिये ही तो रोक दिया था, उसी समय में मैंने उसको मार दिया था।

अगर मैं उसी समय मगर को न मारता तो कुछ पल बाद ही वह उसको खा गया होता इसलिये उसकी शादी मेरे साथ होनी चाहिये।"

बलवान लड़का बोला — "गलत, गलत, तुम दोनों ही गलत हो क्योंकि अगर वह मगर से बच भी गयी थी तो भी वह नदी के बहाव में बह जाती अगर मैं उसको बाहर निकाल कर न लाता इसलिये वह मेरी है।"

जैसा कि हमने कहा था कि सोमाली लोग अपनी कहानियों में पहेलियॉ अधिक पसन्द करते हैं। तो अब यह बताओ बच्चों कि यह लड़की किसको मिलनी चाहिये?

हार्प बजाने वाले लड़के को जिसने लड़की को मगर से छुड़वाया, या शिकारी लड़के को जिसने मगर को मारा और या फिर उस बलवान लड़के को जो उस लड़की को नदी में से बाहर निकाल कर लाया।

अगर तुम सोच सको तो हमको जरूर लिखना।

9 हयीना जिसने एक लड़की से शादी की[18]

एक समय की बात है कि पूर्वीय अफ्रीका के सोमालिया देश में दक्षिण की ओर एक बूढ़ा रहता था। जिस जगह पर वह रहता था वहॉ वह परिवार के साथ अकेला ही रहता था, आस पास में और कोई भी नहीं था क्योंकि वहॉ से दूर दूर तक की जमीन बंजर थी।

उसकी एक पत्नी व दो बेटियॉ थीं जो वहीं उसके साथ ही रहतीं थीं। धीरे धीरे उसकी बेटियॉ बड़ी हुईं। उसकी बड़ी बेटी शादी के लायक हो गयी थी सो उस आदमी को अपनी बेटी के लिये कोई दुलहा ढूँढना था।

यह उसके सामने एक उलझन खड़ी हो गयी क्योंकि वहॉ कोई ऐसा नहीं था जिससे वह अपनी बेटी की शादी कर सके।

उस बूढ़े की पत्नी अपने पति से रोज प्रार्थना करती कि वह भी परिवार सहित किसी ऐसी जगह पर चल कर रहे जहॉ और भी लोग रहते हों पर वह बूढ़ा सुनता ही नहीं था।

एक दिन उसने अपनी पत्नी को साफ साफ बोल दिया — "हमारे पुरखे यहीं रहते चले आ रहे हैं इसलिये मैं यह जगह नहीं छोड़ सकता।"

पत्नी यह सुन कर चुप हो गयी क्योंकि अब उसके पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं था कि वह वहीं रहे।

[18] Hyena Who Married a Girl – a folktale of Somalia, Eastern Africa

उधर दिन पर दिन लड़की बड़ी होती जा रही थी और साथ ही साथ और ज़्यादा सुन्दर भी होती जा रही थी। वह रोज दिन में दस बार अपने पिता से पूछती — "पिता जी, आप मेरी शादी कब करेंगे?"

बूढ़ा पिता अपनी बेटी के इस लगातार सवाल से बड़ा परेशान रहता था पर कर कुछ नहीं सकता था। समय बीतता गया, लड़की बड़ी होती गयी और उसका अपने पिता से यह सवाल पूछना भी जारी रहा।

इसी बीच एक दिन एक अजीब सी घटना घटी। वहॉ कुछ आधे आदमी और आधे हयीना की शक्ल वाले लोग आये और उस जमीन के मालिक के बारे में पूछा।

बूढ़ा आदमी घर से बाहर आया तो क्या देखता है कि कुछ आधे आदमी और आधे हयीना की शक्ल वाले लोग बहुत ही सुन्दर पोशाक पहने खड़े हैं और सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि वे दूसरे देश के होते हुए भी सोमाली भाषा सोमालियों की तरह ही बोल रहे थे।

उस बूढ़े आदमी ने कहा कि वह जमीन उसी की थी। आश्चर्य के साथ वह उन सबको अन्दर ले आया और उनको वही आदर दिया जो मेहमानों को दिया जाता है। उन सबको आराम से बिठाया और फिर उनसे उनके आने की वजह पूछी।

उनमें से जो सबसे बड़ा हयीना था, वह बोला — "हमें पता चला है कि आपके घर में शादी के लायक एक सुन्दर लड़की है। अगर आप राजी हों तो मैं उसके साथ शादी करना चाहता हूँ।"

इस अनोखी बात को सुन कर तो वह बूढ़ा बहुत ही ज़्यादा परेशान हुआ कि वह अपनी इतनी सुन्दर बेटी की शादी उस आधे आदमी और आधे हयीना के साथ कैसे कर दे।

दूसरी तरफ उसे अपनी बेटी के दिन में दस बार पूछा जाने वाला सवाल भी याद आया — "पिता जी, आप मेरी शादी कब करेंगे?"

हयीना ने देखा कि वह बूढ़ा आदमी कुछ पशोपेश में पड़ा है सो उसने कहा — "आप सोच लीजिये हम फिर आ जायेंगे। हमें कोई जल्दी नहीं है।"

उस बूढ़े ने उन सबको पक्के जवाब के लिये अगले दिन आने को कहा और वे सब अगले दिन आने का वायदा कर के राजी खुशी घर चले गये।

उन सबको विदा कर के उस बूढ़े ने ये सब बातें अपनी पत्नी और बेटी को बतायीं और यह भी बताया कि उसने उनको अभी तक पक्की हाँ या ना नहीं की है। आखिरी जवाब के लिये वे लोग कल आयेंगे।

तो लड़की तो यह सुनते ही बहुत ज़ोर से रो पड़ी और माँ तो बहुत ही उदास हो गयी।

पिता ने अपनी बेटी को किसी प्रकार समझा बुझा कर चुप किया और समझाया कि वे लोग सब अपनी ही भाषा में बात कर रहे थे और वे आदमी के रूप में ही थे इसलिये उसको कल उससे शादी कर लेनी चाहिये।

लड़की बहुत दुखी थी और वह उस आधे आदमी और आधे हयीना से शादी करने के लिये कतई तैयार नहीं थी। पर अन्त में उसके पिता ने उसको समझा बुझा कर शादी करने पर राजी कर ही लिया।

उसने अपनी बेटी को यह भी तसल्ली दी कि अगर वह आदमी बेकार निकला तो वह उसका उससे तलाक का इन्तजाम भी कर देगा।

उसने उसको यह भी समझाया कि मुसलमान होने की वजह से उन लोगों को और भी आजादी है। वे चार शादियॉ तक कर सकते हैं और यह तो उसकी पहली शादी है अभी तो वह तीन शादियॉ और भी कर सकती थी। सो आखिर वह लड़की मान गयी।

अगले दिन जब वे आधे आदमी और आधे हयीना फिर से उसके घर आये तो बूढ़े ने उनको बताया कि वह अपनी बेटी की शादी उससे करने के लिये राजी है। शादी की सारी रस्में उसी के घर में उसी दिन पूरी की जायेंगी।

यह सुन कर वह हयीना तो बहुत ही खुश हुआ। वह यह सोच कर फूला नहीं समा रहा था कि उसकी शादी एक आदमी की लड़की से हो रही थी।

दहेज आदि तय किया गया और फिर कुछ दिनों तक दोनों तरफ शादी की तैयारियॉ ही चलतीं रहीं। इस बीच उस हयीना को आदमियों वाला खाना खाना पड़ा और वह अपने प्रिय खाने नहीं खा सका।

शादी की रस्में पूरी होने के बाद हयीना के दोस्त अपने अपने घरों को वापस चले गये। हयीना को शादी के बाद अपनी पत्नी के घर में ही रहना था। उन दोनों के लिये उनका घर बहुत ही सुन्दर सजाया गया था। बेटी को भी खूब सजाया गया था।

पत्नी ने जब पति को सजे हुए पलंग पर बैठने को कहा तो पति बोला — "यह पलंग मेरा नहीं है।"

पत्नी यह सुन कर हैरान रह गयी। फिर वह कुछ सोच कर कमरे में रखी एक कुरसी उठा लायी और उसको पलंग के पास रखते हुए बोली — "तो आप यहॉ बैठें।" पर उसका पति वहॉ भी नहीं बैठा।

पत्नी फिर एक चटाई ले आयी और उसको जमीन पर बिछाते हुए बोली — "तो आप यहॉ बैठें।"

लेकिन पति ने फिर वही दोहराया — "यह चटाई मेरी नहीं है।"

यह सुन कर पत्नी को बड़ा गुस्सा आया। वह गुस्से में भर कर पति को मकान के बाहर वाले दरवाजे के पास ले गयी और उसको मकान के बाहर बैठने को कहा।

यह सुन कर पति बहुत खुश हुआ और वह वहीं जा कर बैठ गया। उसने अपनी पत्नी से कहा — "हॉ अब तुम मुझको समझी हो।"

पत्नी बहुत ही अक्लमन्द थी। हालॉकि वह पति की इस बात पर ज़रा भी परेशान नहीं हुई पर फिर भी उसको वह सब अच्छा नहीं लगा।

वह उसको वहॉ बाहर बिठाने के बाद पति के लिये शादी में बने खास स्वाददार खाने ले कर आयी और उसको खाना खाने के लिये कहा तो पति ने फिर पहले की तरह ही कहा — "यह मेरा खाना नहीं है।"

इस बात पर पत्नी को फिर बड़ा गुस्सा आया। वह सोचती थी कि शादी के बाद का जीवन बहुत अच्छा होगा परन्तु यहॉ तो सब कुछ उलटा ही हो रहा था।

फिर उसने सोचा कि हयीना की पसन्द का खाना कौन सा हो सकता है। यह सोचते हुए वह अन्दर गयी, उसने कच्चे मॉस का एक बड़ा टुकड़ा लिया, उसको मिट्टी में लपेटा और राख से भरे बर्तन में रख कर उसके सामने रख दिया।

पति वह खाना देख कर बहुत ही खुश हुआ और उसने वह खाना बड़े प्रेम से खाया।

पत्नी को अब पूरा विश्वास हो गया कि उसके पति के अन्दर भाषा के अलावा और कोई भी गुण आदमी का नहीं है। वह ऐसे पति के साथ और अधिक नहीं रह सकती थी और अब उससे पीछा छुड़ाना चाहती थी।

वह तुरन्त ही अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी, आपने मेरी शादी एक जंगली हयीना से कर दी है। वह तो बिल्कुल ही जंगली हयीना है।"

ऐसा कह कर उसने अब तक की घटी सब घटनाऐं अपने पिता को बता दीं। यह सब सुन कर घर के सब लोग इस मामले पर विचार करने के लिये इकट्ठा हुए कि लड़की का तलाक कैसे कराया जाये।

उस मीटिंग में वह हयीना भी शामिल था जिससे उस लड़की की शादी हुई थी। बूढ़ा उस मीटिंग का सरदार था।

बूढ़े ने हयीना से पूछा — "मैंने अपनी बेटी की शादी तुमसे की है इसलिये मुझे यह जानने का पूरा पूरा हक है कि तुम लोगों के बीच क्या झगड़ा है।"

हयीना बोला — "मैं आदमियों के तौर तरीके अपना कर अपने तौर तरीके नहीं बदल सकता क्योंकि वे हमारे पुरखों ने हमारे लिये

बनाये हैं। और न ही मैं अपना जीवन आदमियों की तरह से जी सकता हूँ।"

बूढ़ा बोला — "तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। और अगर ऐसा है तो अब तुमको दोनों में से एक को चुनना होगा। या तो अपने रीति रिवाजों को और या मेरी बेटी को। बोलो तुम किसको चुनना चाहते हो।"

यह सुन कर हयीना गुस्से में भर गया और वहाँ से उठ खड़ा हुआ और बोला — "आदरणीय ससुर जी, यह मेरे लिये बड़े अपमान की बात होगी अगर मैं अपने पुरखों के बनाये रीति रिवाज छोड़ दूँ इसलिये मैं अपनी पत्नी को छोड़ता हूँ।"

और ऐसा कह कर वह वहाँ से उठ कर जंगल की तरफ भाग गया कि कहीं वे लोग उसे पकड़ कर वापस घर न ले आयें।

यह कहानी हमें जीवन के दो सच बताती है। एक तो यह कि कोई भी जीव अपने वातावरण में ही ठीक रहता है।

दूसरा यह कि कोई भी हो, चाहे वह आदमी हो या जानवर, अपने आपको बहुत ज़्यादा नहीं बदल सकता इसलिये किसी को भी दूसरी तरह के आदमी के साथ सोच समझ कर रहना चाहिये।

10 गधे के कान वाला राजा[19]

यह लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के सोमालिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा के बहुत बड़े कान थे जैसे कि गधे के कान होते हैं। राजा को अपने कान देख कर बड़ी शर्म महसूस होती थी सो जब भी वह बाहर लोगों में होता तो वह अपने कान हमेशा ही ढक कर रखता ताकि गॉव के लोग उसके कानों के बारे में न जान पायें।

केवल एक ही आदमी ऐसा था जिसने राजा के कान देखे थे और वह था उसका नाई। राजा अपने नाई को अक्सर यह चेतावनी देता कि "तुम मुझसे यह वायदा करो कि तुम कभी किसी से यह नहीं कहोगे कि मेरे कान गधे के कान जैसे हैं नहीं तो में अपने दरबान तुम्हारे घर भेज दूँगा जो तुमको ज़िन्दगी भर के लिये जेल में बन्द कर देंगे।"

हालॉकि राजा की चेतावनियों के बाद भी नाई को इस भेद को छिपाना बहुत मुश्किल हो गया था क्योंकि वह राजा के कानों के बारे में सब गॉव वालों को बताना चाहता था पर फिर भी बार बार राजा की चेतावनी उसके दिमाग में घूम जाती इसलिये कई साल तक

[19] A King With Donkey Ears – a tale from Somalia, Africa. Written by Ismael Dahir. Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/383/preview

वह इस भेद को छिपाये रहा। पर एक दिन तो उसकी यह इच्छा हद पार कर गयी।

एक सुबह जब वह नाई सो कर उठा तो उसको लगा कि अब वह यह भेद भेद नहीं रख सकता उसको इसे किसी न किसी से तो कहना तो था ही। सो वह कपड़े पहन कर तैयार हुआ और गॉव के बाहर खेतों की तरफ चल दिया जहॉ वह सोचता था कि वह अकेला ही होगा।

वहॉ उसने घास लगा एक जमीन का टुकड़ा देखा और वहॉ उसे हाथ से खोदना शुरू किया। धीरे धीरे उसने वह गड्ढा काफी गहरा कर लिया।

जब वह अपने काम से सन्तुष्ट हो गया तो वह उस गड्ढे के ऊपर झुका और अपनी सबसे तेज़ आवाज में चिल्लाया "राजा के कान गधे के कान जैसे हैं। राजा के कान गधे के कान जैसे हैं।"

एक बार जब नाई ने राजा का भेद चिल्ला कर बोल दिया तो उसके दिल का बोझ काफी हल्का हो गया। इसके बाद उसने वह गड्ढा उस खोदी हुई मिट्टी और घास से ढक दिया और अपने घर वापस आ गया।

उसको यह विश्वास था कि उसने राजा के विश्वास को नहीं तोड़ा था क्योंकि उसने राजा का भेद किसी से नहीं कहा था।

इसके बाद कई साल गुजर गये। कई साल बाद वहॉ उस गड्ढे के पास एक स्कूल बना और उस गड्ढे के चारों तरफ उस स्कूल का खेल का मैदान बना जहॉ उस स्कूल के बच्चे खेलते।

एक दिन जब बच्चे उस खेल के मैदान में खेल रहे थे तो एक छोटे बच्चे ने वहॉ घास और मिट्टी के नीचे एक गड्ढा छिपा देखा। बच्चे ने तुरन्त है वहॉ घास और मिट्टी हटायी तो उस गड्ढे में से एक बहुत ज़ोर की आवाज निकली "राजा के कान गधे के कान जैसे हैं। राजा के कान गधे के कान जैसे हैं।"

उसे सारे बच्चों ने सुना। बच्चे नाई की यह आवाज सुन कर बहुत ही आश्चर्यचकित हो गये और राजा के कानों का यह भेद सुन कर आपस में हॅसने लगे।

उस दिन जब वे स्कूल से घर वापस लौटे तो उन्होंने यह भेद अपने माता पिता से कहा। माता पिता ने यह भेद अपने परिवार के दूसरे सम्बन्धियों से कहा। और फिर उन परिवारों ने दूसरे परिवारों से कहा।

"राजा के कान गधे के कान जैसे हैं। राजा के कान गधे के कान जैसे हैं।" कह कह कर वे आपस में बात करते रहे और हॅसते रहे। बहुत जल्दी ही गॉव भर में यह बात सब लोग जान गये कि राजा के कान गधे के कान जैसे हैं और वे यह सोच सोच कर हॅसते रहे कि राजा सब लोगों के बीच में अपने कान ढक कर क्यों रखता था।

खैर फिर इस बात को राजा को भी जानने में बहुत देर नहीं लगी कि गॉव में सब लोग जान गये थे कि राजा के कान गधे के कान जैसे हैं। इस बात को जान कर राजा को बहुत शर्मिन्दगी हुई और गुस्सा भी बहुत आया।

राजा को याद आया कि उसके कानों के बारे में केवल एक ही आदमी जानता था और वह था उसका नाई। बस उसने तुरन्त ही अपने दरबान नाई को पकड़ कर जेल में बन्द कर देने लिये उसके घर भेजे।

दरबान भी तुरन्त ही नाई के घर गये उसको पकड़ कर लाये और ला कर उसको जेल में बन्द कर दिया। अब वहॉ उसको अपनी पूरी ज़िन्दगी जेल में काटनी पड़ेगी।

नाई ने राजा से बहुत प्रार्थना की कि वह उसको छोड़ दे पर राजा ने नाई से कहा — "तुमने मुझसे वायदा किया था कि तुम मेरा यह भेद किसी से नहीं कहोगे पर तुमसे यह भेद छिपाये नहीं छिपाया गया। मैंने तुम्हारे ऊपर विश्वास किया और तुमने मुझे धोखा दिया।

अब अपनी इस गलती के लिये तुम्हें अपनी सारी ज़िन्दगी जेल में काटनी पड़ेगी। तुम इसी तरीके से सीखोगे कि किसी का भेद छिपा कर ही रखना चाहिये न कि लोगों से कहना चाहिये।"

इस तरह से नाई अपनी सारी ज़िन्दगी जेल में रहा और हमेशा ही राजा का भेद खोलने पर अफसोस करता रहा।

दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं

11 Countries of Southern Africa
(1) Angola, (2) Botswana, (3) Lesotho, (4) Malawi, (5) Moratius, (6) Mozambique, (7) Namibia, **(8) South Africa,** (9) Swaziland, (10) Zambia, (11) Zimbabwe
South Africa's tales are given separately.

11 हमेशा के लिये गया पेड़[20]

शेर चिल्लाया — "जल्दी भाग शेर, जल्दी भाग। तुझे बहुत ज्ल्दी जल्दी दौड़ना चाहिये। वे जंगली कुत्ते तो तेरे पीछे ही हैं।"

वे जंगली कुत्ते सारा दिन उस शेर का पीछा करते रहे थे – चट्टानों के ऊपर हो कर, नदियों में से हो कर, झाड़ियों के बीच में से हो कर, रास्ते पर चल कर।

बेचारे शेर को आराम करने का कहीं कोई मौका ही नहीं मिला। उसको ऐसा लग रहा था कि जैसे ही वह एक तरफ मुड़ता था वहॉ पर कुछ और कुत्ते उसका इन्तजार कर रहे होते थे।

पर आखिर उसने उन कुत्तों से बचने के लिये कुछ समय निकाल ही लिया। किस्मत से उसने उसी समय एक आदमी को एक बड़े से पेड़ के नीचे बैठा देखा।

डरे हुए शेर ने आदमी से प्रार्थना की — "जनाब, क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकते हैं□ये जंगली कुत्ते सुबह से मेरा पीछा करते चले आ रहे हैं। मैं इनसे बचने के लिये भागते भागते इतना थक गया हूॅ कि अब एक कदम भी और आगे नहीं जा सकता।"

[20] The Gone Forever Tree - a folktale from Botswana, Southern Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://folktales.phillipmartin.info/home_gone_forever01.htm
Collected and retold by Phillip Martin

आदमी बोला — "तुम जल्दी से इस पेड़ के पीछे छिप जाओ। मैं कुत्तों को दूसरी तरफ भेज दूँगा। जल्दी करो मुझे उनके पैरों की आवाज सुनायी पड़ रही है। वे बस आते ही होंगे।"

जैसे ही शेर पेड़ के पीछे छिपा सामने की झाड़ियों में से कुत्तों का एक झुंड निकल कर आदमी की तरफ बढ़ा।

उसमें से एक कुत्ते ने आदमी से पूछा — "क्या तुमने किसी शेर को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

आदमी बोला — "हाँ देखा तो है। वह उधर पहाड़ी की तरफ भाग गया है। अगर तुम जल्दी से उधर भाग कर जाओगे तो मुझे यकीन है कि तुम उसको जरूर है पकड़ लोगे। वह बहुत थका हुआ लगता था।"

कुत्ते चिल्लाये — "बहुत बहुत धन्यवाद।" और तुरन्त ही पहाड़ी की तरफ भाग गये।

आदमी अपने मन में हँसते हुए बोला — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई।"

जब शेर ने देखा कि कुत्तों का झुंड उसके रास्ते से हट गया है तो वह बहुत खुश हुआ और उसके अन्दर एक नयी हिम्मत आ गयी। वह पेड़ के पीछे से निकल आया और अपने पंजों में उस आदमी को जकड़ लिया।

आदमी चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो?"

शेर बोला — "यह तो साफ दिखायी दे रहा है कि मैं तुमको खाऊँगा।"

आदमी बोला — "पर अभी अभी तो मैंने तुम्हारी जान बचायी है।"

शेर बोला — "इसके लिये मैं तुम्हारी बहुत तारीफ करता हूँ। पर मैं भूखा भी बहुत हूँ और मैं अब इतना थक गया हूँ कि मैं अपना खाना ढूँढने कहीं और नहीं जा सकता। और फिर मैं कहीं और जाऊँ भी क्यों? तुम जो मेरे सामने हो।"

आदमी गिड़गिड़ाया — "मगर तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते।"

शेर चिंघाड़ा — "क्यों नहीं कर सकता। हाँ मैं ऐसा कर सकता हूँ और मैं ऐसा ही करूँगा।"

उसी समय एक बड़ा खरगोश[21] सामने से आता दिखायी दिया। उसने उन दोनों को आपस में बहस करते देखा तो पूछा — "क्या बात है, तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो?"

आदमी ने जितनी जल्दी हो सकता था सब कुछ उस बड़े खरगोश को बता दिया।

[21] Translated for Hare - Hare is different from Rabbit in size and look. Hare is not a domestic animal and live on the ground as opposed to Rabbit who is a domestic animal and lives in burrows. See its picture above.

बड़ा खरगोश मुस्कुराया और बोला — "अगर तुम लोगों को मेरे ऊपर भरोसा हो तो मैं जानता हूँ कि इस समस्या को कैसे सुलझाना है।

ओ आदमी, इस समस्या को सुलझाने के लिये मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़"[22] की एक डंडी चाहिये। क्या तुम मुझे उस पेड़ की एक डंडी ला कर दे सकते हो?"

आदमी यह सुन कर वह डंडी लाने के लिये एक झाड़ी की तरफ चला गया पर उसने इस पेड़ का नाम तो पहले कभी सुना नहीं था सो वह मोफेन के पेड़ की एक डंडी ले कर आ गया।

उस डंडी को देख कर बड़ा खरगोश चिल्लाया — "नहीं नहीं यह नहीं। ओ आदमी, यह वह नहीं है जो मैं चाहता हूँ। मेरा मतलब उसी से था जो मैंने तुमसे कहा था – "हमेशा के लिये गया पेड़" की डंडी।"

वह आदमी बड़े खरगोश के लिये वह डंडी लाने के लिये एक बार फिर झाड़ियों की तरफ चला गया पर अभी भी उसने उस पेड़ के बारे न कुछ सुना था और न कभी उसे देखा था। सो अबकी बार वह एक मोकगालो पेड़ की एक डंडी ले आया।

इस बार खरगोश उस आदमी के ऊपर बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "तुम मेरी बात ही नहीं सुन रहे हो ओ आदमी। मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़" की एक डंडी चाहिये।

[22] Gone Forever Tree

और अबकी बार अगर तुमको उस पेड़ की डंडी न मिले तो "कभी वापस न आओ पेड़"[23] की डंडी भी काम करेगी।"

एक बार फिर से वह आदमी डंडी लाने के लिये झाड़ियों की तरफ बढ़ा।

उस आदमी के जाते ही बड़ा खरगोश शेर से बोला — "यह बेवकूफ आदमी तो सादी सी बात भी नहीं समझता जैसे कि हम और तुम समझते हैं। अगर तुमको कोई ऐतराज न हो तो मैं उसके साथ जा कर उसको वह पेड़ दिखा आऊँ?"

शेर बोला — "नहीं नहीं मुझे कोई ऐतराज नहीं है। मैं भी तुम्हारे साथ चला चलता पर मैं बहुत थका हुआ हूँ।"

"कोई बात नहीं तुम यहीं आराम करो मैं उसको वह पेड़ दिखा कर अभी आता हूँ।" सो वह बड़ा खरगोश भी आदमी के पीछे पीछे उसको वह पेड़ दिखाने के लिये चल दिया।

शेर वहीं उस पेड़ के नीचे खड़ा खड़ा दोनों का इन्तजार करता रहा पर वे तो दोनों तो जो एक बार गये सो लौटे ही नहीं। वे तो हमेशा के लिये चले गये थे।

इस तरह बड़े खरगोश ने शेर से उस आदमी की और अपनी जान बचायी।

[23] Never Come Back Tree

12 ताश खेलने वाला[24]

एक बार एक आदमी था जिसको लोग ताश खेलने वाला कहते थे और यही वह करता भी था। वह कहीं भी जाता था तो उसकी जेब में ताश रहते थे और वह हर एक को हरा देता था।

वह सड़क पर से किसी को भी पकड़ लेता था – बच्चा या कोई भी, और उससे कहता कि "आओ ताश खेलें।"

वह हमेशा पैसे के लिये ताश खेलता था। कोई बच्चा भी जो किसी दूकान पर जाता तो वह उसको बुला लेता। क्योंकि उसके पास पैसे होते थे सो वह उसके साथ खेलता और वह तुरन्त ही हार जाता।

उसका एक छोटा सा घर था और उसमें उसका एक छोटा सा रसोईघर था। वहॉ वह अपने हाथ से ही खाना बनाता था। उसके पास एक बर्तन था। उस बर्तन में छह–सात लोगों का खाना बन जाता था।

वह अपना चावल नापता था और उसको उस बर्तन में डाल कर सुबह सुबह आग पर रख देता था। फिर वह ताश खेलता था। जब दिन के 11 बजते थे और अगर वह जीत जाता था तो वह अपना सारा चावल खा लेता था।

[24] The Cardplayer – a folktale from Reunion, Southern Africa. Adapted from the book "Indian Ocean Folktales: Madagaskar, Comoros, Mauritius, Reunion, Seychelles". By Germain Elizabeth. Retold by Christian Bard

शाम को फिर वह चावल बनने के लिये रखता था और बन जाने पर खा लेता था। अगर वह अपना सुबह का चावल 11 बजे खत्म नहीं कर पाता था तो वह उसको शाम के लिये रख देता था। इस तरह से उसको ताश खेलने के लिये ज़्यादा समय मिल जाता था।

एक दिन एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — "जाओ और भगवान से मिलो और उससे कहो "भगवान तुम धरती पर आओ और इस ताश खेलने वाले को ले जाओ। यह हम सबको बहुत तंग करता है। यह सड़क पर हर जगह ताश खेलता है।

यह बच्चों और बड़ों को एक जैसा ही समझता है। अच्छा होगा अगर भगवान आयें और इसको ले जायें।"

दूसरा आदमी बोला — "ठीक है। मैं जा कर मिलता हूँ।

सो वह भगवान के पास गया और बोला — "भगवान मैं आपसे मिलने आया हूँ। हमारे यहाँ धरती पर एक आदमी है जो सबको ताश खेल कर बहुत तंग करता है। वह एक तरफ ऊपर जाता है और दूसरी तरफ नीचे जाता है। उससे सब परेशान रहते हैं। वह लोगों को काम नहीं करने देता।

कोई बच्चा बेचारा पैसे ले कर कुछ खरीदने के लिये दूकान जाता है तो वह उसको ताश खेलने के लिये बहका लेता है और फिर उसको हरा कर उसके सारे पैसे ले लेता है।"

भगवान ने पूछा — "क्या उसका नाम ताश खेलने वाला है?"

वह आदमी बोला — "जी हॉ।"

भगवान ने कहा — "वह आयेगा, वह आयेगा। मैं देखने जाता हूँ कि क्या यह सब सच है?"

सो भगवान ने एक दिन "होली घोस्ट"[25] और सेन्ट पीटर[26] से बात की और कहा "चलो इस ताश खेलने वाले को देख कर आते हैं। अगर जो कुछ यह आदमी कह रहा है सच हुआ तो हमको उसको धरती से हटाना ही पड़ेगा।"

सो वे तीनों धरती की तरफ चल दिये। जब वे उस ताश खेलने वाले के घर पहुँचे तो शाम के पॉच बज रहे थे। उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुम्हीं ताश खेलने वाले हो?"

वह बोला — "हॉ, क्यों?"

वे बोले — "हमने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है पर अब देर हो गयी है। क्या तुम हमको रात को खाना और ठहरने की जगह दे सकते हो?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर तुम देख रहे हो न कि मेरा घर कितना छोटा सा है। यह मेरा खाना बनाने का बर्तन है और मेरे पास बस एक डिब्बा ही चावल है। तुम लोग इधर सो सकते हो, जैसे भी चाहो और हम सब यह चावल मिल कर खायेंगे। ठीक है?"

---

[25] Holy Ghost – Christianity believes in Trinity – Father, Son and the Holy Ghost (Holy Spirit), each person itself being God.

[26] Saint Peter (Simon Peter) was one of the 12 Apostles of Jesus Christ and in popular culture is depicted holding the key of Kingdom of Heaven, sitting at the Pearly Gates to allow entry in te Kingdom of Heave.

तीनों एक साथ बोले — "ठीक है। हमें मंजूर है।"

सो उस ताश खेलने वाले ने अपना चावल नापने वाला बर्तन उठाया। उससे नाप कर चावल लिये, उनको धोया और फिर उस बर्तन को आग पर रख दिया। बाकी सब लोग बात करने लगे।

जब चावल पक गये तो उन तीनों ने पूछा — "और वह चावल? क्या वह पका हुआ चावल नहीं है?"

बर्तन में चावल पक कर उठ रहा था। सो वह ताश खेलने वाला उठ कर गया। उसने उसमें से दो प्याले चावल निकाले। अब वह बर्तन चावल से आधा भरा हुआ था।

उसने देखा और बोला — "यह चावल तो बन गया है पर अभी बहुत सारा चावल बाकी है। मैं इसको कैसे परसूँ?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सा चावल ले लिया और उसे खाने लगे। चारों का पेट भर गया।

वे तीनों उससे बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि वह नम्रता में, अच्छे व्यवहार में और यह देखने में कि दूसरे लोगों ने ठीक से खाया है या नहीं सबसे पहले नम्बर पर आता है।" और वे सब सोने के लिये लेट गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले से पूछा कि वे उसको कितने पैसे दे दें। वह बोला — "जो थोड़ा बहुत तुम लोगों ने यहाँ खाया पिया। इसके अलावा तुम लोग इतनी छोटी

सी जगह में सोये। और मेरे ख्याल से तो ठीक से सो भी नहीं पाये होगे। उस सबका उनको पैसा देने की कोई जरूरत नहीं थी।"

वे तीनों बोले — "नहीं नहीं, हम लोगों ने पेट भर कर खाया और पूरा पूरा ठीक से सोये।"

वह ताश खेलने वाला बोला कि वह भी ठीक से सोया।

भगवान ने कहा — "अगर तुम हमसे कोई पैसा नहीं ले रहे हो तो मुझसे अपने लिये कोई मेरी कोई कृपा ही मॉग लो।"

वह बोला — "कृपा? मैं तुमसे क्या कृपा मॉगू?"

भगवान बोले — "कुछ भी। जो भी तुम्हारी इच्छा हो। मैं तुमको सन्तोष दूँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम वह बैन्च देख रहे हो न? तो तुम्हारी कृपा के लिये मैं तुमसे यह मॉगता हूँ कि जो कोई भी उस पर बैठे वह वहीं चिपक जाये।"

भगवान बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

होली घोस्ट बोले — "तुम मुझसे भी कुछ मॉग लो।"

"अरे तुमसे भी? मै तुमसे क्या मॉगू? ठीक है तुम मुझको यह दो कि जब कोई मेरे दरवाजे में हो और वह दरवाजे का सहारा ले कर खड़ा हो तो वह वहॉ से फिर हिल भी न सके। वह वहीं अटक जाये।"

होली घोस्ट बोले — "ठीक है जैसा तुम चाहो। ऐसा ही होगा।"

अब सेन्ट पीटर की बारी थी। उसने कहा — "अब मेरा नम्बर है। बोलो, तुम मुझसे क्या मॉगते हो?"

ताश खेलने वाला बोला — "तो क्या तुम तीनों मेरे ऊपर कृपा करने वाले हो? ठीक है। यह तो बहुत ही अच्छा है। तुम वह सन्तरे का पेड़ देख रहे हो न? अगर कोई उस पेड़ पर मुझसे बिना पूछे चढ़े तो वह उस पर से तब तक नीचे न आ सके जब तक मैं न कहूँ।"

सेन्ट पीटर बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

इस तरह तीनों उस ताश खेलने वाले को तीन वरदान दे कर चले गये। कुछ समय बाद भगवान ने अपने मृत्यु दूत को बुलाया और उसको धरती पर से ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा।

मृत्यु दूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले के घर पहुँचा। वहॉ जा कर उसने ताश खेलने वाले से कहा कि उसको भगवान ने बुलाया है।

ताश खेलने वाले ने पूछा — "पर उसने मुझे क्यों बुलाया है?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम नहीं पर उन्होंने मुझे तुम्हें लाने के लिये भेजा है।"

ताश खेलने वाले ने कुछ सोचा और उससे अपने घर के सामने पड़ी बैन्च पर बैठने के लिये कहा कि वह वहॉ बैठे और वह अभी घर से तैयार हो कर आता है।

सो मृत्यु दूत बाहर उसकी बैन्च पर बैठ गया और ताश खेलने वाला घर के अन्दर तैयार होने चला गया। कुछ देर बाद वह तैयार हो कर आया और बोला — "चलो उठो मैं तैयार हूँ।"

मृत्यु दूत ने उस बैन्च से उठने की कोशिश की पर वह तो उससे उठ ही नहीं सका। वह तो उससे चिपक गया था। उसने बहुत कोशिश की पर वह तो वहॉ से किसी तरह हिल भी नहीं पा रहा था।

उसने उससे कहा — "अरे यह क्या। मैं तो यहॉ से उठ ही नहीं पा रहा। कोई मुझे यहॉ से उठाओ।"

ताश खेलने वाला बोला — "जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करोगे कि तुम मुझे भगवान के पास नहीं ले जाओगे मैं तुमको यहॉ से नहीं उठाऊँगा।"

मृत्यु दूत को उससे यह वायदा करना ही पड़ा तभी ताश खेलने वाले ने उसको वहॉ से उठाया। वहॉ से उठ कर वह सीधा भगवान के पास गया।

भगवान ने पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत ने भगवान से जा कर सारा हाल बताया तो भगवान ने पूछा कि कि तुम वहॉ उस बैन्च के ऊपर बैठे ही क्यों थे।

वह बोला — "उसने मुझसे बैठने के लिये कहा था इसलिये मैं वहॉ बैठ गया था। मुझे क्या पता था कि उस पर बैठ कर मैं वहॉ चिपक जाऊॅगा। और उसके बाद मैं वहॉ पर चिपक गया। मैं तो उठ ही नहीं सका।

जब मैंने उससे यह वायदा किया कि मैं उसको अपने साथ नहीं ले जाऊॅगा तब कहीं जा कर उसने मुझे उस बैन्च से आजाद किया।"

"ठीक है अब तुम फिर से जाओ और उस ताश खेलने वाले को यहॉ ले कर आओ। मैं और कुछ नहीं जानता। मैं तुमको हुक्म देता हूॅ और तुम मेरे हुक्म का पालन करो।"

सो वह फिर ताश खेलने वाले के पास गया तो ताश खेलने वाला उसको फिर से आया देख कर बोला — "अरे तुम यहॉ फिर से?"

"हॉ भगवान ने मुझसे कहा है कि अबकी बार मैं तुमको ले कर आऊॅ। और इस बार कोई सौदा नहीं।"

ताश खेलने वाले ने मुॅह बना कर कहा — "हुॅह, कोई सौदा नहीं।"

मृत्यु दूत बोला — "अबकी बार तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊॅगा।"

"क्या तुम मेरे साथ नहीं जा रहे हो? यह नहीं हो सकता। तुमको चलना ही पड़ेगा। उन्होंने मुझसे तुमको साथ लाने के लिये कहा है। कल तुमने मुझे उस छोटी सी बैन्च पर पकड़ लिया था। मैंने भगवान को सब बता दिया तो उन्होंने मुझे फिर से यहॉ भेज दिया।"

"ठीक है तुम यहॉ बैठो।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"हॉ हॉ। ठीक है। तुम बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो घर के बाहर मेरे दरवाजे पर खड़े हो कर मेरा इन्तजार करो मैं अभी आया।"

मृत्यु दूत उसके दरवाजे के सहारे खड़ा हो गया। जैसे ही वह वहॉ खड़ा हुआ तो वह तो वहॉ दरवाजे से चिपक गया।

ताश खेलने वाला बोला — "यह दरवाजा तुमको पकड़ कर रखेगा तब तक मैं ज़रा ताश खेल कर आया।"

मृत्यु दूत बोला — "ताश खेलने से क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने कहा न कि कोई सौदा नहीं बस तुमको चलना है।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा। तुम यहीं ठहरो।"

यह सुन कर मृत्यु दूत तो पागल सा हो गया। उसने अपने आपको वहॉ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की "कोई सौदा नहीं ओ

ताश खेलने वाले। मुझे जाने दो। मै जा कर भगवान को बता दूँगा तो वह मुझे फिर से तुमको लाने के लिये यहाँ भेज देंगे।"

ताश खेलने वाले ने दरवाजे से कहा — "देखो यह यहाँ खड़ा है इसको जाने मत देना।"

फिर वह मृत्यु दूत से बोला — "अगर तुम मुझे ले कर जाना चाहते हो तो मैं तुमको यहाँ से नहीं जाने दूँगा।"

मृत्यु दूत ने फिर कहा — "अच्छा तो मुझे तो जाने दो। मैं भगवान से जा कर कहूँगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। और मैं तुमको भी नहीं ले जाऊँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर मैं तुमको छोड़ दूँगा तो तुम मुझे ले जाओगे। मुझे मालूम है।"

मृत्यु दूत फिर बोला — "नहीं मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको नहीं ले जाऊँगा। लेकिन अब तो मुझे जाने दो।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर तुम मुझे नहीं ले जाओगे तो मैं तुमको छोड़ देता हूँ। जाओ यहाँ से चले जाओ। अब तुम दरवाजे से चले जाओ।"

मृत्यु दूत ने दरवाजा छोड़ दिया और वह वहाँ से चला गया। वह वहाँ से भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने पूछा — "अरे यह क्या तुम फिर बिना ताश खेलने वाले के आ गये?"

"मैं बताता हूँ कि मेरे साथ क्या हुआ।"

"मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम वहाँ गये होगे और जा कर उसकी बैन्च पर बैठ गये होगे।"

"नहीं इस बार उसके दरवाजे ने मुझे पकड़ लिया। मैं उसके दरवाजे में फँस गया।"

भगवान ने पूछा — "क्या मैंने तुमको उसके दरवाजे में फँसने के लिये भेजा था। मैंने तुमको ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा था। फिर जाओ और ताश खेलने वाले को ले कर आओ। और हाँ अबकी बार कोई सौदा नहीं। बस उसको ले कर आओ। उसको धरती पर से उठा कर लाना है। समझे।"

मृत्यु दूत बोला — "मैं क्या करता मैं उसके दरवाजे में फँस गया था। मैंने उससे छूटने की बहुत कोशिश की पर मैं छूट ही नहीं सका सो मुझे उससे वायदा करना पड़ा कि मैं उसको नहीं ले जाऊँगा ताकि कम से कम मैं उसके दरवाजे से तो छूट सकूँ।"

भगवान बोले — "ठीक है अब भागो यहाँ से। यह आखिरी बार है। उसको ले कर आओ। अबकी बार ख्याल रखना।"

सो वह फिर धरती पर गया और फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँच कर उसको आवाज लगायी। ताश खेलने वाला बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से यहाँ? अब तुम्हें क्या चाहिये?"

"भगवान ने मुझे यहाँ तुमको ले आने के लिये भेजा है। अबकी बार तुमको चलना ही है।"

"नहीं, मैं नहीं जा रहा।"

"नहीं का क्या मतलब है तुमको चलना ही है।"

"अच्छा तो तुम उस छोटी सी बैन्च पर बैठो... ।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"अच्छा तो दरवाजे के पास खड़े हो जाओ।"

"क्या, और फिर वहॉ से हिल भी न सको। तुम मेरे साथ अभी चलो।"

सो वह बाहर ही खड़ा रहा। न तो वह बैन्च पर बैठा और न ही वह दरवाजे के पास खड़ा हुआ। वहीं पास में सन्तरे का पेड़ था और उस पर पके सन्तरे लगे हुए थे।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर हम वाकई भगवान के पास जा रहे हैं तो मुझे क्या करना होगा। ऐसा करो, देखो इस पके सन्तरे के पेड़ को देखो। जब तक मैं तैयार होता हूॅ तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ और वहॉ से कुछ सन्तरे ही तोड़ लो। चार सन्तरे तोड़ लेना – दो अपने लिये और दो भगवान के लिये।"

सो मृत्यु दूत उस पेड़ पर चढ़ गया। जब वह ऊपर तक पहुॅच गया तो ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है अब मैं ताश खेलने जा रहा हूॅ।"

"क्या? मैं नीचे उतर रहा हूॅ फिर साथ साथ चलते हैं।"

"नहीं तुम नीचे नहीं उतर रहे।"

"क्या? मैं नीचे नहीं उतर रहा?"

"हॉ, तुम नीचे नहीं उतर रहे। तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी ताश खेलने जा रहा हूॅ। जब मैं तय कर लूॅगा कि मुझे क्या करना है तब मैं तुम्हें बताऊॅगा तब हम चलेंगे। और तभी मैं तुम्हें यहॉ से आजाद करूॅगा।"

मृत्यु दूत बोला — "ओ ताश खेलने वाले मैं तुमसे कह रहा हूॅ कि मुझे जाने दो। पहले तुमने मुझे इस छोटी सी बैन्च पर पकड़ा, फिर तुमने मुझे दरवाजे में पकड़ा और अब तुमने मुझे इस सन्तरे के पेड़ पर पकड़ रखा है।

यह सब तो ठीक है, पर यह तो बताओ तुम्हें चाहिये क्या? भगवान ने मुझसे कहा है कि तुम यहॉ लोगों को परेशान करते हो सो मैं तुमको यहॉ से ले जाऊॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं किसी को परेशान नहीं करता। मैं भगवान को भी परेशान नहीं करता। मैं किसी को परेशान नहीं करता सिवाय अपने साथ ताश खेलने वालों के।"

"ठीक है, तो मुझे तो जाने दो। मै तुमको बता रहा हूॅ कि मैं जा रहा हूॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "नहीं, तुम मुझे साथ ले कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊॅगा। तुम मुझे ले जाओगे इसी लिये तो मैं तुम्हें यहॉ से जाने नहीं दे सकता।"

पर बाद में मत्यु दूत को ताश खेलने वाले से एक वायदा करना पड़ा कि अगर उसने उसको छोड़ दिया तो वह उसको ले कर नहीं जायेगा और भगवान के पास जा कर उनको यह बतायेगा कि वह धरती पर कैसे पकड़ा गया था।

ताश खेलने वाला राजी हो गया तो उसने उसको सन्तरे के पेड़ पर से नीचे बुला लिया। मृत्यु दूत वहॉ से किसी तरह नीचे उतर कर सन्तरे ले कर भगवान के पास चला गया।

जब वह भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने उससे पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत बोला — "भगवन, इस बार उसने मुझे अपने सन्तरे के पेड़ में पकड़ लिया और फिर मुझे वह पेड़ छोड़ ही नहीं रहा था। फिर भी उसने आपके लिये दो सन्तरे भेजे हैं और कहा है कि मैं इनको आपको दे दूँ।"

भगवान बोले — "मुझे किसी सन्तरे की जरूरत नहीं है। और मैंने तुमको वहॉ सन्तरे तोड़ने के लिये भी नहीं भेजा था। क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम उसके सन्तरे के पेड़ पर चढ़ो? मुझको तो बस वह ताश खेलने वाला चाहिये और कुछ नहीं।"

सो वह अबकी बार चौथी बार धरती पर गया। इस बार उसको बहुत सावधान रहना था। भगवान ने भी उससे सावधान रहने के लिये कहा और कहा कि अगर वह सावधान नहीं रहा तो वह उसको वहॉ ले कर नहीं आ पायेगा।

सो वह फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँचा और जा कर उसको आवाज लगायी।

ताश खेलने वाला बाहर निकल कर आया और बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से? तुम यहाँ फिर से वापस क्यों आ गये?"

मृत्यु दूत बोला — "आज तो तुमको जाना ही पड़ेगा। भगवान ने मुझसे कहा है कि आज मैं तुमको ले कर ही आऊँ। इस बार कोई सौदा नही – न कोई बैंच और न कोई दरवाजा और न ही कोई सन्तरे का पेड़। बस तुमको मेरे साथ चलना है।"

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है, अगर मुझको जाना ही है तो मुझे पहले अपने ताश के पत्ते ले आने दो।"

सो वह अन्दर गया और अपना ताश निकल कर ले लाया। उन को उसने अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने एक थैला उठाया उसको अपने कन्धे पर डाला और वह इस तरह उस मृत्यु दूत के पीछे पीछे चल दिया।[27]

चलते चलते रास्ते में कुछ दूरी पर ताश खेलने वाले को ग्रैन इ्याब[28] दिखायी दे गया तो वह बोला — "ज़रा रुको ओ मृत्यु दूत, मैं चलते चलते इसके साथ एक ताश की एक बाज़ी[29] खेल लूँ।"

---

[27] The final episode in Germain Elizabeth's "Cardplayer' tale exemplifies cultural creolization. European tradition contributes Cardplayer's expulsion from Heaven. African tradition puts a familiar frame around it. Hell is forgotten in favor of two-sided conflict between the "little man" and the God. Elizabeth says "Cardplayer" earns the way to Heaven

[28] Gran Dyab

[29] Translated for the word "Deal"

मृत्यु दूत बोला — "मुझे बहुत देर हो जायेगी।"

ताश खेलने वाला गिड़गिड़ा कर बोला — "बस एक मिनट, केवल एक बाज़ी।"

कह कर वह ग्रेन इ्याब के पास पहुँच गया और उससे बोला — "आजा एक बाज़ी खेलते हैं।"

ग्रैन इ्याब बोला "क्या?"

ताश खेलने वाला बोला — "आओ ग्रैन इ्याब, एक बाज़ी खेलते हैं। अगर तुम जीत जाओ तो तुम मुझे खा लेना।"

उसने सोचा "देखो वह मृत्यु दूत खड़ा है। या तो मैं उसके साथ चला जाऊँगा या फिर ग्रैन इ्याब के मुँह में चला जाऊँगा। क्या फर्क पड़ता है।"

वह फिर ग्रैन इ्याब से बोला — "सो अगर तुम जीत गये तो तुम मुझे खा लेना और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे **12** छोटे शैतान दे देना।"

ग्रैन इ्याब बोला — "यकीनन। पर ओ ताश खेलने वाले, क्या तुम समझते हो कि तुम मेरे साथ ताश का खेल सकते हो?"

फिर भी दोनों ताश खेलने बैठे तो ताश खेलने वाले ने ग्रैन इ्याब को हरा दिया। अपने समझौते के अनुसार ग्रैन इ्याब गया और **12** छोटे शैतान ला कर उसको दे दिये।

उसने उन शैतानों को ले कर अपने थैले में डाला, थैले को अपने कन्धे पर डाला और मृत्यु दूत से बोला — "देखा तुमने? मैं कोई ऐसे ही झक नहीं मार रहा था। चलो चलते हैं।"

वे लोग स्वर्ग के दरवाजे पर आ पहुँचे थे। दरवाजे पर सेन्ट पीटर खड़ा हुआ था। मृत्यु दूत सेन्ट पीटर से बोला — "मैं इस ताश खेलने वाले को पकड़ लाया हूँ।"

सेन्ट पीटर ने पूछा — तुम ताश खेलने वाले को ले आये?"

"हॉ यह रहा।"

"बहुत अच्छे, उसको अन्दर ले आओ।" सो ताश खेलने वाला अन्दर गया।

सेन्ट पीटर ने पूछा — "यह तुम्हारे कन्धे पर क्या है?"

मृत्यु दूत बोला — "यह इसकी जीत है। जब यह यहॉ आ रहा था तो इसको इसने ताश की एक बाजी खेल कर जीता था।"

सेन्ट पीटर बोले — "क्या इसने कुछ जीत लिया?"

मृत्यु दूत बोला — "हॉ, यह ग्रैन इ्याब के साथ खेला और उससे इसने **12** छोटे शैतान जीत लिये।"

सेन्ट पीटर ने फिर पूछा — "यहॉ कोई शैतान नहीं आ सकता।"

"वह तो ठीक है। पर मैंने इनको जीता है। अब मैं इनका क्या करूँ? ये मेरे हैं। तुम मुझे इनको रखने के लिये कहीं किसी कोने में कोई जगह दे दो।"

सेन्ट पीटर बोले — "मैंने तुमसे कहा न कि यहाँ अन्दर कोई शैतान नहीं आ सकता। तुम इनको बाहर छोड़ सकते हो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। तब मैं इनको यहाँ दरवाजे के पास ही छोड़ देता हूँ।" और उसने अपना थैला दरवाजे के पास ही रख दिया।

वह वहीं बैठ गया और सेन्ट पीटर को घूरने लगा। कुछ पल उसको देखने के बाद वह बोला — "क्या वह तुम्हीं नहीं थे जो कुछ समय पहले मुझसे रात के लिये खाना और ठहरने की जगह माँगने आये थे? तुम लोग तीन थे।"

सेन्ट पीटर बोले — "हाँ, उनमें एक मैं भी था।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम तीनों भी एक चीज़ थे। तुम तीनों मेरे घर आये। मैं तुम लोगों को अन्दर ले गया। मैंने चावल बनाये। तुम लोगों को खाने के लिये दिये। तुम लोगों को सोने के लिये जगह दी।

और अब जब मैं यहाँ आया हूँ तो मैं अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास कुछ छोटे शैतान हैं? तुम तो वाकई अजीब चीज़ हो।"

उसने अपने शैतानों का थैला उठाया और वहॉ से चला गया क्योंकि सेन्ट पीटर उसको उन शैतानों के साथ अन्दर नहीं आने दे रहा था।

13 वुनगेलेमा[30]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़ाम्बिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बच्चों, यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार अफ्रीका में बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। सभी जानवर भूख से मरने लगे। इससे बाकी बचे जानवर बहुत दुखी हुए क्योंकि उनकी गिनती दिन पर दिन कम होती जा रही थी।

उसी जंगल में एक खास किस्म का पेड़ था जिसके सामने खड़े हो कर अगर उस पेड़ का केवल नाम ही ले दिया जाये तो उस पेड़ से अनगिनत मीठे रसीले फल टपक जाते थे। सभी जानवर यह बात जानते थे पर मुश्किल यह थी कि कोई भी जानवर, बूढ़े से बूढ़ा जानवर भी, उस पेड़ का नाम नहीं जानता था।

एक दिन शाम को सभी भूखे और कमजोर जानवर एक पेड़ के नीचे इकट्ठा हुए और इस बात पर विचार करने लगे कि इस पेड़ का नाम जानने के लिये क्या किया जाये।

एक बूढ़े शेर ने कहा — "मेरे दादा कहा करते थे कि इस पेड़ का नाम तो केवल पहाड़ देवता ही जानते हैं सो क्यों न कोई जवान और ताकतवर जानवर उन देवता के पास जाये और पहले उन

[30] Vungalama – a folktale of Zambia, Southern Africa

देवता से इस पेड़ का नाम मालूम कर के लाये तभी हम सब इस परेशानी से बच सकते हैं।"

सभी जानवरों में इस सलाह पर कानाफूसी होने लगी कि कौन उस पेड़ का नाम जानने के लिये उस देवता के पास जायेगा।

आखीर में यह तय किया गया कि खरगोश को इस पेड़ का नाम पता लगाने के लिये पहाड़ देवता के पास भेजा जाये क्योंकि वह सबसे तेज़ भागता है। वह उस पेड़ का नाम बहुत जल्दी से पूछ कर आ जायेगा।

अगले दिन सुबह सवेरे ही खरगोश महाशय अपने सफर पर चल दिये। छोटे तंग रास्तों से हो कर, जंगलों, झीलों, नदियों और नालों को पीछे छोड़ते हुए भागते भागते आखिरकार वह पहाड़ देवता के सामने जा पहुँचे।

जा कर उन्होंने पहाड़ देवता को सिर झुकाया और बोले — "हे देवता, आपको तो मालूम ही है कि जानवरों के देश में अकाल पड़ा है और धीरे धीरे कर के बहुत सारे जानवर मर गये हैं।

इसलिये मैं आपसे उस जादुई पेड़ का नाम पूछने आया हूँ जिसका केवल नाम लेने से ही उसमें से अनगिनत मीठे रसीले फल झड़ पड़ते हैं। हम सब इस अकाल की वजह से भूखे मर रहे हैं। अगर आप हमें उस पेड़ का नाम बता देंगे तो हम सब मरने से बच जायेंगे।"

पहाड़ देवता ने कहा — "जरूर जरूर, मैं तुमको उस पेड़ का नाम जरूर बताऊँगा। उस पेड़ का नाम है वुनगेलेमा। तुम तुरन्त ही वापस चले जाओ ताकि तुम उसका नाम न भूल जाओ और जाओ जा कर खूब फल खाओ।"

"धन्यवाद" कह कर खरगोश अपनी पूरी ताकत के साथ जंगल की तरफ वापस भाग लिया। वह न दॉये देख रहा था न बॉये, बस वह तो सीधा जंगल जाने वाली सड़क पर भागा चला जा रहा था ताकि वह उस नाम को जानवरों को जल्दी से जल्दी बता सके।

भागते भागते उसको पता ही नहीं चला कि कब उसके सामने एक चींटी का घर आ गया। खटाक, यह क्या? उसका सिर चींटियों के घर से जा टकराया और उसका सिर चकरा गया। वह बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ा।

जब उसको होश आया तब तक शाम हो चुकी थी। वह फिर भागा। जंगल में सभी जानवर उसके इन्तजार में खड़े थे। उसको देखते ही सभी एक साथ बोल उठे — "क्या नाम है उस पेड़ का?"

खरगोश ने उस पेड़ का नाम याद करने की बहुत कोशिश की पर वह सिर लटका कर बोला — "वुन, वुन, अरे मैं तो भूल ही गया कि उस पेड़ का नाम क्या है।"

इस पर सभी जानवर कुछ नाराज भी हुए और कुछ दुखी भी। खरगोश को एक ज़ोर का धक्का मारते हुए उन्होंने फिर मीटिंग की

क्योंकि अब उनको किसी दूसरे जानवर को उस पेड़ का नाम जानने के लिये भेजना था।

इस बार भैंसे का नम्बर आया सो अगले दिन भैंसा अपनी धीमी चाल से चलता हुआ पहाड़ देवता के पास पहुँचा।

वह भी नम्रता से सिर झुकाते हुए बोला — "हे पहाड़ देवता, आपको तो मालूम ही है कि जानवरों के देश में अकाल पड़ा है और धीरे धीरे कर के बहुत सारे जानवर मर गये हैं। इसलिये मैं आपसे उस जादुई पेड़ का नाम पूछने आया हूँ जिसका केवल नाम लेने से ही उसमें से अनगिनत मीठे रसीले फल झड़ पड़ते हैं।

खरगोश उस पेड़ का नाम भूल गया है। क्या आप मुझे दोबारा उस पेड़ का नाम बताने की मेहरबानी करेंगे ताकि मैं अपने साथियों को भूख से मरने से बचा सकूँ?"

देवता ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं तुमको उस पेड़ का नाम जरूर बताऊँगा। उस पेड़ का नाम है "वुनगेलेमा"। अब जाओ तुम जल्दी वापस चले जाओ। कहीं ऐसा न हो कि तुम भी यह नाम भूल जाओ और जाओ जा कर खूब फल खाओ।"

भैंसे ने देवता को धन्यवाद दिया और बहुत खुश हुआ कि उसको उस पेड़ का नाम पता चल गया था। रसीले फलों के बारे में सोचता सोचता वह गिरता फिसलता जंगल की तरफ भागा चला जा

रहा था ताकि वह खुद भी रास्ते में कहीं उस पेड़ का नाम न भूल जाये।

उसको भी रास्ते में आया वह चींटी का घर दिखायी नहीं पड़ा और खटाक, उसका सिर भी सामने बने चींटियों के घर में जा कर टकराया। उसका सिर भी चकरा गया और वह भी बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ा।

जब उसको होश आया तब शाम हो चुकी थी। वह फिर भागा और भागा भागा जंगल पहुँचा। जैसे ही जानवरों ने भैंसे को देखा तो उन्होंने तुरन्त उससे पूछा — "भैंसे भैंसे, उस पेड़ का नाम क्या है?"

भैंसे ने याद करते हुए कहा — "वुन, वुन, वुन।" परन्तु पूरा शब्द उसे भी याद नहीं आया। जंगल के सारे जानवर गुस्से के मारे इस बार भी खून का सा घूँट पी कर रह गये पर क्या कर सकते थे।

जानवरों ने फिर मीटिंग की। चीता बोला — "अगर हमें इस पेड़ का नाम जल्दी ही पता न चला तो हम सभी भूख से मर जायेंगे। मगर अब हम भेजें किसे?"

इस बार शेर का नाम लिया गया क्योंकि शेर जंगल का राजा होता है और राजा को अपनी प्रजा को तकलीफों से जरूर ही बचाना चाहिये।

शेर भी अगले दिन झूमता झामता पहाड़ देवता के सामने जा पहुँचा और नम्रता से सिर झुका कर बोला — "हे पहाड़ देवता, आपको तो मालूम ही है कि जानवरों के देश में अकाल पड़ा है और धीरे धीरे कर के बहुत सारे जानवर मर गये हैं।

इसलिये मैं आपसे उस जादुई पेड़ का नाम पूछने आया हूँ जिसका केवल नाम लेने से ही उसमें से अनगिनत मीठे रसीले फल झड़ पड़ते हैं।

खरगोश और भैंसा दोनों ही आपका बताया नाम भूल गये हैं। क्या आप मेहरबानी कर के मुझे वह नाम एक बार फिर से बता सकेंगे जिससे मैं अपनी भूख से मरती हुई प्रजा को बचा सकूँ?"

देवता ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं? पर तुम वह नाम सुनते ही चले जाना ताकि तुम उस नाम को भूलो नहीं। उस पेड़ का नाम है "वुनगेलेमा"।"

शेर ने देवता को धन्यवाद दिया और उलटे पैरों जंगल की तरफ भाग चला। भागते भागते वह सोच रहा था कि खरगोश और भैंसा भी इतनी तेज़ नहीं भागे होंगे जितनी तेज़ मैं भाग रहा हूँ। मैं सूरज छिपने से पहले ही जंगल पहुँच जाऊँगा और फिर सबको यह नाम बता दूँगा।

पर यह क्या? अपने तेज़ी से भागने की धुन में और शाम होने से पहले जंगल पहुँचने की जल्दी में शेर को भी सामने बना चींटी का

घर दिखायी नहीं दिया और खटाक। शेर सूरज की तरफ देख रहा था कि उसका सिर सामने बने चीटियों के घर में जा लगा।

उसका सिर उस चींटियों के घर से टकराते ही चकरा गया और वह भी बेहोश हो कर वहीं गिर पड़ा। जब उसको होश आया तो वह भी खरगोश और भैंसे की तरह उस पेड़ का नाम भूल चुका था।

भागा भाग वह जंगल तो पहुँचा पर जानवरों को उस पेड़ का नाम नहीं बता सका क्योंकि दूसरे जानवरों की तरह से वह भी उस पेड़ का नाम भूल गया था। सभी जानवरों ने शेर को बहुत बुरा भला कहा पर क्या करते।

तब एक छोटे से कछुए ने सिर उठाया और कहा — "कल मैं पहाड़ के देवता के पास जाता हूँ और आप लोगों को उस पेड़ का नाम ला कर देता हूँ। मैं कल सुबह सवेरे ही निकल जाऊँगा।"

उसकी बात सुन कर वहाँ खड़े सारे जानवर उस दुख और गुस्से में भी हँस पड़े और बोले — "क्या? तुम जैसे छोटे से जानवर को वह शब्द याद रहेगा जो इतने बड़े बड़े जानवर भूल गये?"

कछुए ने शान्ति से कहा — "कल तक इन्तजार करिये तब आप सबको पता चलेगा।"

सूरज की पहली किरन के साथ ही कछुआ अपने सफर पर निकल पड़ा। वह धीरे धीरे चलता गया और दोपहर तक देवता के सामने जा पहुँचा।

देवता ने उसको देख कर आश्चर्य से कहा — "अरे, फिर एक जानवर? लगता है शेर भी उस शब्द को भूल गया है।"

कछुआ सिर झुका कर बोला — "जी हॉ देवता जी, शेर जी भी खरगोश और भैंसे की तरह उस नाम को भूल गये। मेहरबानी कर के एक बार फिर से वह नाम मुझे बता दीजिये। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

देवता बोले — "अच्छा तो अब उस नाम को तुम ध्यान से सुनो क्योंकि अब यह नाम मैं किसी और को नहीं बताऊँगा। उस पेड़ का नाम है "वुनगेलेमा"।"

और कछुआ देवता को धन्यवाद दे कर वह नाम दोहराता हुआ अपनी धीमी चाल से जंगल की तरफ चल दिया। थोड़ी थोड़ी देर बाद वह यह नाम दोहराता जाता था और आगे चलता जाता था।

क्योंकि वह बहुत सावधानी से और धीरे धीरे जा रहा था इस लिये उसने चींटियों का घर देख लिया था। चींटियों के घर के पास पहुँच कर उसने उनके घर का एक चक्कर लगाया और बोला "वुनगेलेमा"।

वह जब जंगल पहुँचा तो अँधेरा हो चुका था इसलिये उस छोटे से जानवर की ओर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। इतने में हिरन की नजर उस पर पड़ी।

हिरन दौड़ा दौड़ा आया और बोला — "कछुए भाई, तुम आ गये? उस पेड़ का नाम तो बताओ।"

पर कछुए ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सीधा उस जादुई पेड़ के पास पहुँचा और बोला — "वुनगेलेमा"।

बस फिर क्या था उस पेड़ से बारिश की बूँदों की तरह से अनगिनत मीठे रसीले फल टपाटप गिर पड़े।

हिरन तो यह देख कर बहुत ही खुश हुआ और तुरन्त ही जंगल के सारे जानवरों को बुला लाया। कई दिनों के भूखे जानवरों ने भर पेट फल खाये और इतने खाये कि उनसे फिर और नहीं खाये गये।

बहुत दिनों बाद वे सब उस रात पेट भर खाना खा कर सोये। सुबह कछुए ने उस पेड़ के पास जा कर फिर कहा — "वुनगेलेमा" और फिर सैंकड़ों मीठे रसीले फल उस पेड़ से गिर पड़े।

अब वे रोज़ रसीले फल खाते और उनसे अपना पेट भर लेते। धीरे धीरे अकाल खत्म हो गया। बारिश पड़नी शुरू हो गयी। इसलिये उन जानवरों को फिर उस पेड़ के फलों की जरूरत ही नहीं पड़ी और वे धीरे धीरे उस पेड़ का नाम भूल गये।

वह पेड़ आज भी उसी जंगल में वहीं खड़ा है पर उसका नाम आज कोई नहीं जानता क्योंकि फिर किसी को उसकी जरूरत ही नहीं पड़ी। अब सभी उसका नाम भूल चुके हैं।

पर तुमको तो उस पेड़ का नाम मालूम है न? सो जब कभी तुम को फलों की दावत करनी हो या फिर बहुत सारे फलों की जरूरत हो तो बस वहॉ चले जाना और यह नाम ले देना। उस पेड़ से बहुत सारे मीठे रसीले फल नीचे गिर पड़ेंगे। जितने चाहो उतने खाना और जितने चाहो उतने खिलाना।

14 जादुई खीरे[31]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार ज़िम्बाब्वे देश के एक गॉव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम था वॉगे[32]। हालॉकि उस गॉव में बहुत सारी लड़कियॉ थीं पर फिर भी वह अभी तक कुँआरा ही था क्योंकि उन लड़कियों का कहना था कि वह बहुत ही पतला दुबला और बदसूरत था।

उसकी उम्र के दूसरे नौजवानों की शादियॉ हो चुकी थीं और वहॉ के रीति रिवाजों के अनुसार किसी किसी के तो एक से ज़्यादा पत्नियॉ भी थीं।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि वॉगे यह सब देख देख कर और सोच सोच कर ही दिन पर दिन दुबला हुआ जा रहा था। वह देखने में तो सुन्दर नहीं था परन्तु वह दयालु बहुत था।

एक दिन उस गॉव के लोगों ने कुश्ती का प्रोग्राम रखा। सुबह सवेरे ही गॉव के सारे लोग मैदान में इकट्ठा हो गये। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर तक उन सबमें खूब कुश्ती हुई। दोपहर को जब

[31] Magical Cucumbers – a folktale of Zimbabwe, Southern Africa.

[32] Wange – name of the man who was not married

काफी गर्म हो गया सो सभी लोग कुश्ती रोक कर पेड़ों की छाया में लेट गये।

एक आदमी ने ढोल बजाना शुरू किया तो उनकी पत्नियों को पता चल गया कि उनके पतियों के दोपहर के खाने का समय हो गया है सो वे सब अपने अपने पतियों के लिये दोपहर का खाना ले कर कुश्ती के मैदान को चलीं।

सभी ने अपनी अपनी पत्नियों के हाथ का स्वादादार खाना पेट भर कर खाया परन्तु वॉगे की तो कोई पत्नी ही नहीं थी इसलिये न तो उसके लिये कोई खाना ही ले कर आया और न ही वहॉ उसको किसी ने खाना खाने के लिये पूछा।

वॉगे बेचारा भूख से परेशान था। उसने सोचा — "काश, मेरी भी कोई पत्नी होती तो वह भी मेरे लिये खाना लाती। अब तो मुझे अपने आप ही अपना खाना ढूँढना पड़ेगा। चलूँ, पास की नदी से ही कोई मछली पकड़ता हूँ।"

ऐसा सोच कर वह पास की नदी की तरफ चल दिया।

उसने अपना मछली पकड़ने वाला कॉटा नदी में फेंका। कॉटा खींचने पर भारी लगा तो उसने सोचा कि "लगता है आज कोई बड़ी मछली फॅसी है क्योंकि मेरा कॉटा खूब भारी हो गया है। आज तो मजा ही आ गया।"

यह सोच कर उसने जैसे ही वह कॉटा ज़ोर लगा कर ऊपर खींचा तो उस कॉटे की रस्सी टूट गयी और वह कॉटा नदी में डूब गया।

वह दुखी हो कर बोला — "अरे, यह तो रस्सी भी टूट गयी, मेरा कॉटा भी गया। मैं मछली भी नहीं पकड़ सका और मैं भूखा भी रह गया। मैं इस बड़ी मछली को किसी भी हाल में अपने हाथ से जाने नहीं दूँगा।" और वह तुरन्त ही नदी में कूद गया।

पर चारों ओर देखने पर भी उसको नदी में मछली तो कोई दिखायी नहीं दी, हॉ, एक बहुत बड़ा मगर जरूर दिखायी दे गया।

वॉगे ने उससे पूछा — "क्या तुमने मेरा कॉटा चुराया है?"

मगर ने जवाब दिया — "नहीं, इन सब खेलों के लिये तो मैं अब काफी बूढ़ा हो चुका हूँ लेकिन मैंने तुम्हारा कॉटा चुराने वाले को उस रास्ते पर जाते हुए जरूर देखा है। अगर तुम जल्दी से उधर चले जाओ तो शायद उसे पकड़ पाओ।" यह कह कर उसने पानी में जाते एक रास्ते की तरफ इशारा कर दिया।

जिस तरफ मगर ने इशारा किया था वॉगे ने उस तरफ देखा तो उसे पानी में जाता एक पथरीला रास्ता दिखायी दिया जिसके दोनों तरफ घास लगी हुई थी। उसने मगर को धन्यवाद दिया और उस रास्ते पर चल दिया।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह रास्ता पानी के अन्दर था और उसको पानी के अन्दर सॉस लेने में कोई मुश्किल नहीं हो रही थी।

वह उस रास्ते पर ऐसे बढ़ता चला जा रहा था जैसे धरती पर चल रहा हो। रास्ते में उसने सुनहरी रुपहली मछलियॉ देखीं, पानी के सॉप देखे और हरे केकड़े भी देखे।

चलते चलते अचानक ही वह काले सफेद पत्थरों से बने एक घर के सामने जा पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर उसने आवाज लगायी — "नमस्ते, अन्दर कोई है?"

मकान के अन्दर से आवाज आयी "नमस्ते" और कुछ ही पल में झुकी हुई कमर वाली एक बुढ़िया बाहर आयी।

वॉगे ने बुढ़िया से पूछा — "यहॉ किसी ने मेरा कॉटा चुरा लिया है क्या आप बता सकती हैं कि मेरा कॉटा किसने चुराया है?"

बुढ़िया ने पूछा — "पर तुम यहॉ इस पानी के राज्य में क्या कर रहे हो, ओ आदमी के बच्चे?"

वॉगे बोला — "मैं नदी पर मछलियॉ पकड़ रहा था कि मेरा कॉटा खो गया। मैं उसे ढूॅढते ढूॅढते यहॉ तक आ गया।"

बुढ़िया बोली — "क्या? तुम एक छोटे से कॉटे के लिये इतनी तकलीफ उठा रहे हो? बड़े गरीब लगते हो।"

वॉगे बोला — "जी हॉ यही मेरे खाने पीने का सहारा है इसलिये मैं इसे खोना नहीं चाहता।"

बुढ़िया के मुँह से निकला "ओह" और पास से उसने एक स्पंज तोड़ लिया और वॉगे से कहा — "यह स्पंज लो और ज़रा मेरी पीठ तो साफ कर दो।"

हालॉकि वॉगे इस समय बुढ़िया की पीठ साफ करने के बिल्कुल भी मूड में नहीं था परन्तु क्योंकि स्वभाव से ही वह बहुत दयालु था इसलिये वह उस स्पंज से बुढ़िया की पीठ साफ करने लगा।

थोड़ी देर बाद वह बुढ़िया से बोला — "यह लीजिये, आपकी पीठ साफ हो गयी। अब यह चॉद की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "नहीं, अभी नहीं, थोड़ा और साफ करो।"

तो वॉगे ने फिर से उसकी पीठ साफ करनी शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद वह फिर बोला — "यह लीजिये, अब शायद आपकी पीठ साफ हो गयी है क्योंकि अब यह सूरज की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "धन्यवाद बेटा, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। अब तुम मुझसे जो चाहे मॉग लो। बोलो तुम्हें क्या चाहिये?"

वॉगे अपना कॉटा खोने का दुख तो भूल गया और खुशी से भर कर बोला — "मुझे एक सुन्दर सी पत्नी चाहिये। क्या आप मुझे वह दे सकेंगी?"

बुढ़िया बोली — "जरूर जरूर, क्यों नहीं।" कह कर वह घर के अन्दर गयी और चार सुन्दर चिकने खीरे ले आयी।

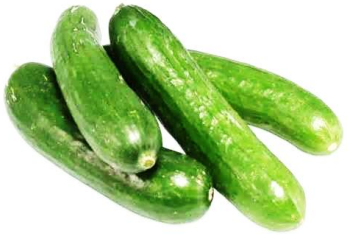

उन खीरों को वॉगे को देते हुए वह बोली — "लो ये खीरे लो और घर वापस चले जाओ। जब तुम नदी के किनारे पहुँचोगे तब इनको तोड़ना। इनमें से हर खीरे में से एक एक सुन्दर लड़की निकलेगी।

लेकिन याद रखना कि इन खीरों को नदी के किनारे ही तोड़ना, उससे पहले नहीं, क्योंकि ये लड़कियॉ तुरन्त ही पीने के लिये पानी मॉगेंगी और अगर तुमने इनको तुरन्त ही पानी न दिया तो ये सब गायब हो जायेंगी और फिर कभी नहीं आयेंगी।"

वॉगे को हालॉकि बुढ़िया की इन बातों पर ज़रा भी विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी सिर झुका कर उसने "अच्छा जी" कहा और वे खीरे उससे ले कर अपनी जेब में रख लिये।

फिर बोला — "धन्यवाद, मेरे ऊपर यह आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे इतनी सुन्दर भेंट दी। जैसा आपने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।"

ऐसा कह कर वह वहॉ से अपने घर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने सोचा — "अब मैं कभी अपना कॉटा वापस नहीं पा सकूँगा इसलिये जब मैं धरती पर पहुँच जाऊँगा तब इन खीरों को खा लूँगा।"

धरती पर पहुँच कर उसने देखा कि वह बूढ़ा मगर अभी भी वहीं लेटा हुआ है। वॉगे ने उसको नमस्ते की और ऊपर चल दिया।

ऊपर अभी भी बहुत गर्म था इसलिये वह नदी से कुछ दूर पर लगे एक पेड़ की छाया में बैठ गया। कुछ देर बाद उसने अपनी जेब से चारों खीरे निकाले और उनको अपने हाथों में उलटने पलटने लगा। वे उसे बहुत ही रसीले और ताजे दिखायी दे रहे थे।

उसे बहुत तेज़ भूख लगी थी सो वह उन खीरों को खाना चाहता था। उसने खीरा खाने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि उसे बुढ़िया के शब्द याद आये कि इन खीरों को नदी के पास ही तोड़ना।

उसने तय किया कि वह पहले बुढ़िया के कहे अनुसार ही करेगा। अगर वे जादू के खीरे हुए तो उनमें से लड़कियॉ जरूर निकलेंगी सो उसने ऐसा ही किया। पर वह यह अन्दाज नहीं लगा सका कि उसको वे खीरे पानी के कितने पास तोड़ने चाहिये।

उसने पहले एक खीरा तोड़ा। तुरन्त ही उसमें से एक सुन्दर लड़की निकल कर उसके सामने खड़ी हो गयी और बोली "पानी दो"। वॉगे तो उसको देख कर आश्चर्यचकित सा बैठा ही रह गया, न हिल सका न डुल सका।

उस लड़की ने फिर कहा "मुझे पानी चाहिये।" अब वह जैसे सपने से जगा और उसे ख्याल आया कि उसे तो ये खीरे नदी के

किनारे तोड़ने चाहिये थे। वह तुरन्त ही नदी से पानी लेने भागा और पानी ले कर उलटे पैरों वापस आया पर उसे देर हो गयी थी और वह लड़की गायब हो चुकी थी।

सो बुढ़िया की बात तो सच निकली। वह पछताने लगा कि अपनी बेवकूफी से उसने अपनी इतनी सुन्दर पत्नी खो दी।

अब वह बाकी बचे हुए खीरे नदी के किनारे ले आया और उसने पानी भी अपने पास रख लिया।

उसने फिर दूसरा खीरा तोड़ा। उसमें से भी एक सुन्दर सी लड़की निकली और बोली "पानी"। वॉगे ने कॉपते हाथों से उसे पानी पिलाया। अबकी बार वह लड़की गायब नहीं हुई बल्कि उसको देख कर मुस्कुरा दी।

इसी तरह उसने बाकी बचे दो खीरे भी तोड़े और उनमें से भी दो सुन्दर लड़कियॉ निकलीं। उसने उनको भी तुरन्त ही पानी पिलाया।

कुछ देर के लिये तो वह हक्का बक्का रह गया, उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। फिर जब वह होश में आया तो उन तीनों लड़कियों से बोला — "चलो घर चलते हैं। जब वह घर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वह जल्दी से अपनी तीनों पत्नियों को ले कर घर के अन्दर घुस गया ताकि उन्हें कोई देख न ले।

अगली सुबह फिर कुश्ती हुई। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर को जब खाने का समय हुआ तो सभी लोगों की पत्नियॉ अपने अपने पतियों के लिये खाना ले कर आयीं।

पहले दिन की तरह से उस दिन भी किसी ने भी वॉगे को खाना नहीं दिया सो वह उनसे कुछ दूर हट कर बैठ गया।

अचानक उसने सरसराहट और फुसफुसाहट की आवाजें सुनी। उसके सभी साथी फुसफुसा रहे थे। तभी उसकी नजर सामने पड़ी तो उसने देखा कि उसकी तीनों पत्नियॉ कुछ न कुछ अपने सिर पर रखे चली आ रही थीं।

उसकी पहली पत्नी ने उसके आगे दलिये का बर्तन रखा, दूसरी ने मॉस का और तीसरी ने पीने के साफ पानी का। वॉगे ने बड़े प्रेम से खाना खाना शुरू कर दिया।

वहॉ बैठे सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कल तक तो यह अकेला था और आज इसके लिये इसकी तीन तीन पत्नियॉ खाना ले कर आयी हैं। यह मामला क्या है?

वे तुरन्त ही दौड़े दौड़े वॉगे के पास पहुॅचे और उससे सवाल पर सवाल करने शुरू कर दिये — "तुमको ये पत्नियॉ कहॉ से मिलीं?" "तुम कोई सरदार हो जो तुम तीन तीन पत्नियॉ रखे हो?"

"हमने इतनी सुन्दर लड़कियॉ तो पहले कभी नहीं देखीं।" "हमारी पत्नियॉ तो इनके आगे बहुत ही बदसूरत और भद्दी दिखायी देती हें।" आदि आदि वाक्य वॉगे के कानों में पड़ने लगे।

वॉगे ने जवाब दिया — "आप लोग शान्ति से बैठें तो मैं आपको सब कुछ बताता हूँ।" कह कर उसने कॉटा खोने से ले कर पत्नियॉ मिलने तक की पूरी कहानी उन सबको बता दी।

उसकी कहानी सुनते ही वे सब भी विचार करने लगे कि किस तरह पानी में जा कर वैसी सुन्दर लड़कियों को लाया जाये।

तुरन्त ही वे सब घर गये और अपनी अपनी पत्नियों को कह आये कि तुम सभी बड़ी बदसूरत हो इसलिये तुम अपने अपने पिता के घर जाओ अब हम तुम्हें नहीं रखेंगें। पत्नियॉ बेचारी रोती हुई अपने अपने पिता के घर चली गयीं।

उधर वे सब लोग नदी के किनारे आ गये जहॉ वॉगे ने अपना मछली का कॉटा खोया था। उन्होंने भी अपने अपने कॉटे पानी में फेंके और इस बात का इन्तजार किये बिना ही कि कोई मछली उसमें फॅसी कि नहीं वे नदी में कूद गये।

वह बूढ़ा मगर आश्चर्यचकित सा अभी भी वहीं लेटा हुआ था। वे सभी उसको ऐसे ही छोड़ कर घर को जाने वाले पथरीले रास्ते की तरफ बढ़ गये।

वे लोग इतनी जल्दी में थे कि न तो वे मछलियों की सुन्दरता ही देख सके और न ही हरे केकड़ों पर नजर डाल सके। आखिर वे उस पथरीले रास्ते पर चलते हुए उसी काले सफेद पत्थरों के बने हुए घर के सामने आ खड़े हुए जहॉ वॉगे पहुँचा था।

किसी को वहाँ न देख कर उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — "ओ बुढ़िया, अरी ओ बुढ़िया, जल्दी से बाहर निकल और हम सबको सुन्दर सुन्दर पत्नियाँ दे वरना हम सभी मिल कर तुझे पीटेंगे।"

बेचारी बुढ़िया काँपती सी घर के बाहर आयी और पहले की तरह एक स्पंज तोड़ा और उसे उन लोगों की तरफ ले जा कर बोली — "मेरी पीठ बड़ी गन्दी हो रही है पहले ज़रा मेरी पीठ साफ कर दो।"

पर वे सभी इस बात पर ज़ोर से हँस कर बोले — "यह हमारा काम नहीं है। हम तेरी पीठ साफ क्यों करेंगे? हमको तो बस तू जल्दी से वे जादू के खीरे दे दे जिनको तोड़ने पर सुन्दर सुन्दर लड़कियाँ निकल आती हैं नहीं तो हम तेरे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।"

वह बुढ़िया बेचारी धीरे धीरे घर के अन्दर गयी और दो टोकरी में बहुत सारे खुरदरे खीरे ले आयी। सभी लोगों ने टोकरी की टोकरी छीननी शुरू कर दी परन्तु बुढ़िया ने सबको केवल सात सात खीरे ही दिये।

उन लोगों ने सोचा कि हम तो वाँगे से बहुत अच्छे हैं क्योंकि वाँगे को तो केवल तीन ही खीरे मिले थे पर हमको तो सात सात खीरे मिले हैं। हमारी किस्मत उससे ज़्यादा अच्छी है। वे दौड़ते भागते खीरे तोड़ने के चक्कर में तुरन्त ही नदी के किनारे जा पहुँचे।

जल्दी जल्दी उन्होंने खीरे तोड़े। सबसे पहले आदमी ने जैसे ही अपना पहला खीरा तोड़ा वह डर गया क्योंकि उसके सामने एक उससे भी लम्बी और बदसूरत औरत खड़ी थी।

सभी के साथ ऐसा ही हुआ। इस उम्मीद में कि किसी खीरे में से तो कोई सुन्दर सी लड़की निकलेगी उन्होंने सारे खीरे तोड़ डाले।

पर उन खीरों में निकली हर औरत पहली औरत से कहीं ज़्यादा लम्बी और कहीं ज़्यादा बदसूरत होती गयी।

उनमें से सबसे लम्बी और सबसे ज़्यादा बदसूरत औरत ने कहा — "तुम हमको बदसूरत कहते हो?" और ऐसा कह कर उन्होंने सबने मिल कर उन सबको पीटना शुरू कर दिया।

दर्द से चिल्लाते हुए सभी आदमी गॉव की तरफ भागे और उन बदसूरत औरतों से बचने के लिये अपने घरों में छिप कर दरवाजा बन्द कर लिया। पर वे सब औरतें गॉव में आते ही गायब हो गयीं।

जब सब कुछ शान्त हो गया तब वे लोग अपने अपने घरों से बाहर निकले। अब उन्हें लगा कि वे कितने भूखे थे परन्तु वहॉ कोई भी औरत खाना बनाने के लिये नहीं थी क्योंकि अपनी सभी पत्नियों को तो उन्होंने उनके पिता के घर भेज दिया था।

कुछ लोगों ने अपनी पत्नियों को वापस लाने की कोशिश भी की पर बेकार। पत्नियों ने कहा — "तुम लोगों ने हमारे दिल को

ठेस पहुँचायी है इसलिये ऐसे बेरहम पतियों के पास हमें हमारे माता पिता भेजने को तैयार नहीं हैं।"

उधर वॉगे के पास अब तीन पत्नियॉ थीं और सब लोग उसको इज़्ज़त से देखने लगे थे। अच्छा खाना मिलने से अब वह सुन्दर भी हो गया था।

दूसरे लोगों को पत्नियों की खोज में फिर से दूर दूर जगह जाना पड़ा। फिर जब उनको पत्नियॉ मिल गयीं तो उन्होंने फिर कभी उनको बदसूरत नहीं कहा।

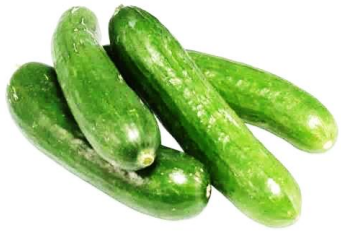

पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं

West Africa – 16 Countries
(1) Benin, (2) Burkina Faso, (3) Cape Verde, (4) Gambia, (5) Guinea, (6) Guinea Bissau, (7) Ivory Coast, (8) Liberia, **(9) Ghana**, (10) Mali, (11) Mauritania, (12) Niger, **(13) Nigeria**, (14) Senegal, (15) Sierra Leone, (16) Togo.
Ghana and Nigeria's folktales are given separately.

15 सरदार जो बेवकूफ नहीं था[33]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के लाइबेरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह होशियारी की एक बहुत सुन्दर कथा है।

एक बार एक बूढ़ा गॉव के सरदार के पास आया और बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता कीजिये सरदार। मेरे पड़ोसी ने मेरी बकरियॉ चुरा ली हैं।"

सरदार ने उसकी बातें ध्यान से सुनी। उसको इस बात से खुशी होती थी कि लोग उसकी अक्लमन्दी को पहचानते थे और मानते भी थे। सरदार ने फिर पूछा — "पर तुम्हारी परेशानी क्या है?"

बूढ़ा बोला — "मेरी परेशानी यह है सरकार कि मेरे पड़ोसी ने मेरी बकरियॉ चुरा ली हैं। मैं एक गरीब आदमी हूॅ और इतना गरीब हूॅ कि मैं उनके बदले में और बकरियॉ नहीं खरीद सकता।"

सरदार ने पड़ोसी से पूछा — "और तुमको इस बारे में क्या कहना है।"

पड़ोसी ने जवाब दिया — "मुझे नहीं मालूम कि यह आदमी क्या कह रहा है। मेरे पास बहुत सारी बकरियॉ हैं पर उनमें से कोई भी बकरी इसकी नहीं है।"

---

[33] The Chief Who Was No Fool – a folktale from Kush, Liberia, West Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.phillipmartin.info/liberia/text_folktales_chief.htm
By Phillip Martin.

अब इस बात का फैसला करना तो कोई आसान काम नहीं था। सरदार को अपनी अक्ल इस्तेमाल करनी थी। सरदार को ऐसे मामले सुलझाने में बहुत अच्छा लगता था।

सरदार ने घोषणा की — "मैं तुम लोगों का एक इम्तिहान लेता हूँ। जो भी वह इम्तिहान पास कर लेगा वही बकरियों का मालिक होगा। जब तक तुम इस सवाल का जवाब दो तब तक तुम लोग अपने अपने घर जा सकते हो।

मैं जानना चाहता हूँ कि इस दुनियॉ में सबसे ज़्यादा तेज़ चीज़ क्या है? जब तक तुम लोग इस सवाल का जवाब न ढूँढ लो यहॉ वापस मत आना।"

दोनों लोग सिर हिलाते हुए अपने अपने घर चले गये। अब इस बात का जवाब कौन दे सकता था?

इस बूढ़े के एक बेटी थी ज़िया। वह जितनी सुन्दर थी उतनी ही अक्लमन्द भी थी। बूढ़ा जब घर वापस आया तो सरदार का सवाल उसने अपनी बेटी से पूछा। तुरन्त ही उसने अपने पिता के कान में कुछ फुसफुसाया जो उस सरदार को खुश कर देता।

अगली सुबह ही वह बूढ़ा सरदार के घर की तरफ रवाना हुआ। सरदार ने जब बूढ़े को देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "अरे क्या तुमको मेरे सवाल का जवाब मिल गया?"

बूढ़ा बोला — "जी सरदार, यह कोई ज़्यादा मुश्किल सवाल नहीं था।"

सरदार ने फिर पूछा — "तो बताओ कि फिर दुनियॉ में सबसे ज़्यादा तेज़ चीज़ क्या है?"

बूढ़ा बोला — "समय। वह हमारे पास कभी काफी नहीं होता। यह हमेशा ही बहुत जल्दी चला जाता है और हमारी पकड़ में ही नहीं आता। जो हम करना चाहते हैं उसके लिये हमारे पास कभी भी समय काफी नहीं होता।"

बूढ़े के इस जवाब से तो सरदार भौंचक्का रह गया क्योंकि उसको तो अपने आप पर भी यकीन नहीं था कि वह खुद भी इस सवाल का जवाब दे सकता था।

उसने बूढ़े से पूछा — "इस सवाल के जवाब में तुमको किसने सहायता की? किसने बताया यह तुमको?"

बूढ़ा झूठ बोला — "किसी ने नहीं जनाब। ये मेरे अपने शब्द हैं। मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया।"

सरदार ने कहा — "तुम मुझे सच नहीं बता रहे हो इसके लिये क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हें सजा भी दे सकता हूँ?"

यह सुन कर बूढ़ा डर गया। वह और आगे झूठ नहीं बोल सका। बोला — "यह मेरी बेटी ज़िया ने मुझे बताया। वह एक बहुत ही अक्लमन्द लड़की है।"

सरदार बोला — "लगता है कि वह बहुत अक्लमन्द लड़की है। मैं उससे मिलना चाहूँगा।"

कुछ देर बाद ही वह बूढ़ा अपनी बेटी को सरदार के पास ले आया। सरदार तो पहले ही उसकी अक्लमन्दी का सिक्का मान गया था और उसको देख कर तो वह उसकी सुन्दरता का भी सिक्का मान गया।

सरदार उसको देख कर बोला — "तुम बहुत अक्लमन्द हो और साथ में सुन्दर भी। यह मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी अगर तुम मेरे साथ शादी करोगी। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

ज़िया ने जवाब दिया — "सरदार, यह तो आप मेरी इज़्ज़त बढ़ा रहे हैं।"

हालॉकि सरदार इस बात से बहुत खुश था कि उसको इतनी सुन्दर और अक्लमन्द पत्नी मिल जायेगी पर वह उससे डरा हुआ भी बहुत था क्योंकि वह वाकई बहुत अक्लमन्द थी।

वह नहीं चाहता था कि वह उसके पास आने वाले मामलों में दखल दे। वह अपनी इज़्ज़त को जो उसको अपनी अक्लमन्दी की वजह से मिली हुई थी किसी से बॉटना नहीं चाहता था। अपनी पत्नी से भी नहीं।

सो सरदार ने उससे कहा — "जो कुछ भी मेरे घर में है वह सब तुम्हारा है। पर तुम्हारे लिये इस घर में बस केवल एक नियम है। और वह यह कि तुम मेरे सामने आये हुए मामलों में कोई दखल नहीं दोगी। बस यही एक नियम है तुम्हारे लिये। अगर तुमने यह नियम तोड़ा तो मैं तुमको तुम्हारे पिता के घर भेज दूँगा।"

सरदार की नयी पत्नी इसके जवाब में केवल मुस्कुरा दी।

कुछ समय तक तो सब ठीक चलता रहा। सरदार के पास लोग अपने मामले ले कर आते थे और वह उनको सुलझाता था और ज़िया अपने घर के काम में लगी रहती थी। अक्सर वह सरदार के फैसलों को ठीक ही मानती थी।

एक दिन सरदार ने दो लड़कों को एक पहेली दी जो अपनी भेड़ों पर लड़ रहे थे। ज़िया को मालूम था कि उसको उस लड़के की सहायता नहीं करनी थी जो सचमुच में भेड़ का मालिक था लेकिन वह लड़का उस पहेली ले कर बहुत परेशान था।

यह सब देख कर ज़िया से रहा नहीं गया। उसने उस लड़के से पूछा कि वह इतना परेशान क्यों है।

वह लड़का बोला — "सरदार ने मुझे बिल्कुल ही नामुमकिन काम दे रखा है। उसने हमें एक एक अंडा दिया है और कहा है कि जो कोई इस अंडे के बच्चे को मुझे सुबह ला कर दिखायेगा भेड़ें उसी की होंगी।"

ज़िया जानती थी कि उसको उस लड़के की सहायता नहीं करनी चाहिये पर इसका हल बहुत ही साफ था और वह लड़का उस काम को ले कर वाकई बहुत परेशान था सो वह उसको उसके काम का हल बताये बिना न रह सकी।

उसने लड़के से कहा — "सरदार के पास थोड़ा सा चावल ले जाओ और उससे कहो कि वह उस चावल को आज ही बो दे ताकि

तुम कल सुबह उस अंडे में से निकले बच्चे को वह मुलायम ताजा चावल खिला सको।

उसको भी पता चल जायेगा कि एक दिन में चावल उगाना उतना ही नामुमकिन है जितना आज के अंडे में से सुबह चूज़े का निकलना।"

लड़का यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह तुरन्त ही सरदार के पास चावल ले कर भागा गया। और जो शब्द ज़िया ने उससे कहे थे उसने वही शब्द जा कर सरदार से कह दिये। पर सरदार यह सुन कर खुश नहीं हुआ। वह बहुत गुस्सा हुआ।

उसने गुस्से से पूछा — "किसने कहा तुमसे यह सब? किसने दिये तुम्हें चावल? तुम्हारे जितने बड़े बच्चे के लिये ये शब्द बहुत ज़्यादा अक्लमन्दी के हैं।"

लड़का डर के मारे सच बोलने में घबरा रहा था इसलिये वह बोला — "ये मेरे ही शब्द हैं ये मेरे ही विचार हैं। किसी और ने इसमें मेरी कोई सहायता नहीं की है।"

सरदार ने उसको डराया — "देख लो अगर तुम सच नहीं बोल रहे हो तो मैं तुमको सजा दूँगा।"

इस पर वह लड़का चिल्ला पड़ा — "सरदार वह ज़िया थी। उसने सोचा कि तुम अक्लमन्दी की कदर करोगे।"

इस पर सरदार ज़िया पर बहुत गुस्सा हुआ क्योंकि उसने उसको एक ही तो नियम मानने को बताया था और वही उसने तोड़ दिया था। उसने ज़िया को अपने सामने बुलाया और उसे बहुत डॉटा।

उसने कहा — "क्या तुमको मालूम नहीं है कि जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है? मैंने तुमको केवल एक ही नियम मानने के लिये कहा था और वह भी तुमसे माना नहीं गया। जाओ अब तुम अपने पिता के घर चली जाओ।"

पर यह सब सुन कर भी ज़िया घबरायी नहीं। वह शान्ति से बोली — "ठीक है। पर जाने से पहले मैं आपके लिये एक आखिरी खाना बनाना चाहती हूँ। फिर जो कुछ मेरा है मैं उसको अपने साथ ले कर अपने घर चली जाऊँगी।"

सरदार ने गुस्से में ही जवाब दिया — "ठीक है ठीक है। जो तुम्हें बनाना हो बनाओ, जो तुम्हें करना हो करो पर देखना यहाँ रात को नहीं ठहरना।"

ज़िया ने उस शाम सरदार का प्रिय खाना बनाया और उसे काफी सारी पाम की शराब के साथ उसको खिलाया। खाना खत्म होने से पहले ही सरदार शराब में धुत हो चुका था और थोड़ी ही देर में वह सो गया।

फिर ज़िया ने जैसा सोचा था वैसा ही किया। अपने परिवार की सहायता से वह सरदार को अपने पिता के घर ले आयी।

उन्होंने सरदार को एक आरामदेह बिस्तर पर सुला दिया जहाँ सरदार सारी रात आराम से सोता रहा। पर सुबह जैसे ही सरदार जगा तो उसकी कड़कती हुई आवाज सारे घर में गूँज गयी — "मैं कहाँ हूँ? और मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?"

ज़िया तुरन्त ही कमरे में आयी और मुस्कुराते हुए बोली — "आप मेरे पिता के घर में हैं। याद है आपने कहा था कि मुझे रात आपके घर में नहीं बितानी थी। सो मैं अपने पिता के घर में हूँ।

दूसरे आपने कहा था कि अपनी पसन्द की मैं जो कोई भी एक चीज़ चाहूँ वह आपके घर से ला सकती हूँ तो मुझे आप चाहिये थे सो मैं आपको ले आयी।"

सरदार यह सुन कर न चाहते हुए भी मुस्कुरा दिया और बोला — "यकीनन तुम बहुत ही होशियार लड़की हो। चलो मेरे साथ घर वापस चलो। कोई बेवकूफ ही होगा जो ऐसी अक्लमन्द लड़की को अपने घर से निकालेगा।"

अक्लमन्द पत्नी ने सरदार के कान में फुसफुसाया — "और तुम भी तो कोई बेवकूफ नहीं हो।"

16 शेर की मूँछ[34]

यह लोक कथा भी पश्चिमी अफ्रीका के लाइबेरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पहले की बात है एक जवान पति पत्नी अफ्रीका के एक छोटे से गॉव में रहते थे। कुछ दिनों से पति अपनी शादी से खुश नहीं था सो वह काम से घर देर से आता था।

उसकी पत्नी सोचती थी कि उसका पति बहुत ही अच्छा आदमी था पर वह भी अपनी शादी से बहुत ज़्यादा खुश नहीं थी क्योंकि उसका बर्ताव उसको बहुत दुखी कर रहा था।

जब वह बहुत तंग हो गयी तो गॉव के एक सबसे बूढ़े आदमी के पास गयी और उसको जा कर अपनी बात बतायी। वह बूढ़ा आदमी उसकी कहानी सुन कर बहुत दुखी हुआ।

उसी ने उन दोनों की शादी दो साल पहले करायी थी और उस समय उसको लग रहा था कि उन दोनों की शादी अच्छी रहेगी।

कुछ देर बाद कुछ सोच कर वह बोला — "अगर तुम यही चाहती हो कि तुम अपने पति से अलग हो जाओ तो मैं तुम्हारी शादी खत्म किये देता हूँ। उसके बाद तुम आराम से दूसरी शादी कर सकती हो। पर पहले सोच लो तुम सचमुच यही चाहती हो क्या?"

---

[34] Lion's Whisker - folktale from Kush, Liberia, West Africa. Adapted from the Web Site : http://africa.mrdonn.org/lion.html

पत्नी बोली — "नहीं, मैं शादी तोड़ना नहीं चाहती। मैं चाहती हूँ कि वह भी मुझे ठीक से रखे और मैं भी उसको ठीक से रखूँ। हम दोनों प्रेम से रहें पर ऐसा हो ही नहीं पा रहा है। इस समय हम दोनों परेशान हैं।"

वह बूढ़ा आदमी बोला — "तब मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ। मैं एक ऐसी दवा तैयार कर दूँगा जिसको पी कर वह एक अच्छे पति में बदल जायेगा।"

पत्नी खुशी से चिल्लायी — "तो फिर तुम उसे जल्दी से जल्दी तैयार कर दो न।"

बूढ़ा बोला — "मैं तो उसको इसी समय तैयार कर देता पर उसमें पड़ने वाली एक खास चीज़ मेरे पास नहीं है। मैं अब उस चीज़ को लाने के लिये काफी बूढ़ा हो गया हूँ सो अगर तुम वह दवा बनवाना चाहती हो तो तुम्हें ही उस चीज़ को लाना पड़ेगा।"

पत्नी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा — "क्या है वह चीज़? मैं उसको आज ही ला देती हूँ।"

बूढ़ा बोला — "मुझे शेर की मूँछ का एक बाल चाहिये तभी वह दवा काम करेगी।"

यह सुन कर तो वह कुछ सोच में पड़ गयी। उसने अपना नीचे वाला होठ काटा फिर कुछ सँभल कर बोली — "ठीक है मैं उसको लाने की कोशिश करती हूँ।"

अगली सुबह पत्नी ने कच्चे मॉस का एक बहुत बड़ा टुकड़ा लिया और नदी के किनारे उस जगह चल दी जहॉ अक्सर शेर पानी पीने आया करते थे।

उसने वह मॉस का टुकड़ा अपने छिपने की जगह से थोड़ी दूर पर रख दिया और वह खुद एक पेड़ के पीछे छिप कर शेर के वहॉ आने का इन्तजार करने लगी।

कई घंटों के इन्तजार के बाद एक शेर उधर पानी पीने आया। उसको कच्चे मॉस की खुशबू आयी तो उसने इधर उधर देखा। मॉस का एक टुकड़ा उसको पास ही पड़ा दिखायी दे गया। उसने उसको दो तीन बार सूँघा और एक ही बार में खा गया।

खा कर उसने अपना बड़ा सा सिर ऊपर उठाया। उसको पता चल गया कि कोई आदमी वहॉ था। शेर को अपने इतने पास देख कर पत्नी की सॉस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी पर वह सॉस रोके वहीं बैठी रही।

शेर ने भी इधर उधर देखा पर फिर जंगल की तरफ वापस चला गया और गायब हो गया। अगले दिन पत्नी ने फिर वही किया।

अबकी बार उसने एक और बड़ा सा कच्चे मॉस का टुकड़ा लिया और वहीं नदी के किनारे ला कर रख दिया और खुद पेड़ के पीछे छिप गयी।

आज शेर जल्दी ही आ गया। उसी तरह से उसने वह मॉस का टुकड़ा खाया, पानी पिया और चला गया। कई दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा।

दिन हफ्तों में बदल गये। रोज वह पत्नी अपने छिपने वाली जगह से निकल कर शेर के पास और और ज़्यादा पास आती गयी।

एक महीने बाद तो वह शेर के बिल्कुल पास बैठ गयी और शेर को मॉस खाते देखती रही। उसके हाथ कॉप रहे थे पर उसने हाथ बढ़ा कर शेर की मूँछ का एक बाल नोच लिया।

उस बाल को हाथ में पकड़े पकड़े वह वहीं जमी हुई सी बैठी रह गयी जब तक शेर मॉस खा कर वहॉ से चला नहीं गया।

शेर के जाते ही वह वहॉ से उठी और उस बूढ़े आदमी के पास भागी भागी आयी और चिल्ला कर बोली — "मैं ले आयी, मैं ले आयी।"

जब उस बूढ़े ने उसकी कहानी सुनी कि वह कैसे शेर की मूँछ का बाल ले कर आयी तो वह तो दंग रह गया।

वह बोला — "तुमको अपने पति को बदलने के लिये जादू की कोई जरूरत नहीं है। तुम तो खुद ही इतनी बहादुर हो कि तुम ज़िन्दा शेर की मूँछ का बाल तोड़ कर ला सकती हो।

यह जो काम तुमने किया है इस काम के लिये चतुराई और बहादुरी दोनों की जरूरत होती है। क्या यही धीरज, बहादुरी और चतुराई तुम अपने पति को बदलने में इस्तेमाल नहीं कर सकतीं?"

"लेकिन वह दवा? क्या वह दवा ठीक से काम नहीं करेगी?"

बूढ़ा बोला — "शायद वह दवा काम कर जाये पर वह बहुत दिनों तक नहीं चलेगी। मेरी बच्ची, मेरा विश्वास करो। तुम रोज अपने पति को यह जताओ कि तुम उसको कितना प्यार करती हो।

तुम उसकी उलझनों को बॉटो और उनको सुलझाने में सहायता करो। उसको ऐसा जताओ कि तुमको घर में उसकी जरूरत है। उसको भी बदलने के लिये थोड़ा समय दो और फिर देखो कि क्या होता है।"

पत्नी यह सुन कर घर चली गयी और उस बूढ़े की सलाह मान कर काम किया। धीरे धीरे उसका पति उसके पास वापस लौट आया।

अब वह भी खेत पर से दूसरे लोगों के साथ ही वापस लौट आता था। वह अब अपनी पत्नी को देख कर बहुत खुश होता था। कुछ महीनों के अन्दर ही उनकी ज़िन्दगी पहले जैसी हो गयी।

17 काला सॉप और अंडे[35]

यह लोक कथा भी पश्चिमी अफ्रीका के लाइबेरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें पढ़ो कि एक मुर्गी ने अपने अंडे एक सॉप से कैसे बचाये।

मुर्गी चिल्लायी — "अरे मेरे अंडे? मेरा एक अंडा यहॉ नहीं है। कल यहॉ पर **12** अंडे थे और आज यहॉ पर केवल **11** ही अंडे हैं। कहॉ गया मेरा एक अंडा?"

वह अपने मुर्गे को ढूँढने के लिये अपने घर से बाहर निकली पर उसको इस बात का ज़रा सा भी अन्दाज नहीं था कि अगर वह वहॉ से गयी तो उसके और अंडे भी चोरी हो सकते हैं।

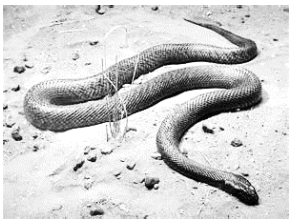

घर से दूर चोर अपनी छिपी हुई जगह से फिर से मुर्गी के जाने का इन्तजार कर रहा था सो जैसे ही मुर्गी ने फिर से अपना घर छोड़ा तो एक काला सॉप धीरे से रेंग कर मुर्गी के घर के पास आया, अंडों की तरफ देखा और तुरन्त ही एक अंडा निगल लिया।

---

[35] Black Snake and the Eggs – a tale from Liberia, West Africa. Adapted from the Web Site : http://www.phillipmartin.info/liberia/text_folktales_snake.htm
By Phillip Martin.

काला सॉप अपने मन में मुस्कुराया कि उसकी यह तरकीब कितनी सादा सी थी और कितना अच्छा काम कर रही थी। उसने दूसरा अंडा निगला।

"मैं दूसरे अंडों के लिये फिर आऊँगा ओ मुर्गी।" और एक हिस्स की आवाज के साथ वह वहॉ से खिसक गया। "दूसरे स्वादिष्ट खाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

इस बीच में परेशान मुर्गी मुर्गे को ले कर अपने घर आ गयी।

वह मुर्गे से बोली — "सुनो जी, कोई मेरा अंडा क्यों चुराना चाहेगा?"

मुर्गा बोला — "क्या तुम्हें यकीन है कि तुमने अपने अंडे ठीक से गिने थे? ऐसा भी तो हो सकता है कि तुमको केवल ऐसा लगा हो कि तुमने **11** अंडे ही देखे।"

मुर्गी का चेहरा देख कर मुर्गे को लगा कि उसको मुर्गी से ऐसा सवाल नहीं पूछना चाहिये था। मुर्गी ने मुर्गे की तरफ घूर कर देखा और बोली — "तुम जानते हो कि मुझे गिनना आता है। और तुम अपने आप ही देख लो कि मेरे घर में कितने अंडे रखे हैं।"

सो मुर्गे ने मुर्गी के अंडे ज़ोर ज़ोर से गिनने शुरू किये — "एक, दो, तीन ..." फिर वह रुक गया और उसने उनको ज़ोर ज़ोर से गिनना बन्द कर दिया तो मुर्गी ने पूछा — "क्यों क्या हुआ? क्या तुम अपनी गलती मानने से डरते हो?"

मुर्गा बोला — "नहीं, ऐसा नहीं है। पर यहाँ कुछ गड़बड़ जरूर है क्योंकि यहाँ तो केवल **9** ही अंडे हैं जबकि तुम कह रहीं थीं कि यहाँ **11** अंडे हैं।"

मुर्गी चिल्लायी — "क्या कहा **9** अंडे? यह क्या हो रहा है? मेरे दो अंडे कहाँ गये? मेरे साथ ऐसा कौन कर रहा है और क्यों कर रहा है?"

अगले कुछ दिन मुर्गी के लिये बहुत ही बुरे निकले क्योंकि वह हमेशा ही अपने बचे हुए **9** अंडों की चिन्ता करती रहती थी।

वह बहुत कोशिश करती कि वह हमेशा अपने अंडों के साथ ही रहे पर हमेशा तो ऐसा हो नहीं सकता था। कभी उसको खाना लाने के लिये जाना पड़ता था तो कभी अपने दूसरे बच्चों की भी देखभाल करनी पड़ती थी।

वह किसी भी काम से अपने अंडों को छोड़ कर जाती तो उसके दूसरे अंडों के साथ भी वही होता जो पहले हुआ था। उसको एक या दो अंडे अपने घर में से गायब ही मिलते।

मुर्गी चिल्लायी — "लगता है कोई मुझे बराबर देख रहा है। क्योंकि जो भी मेरे अंडे चुरा रहा है उसको यह पता है कि मैं किस समय कहाँ हूँ। अब तो मेरे केवल तीन अंडे ही बचे हैं।"

मुर्गे ने उसे तसल्ली देते हुए कहा — "हालाँकि मैं यह बात साबित नहीं कर सकता पर मुझे पूरा भरोसा है कि तुम्हारे अंडे जरूर काला साँप ही चुरा रहा है।

वह धीरज से तुमको देखता रहता है और जब तुम वहॉ नहीं होती हो तो वह उनको खा लेता है। और यह बात तो हम सब जानते हैं कि उसको अंडे खाना कितना अच्छा लगता है।"

यह विचार आते ही कि काला सॉप उसके अंडे खा रहा है मुर्गी कॉप उठी। उसने इस बात की कई कहानियॉ सुन रखी थीं कि सॉप किस तरह अंडे निगल जाता है और फिर अपनी लम्बी गरदन के नीचे ले जा कर कैसे उनको कुचल देता है। उसको लगा शायद मुर्गा ठीक कहता है।

यह सोचते हुए कि वह काफी देर से मुर्गे से बात कर रही थी मुर्गी बोली — "मुझे अब जल्दी घर वापस जाना चाहिये। मुझे अपने अंडे भी देखने हैं।" कह कर वह अपने अंडों के पास भागी।

पर अब तक तो देर हो चुकी थी। उसके दो अंडे और गायब हो चुके थे।

वह वहीं से चिल्लायी — "ओ मुर्गे, यहॉ आओ और ज़रा देखो तो मेरे दो अंडे और गायब हो गये हैं और बस अब केवल एक ही अंडा रह गया है।"

मुर्गा बेचारा भागता हुआ आया और बोला — "ऐसा लगता है कि वह काला सॉप तुम्हारा यह आखिरी अंडा कल खा जायेगा। और जब तक हम उसको पकड़ेंगे नहीं यह भी मुमकिन है कि वह हर बार तुम्हारे अंडों के साथ यही करता रहेगा। हमको उसको अंडे खाने पर रोक लगानी चाहिये।"

"यह तो तुम ठीक कहते हो पर हम करें क्या? हम उस काले सॉप को रोकें कैसे?" मुर्गी बोली।

मुर्गा मुर्गी के कान में फुसफुसाया — "मेरे दिमाग में एक तरकीब आयी है। अगर हमारी वह तरकीब काम कर गयी तो शायद हमको उस काले सॉप से ज़्यादा दिनों तक डरने की जरूरत नहीं है।"

अगली सुबह अपनी उस तरकीब के अनुसार मुर्गी अपने अंडे की देखभाल करती रही जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। और दूर से काले सॉप को भी पता नहीं चला कि उसके लिये एक भयानक जाल बिछाया गया है।

कुछ देर बाद मुर्गी ने अपना अंडा छोड़ा और वहॉ से कहीं और चली गयी। काला सॉप मौका देख कर अपनी छिपी हुई जगह से निकला और तुरन्त ही उसने मुर्गी का आखिरी अंडा निगल लिया।

वह उसके गले से नीचे बड़ी आसानी से उतर तो गया पर जब उसने उसको तोड़ने की कोशिश की तो वह टूटा ही नहीं बल्कि उसके गले में फॅस गया जिससे वह सॉस ही नहीं ले सका।

वह सॉप बहुत ऐंठा, बहुत इधर उधर पलटा ताकि वह उस अंडे को बाहर निकाल सके या कुचल सके और वह सॉस ले सके पर वह कुछ भी नहीं कर सका।

थोड़ी ही देर में मुर्गी मुर्गे के साथ वापस लौट आयी। सॉप की और अंडे की लड़ाई खत्म हो चुकी थी। वह मर चुका था। अब कोई उस मुर्गी के अंडे नहीं चुरायेगा।

मुर्गा बोला — "शायद वह यह बिना जाने ही मर गया कि वह यह अंडा क्यों नहीं तोड़ सका।"

मुर्गी हॅसी और बोली — "कैसे जानता? वह अंडा तो उबला हुआ था।"

सो बच्चो अब तुम्हारी समझ में आया कि मुर्गी ने किस तरह अपने आखिरी अंडा उस काले सॉप से बचाया□अपने अंडे की जगह एक उबला हुआ अंडा रख कर।

18 दस तक गिनने के दो तरीके[36]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के लाइबेरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। गणित की यह एक अच्छी लोक कथा है।

बहुत पुरानी बात है कि लाइबेरिया के एक घने जंगल में उस जंगल के राजा चीते ने अपने आने वाले जीवन के बारे में सोचना शुरू किया।

उसने सोचा कि जब वह सचमुच बूढ़ा हो जायेगा तो बीमार पड़ जायेगा और मर जायेगा। फिर उसके बाद उसका राज्य कौन सॅभालेगा।

अगर कोई राजा अक्लमन्द है तो वह अपना वारिस चुनने के लिये अपने बूढ़े होने का इन्तजार तो नहीं करेगा न। वारिस वह होता है जो किसी के मर जाने पर उसकी जगह ले सके।

सो किसी अक्लमन्द को तो अपना वारिस तभी चुन लेना चाहिये जब वह तन्दुरुस्त हो और जवान हो। पर वह अपना वारिस कैसे चुने जब कि वह अपनी जानवरों की दुनियॉ के सभी जानवरों को एक सा चाहता हो। पर वह सबको तो वारिस नहीं चुन सकता न।

सो राजा चीता एक पेड़ के नीचे बैठ गया और सोचने लगा कि वह अपना वारिस कैसे चुने। कुछ देर बाद उसको एक तरकीब

[36] Two Ways to Count to Ten – a tale from Liberia, West Africa. Adapted from the Web Site : http://www.calacademy.org/exhibits/africa/exhibit/count.htm
Written by Nailah Malik of California, USA.

सूझी। उसने अपने दूतों को बुलाया और उनको सारे लाइबेरिया के जंगलों में भेजा और उनसे कहा कि वे सारे जानवरों से कहें कि वे सब राजा चीते के महल में आयें।

उस दिन वह सबको एक बहुत बड़ी दावत देगा और एक बहुत ही खास घोषणा भी करेगा। सो उसके सारे दूत लाइबेरिया के सब जंगलों में चारों तरफ दौड़ गये। उन्होंने सब जानवरों को यह खबर दे दी और दावत वाले दिन सभी जानवर राजा के महल में इकट्ठा होगये।

राजा के महल में तो मेला लग गया। सारा जंगल जैसे ज़िन्दा हो उठा हो। ऐसा लगता था कि जैसे पूरे लाइबेरिया के सभी जंगलों के सारे जानवर वहॉ आ कर इकट्ठा हो गये हों। उन सबने वहॉ खूब गाना गाया, खूब नाचा और बहुत अच्छा समय बिताया।

जब रात को चॉद पेड़ों के पीछे से ऊपर आ गया तब राजा चीता अपने महल में से निकल कर बाहर आया और उन सब जानवरों के बीच में आ कर खड़ा हो गया।

जब जानवरों ने राजा को देखा तो उसकी इज़्ज़त में उन्होंने गाना नाचना बन्द कर दिया और चुपचाप खड़े हो गये।

राजा बोला — "मैं कुछ दिनों से सोच रहा हूॅ कि अपना वारिस चुन लूॅ पर क्योंकि मैं तुम सब लोगों को एक सा प्यार करता हूॅ इसलिये मैं यह तय नहीं कर पा रहा हूॅ कि मेरा वारिस बनने के लिये

तुम सबमें से सबसे ज़्यादा लायक कौन है। इसलिये मैंने एक मुकाबला रखा है।"

कह कर चीता जंगल के पेड़ों के पीछे की तरफ गया और वहॉ से एक भाला लिये हुए लौटा और बोला — "तुम लोगों में से सबसे पहला जानवर जो इस भाले को आसमान में फेंकेगा और इसके जमीन पर गिरने से पहले दस तक गिन सकेगा वही मेरा वारिस होगा।"

जैसे ही राजा चीते ने अपनी यह घोषणा खत्म की सारे जानवर आपस में कानफूसी करने लगे कि यह कैसे होगा। पर अचानक ही उनके पीछे से एक ज़ोर की आवाज आयी।

सारे जानवरों ने तुरन्त ही पीछे मुड़ कर देखा तो एक तरफ को हट गये क्योंकि एक हाथी अपने पैर पटकते हुए वहॉ चला आ रहा था। असल में हाथी उस मुकाबले में हिस्सा लेने के लिये आ रहा था।

जैसे जैसे वह आगे बढ़ता आ रहा था वह कहता चला आ रहा था — "मेरे रास्ते से हटो, मेरे रास्ते से हटो। मैं राजा बनूँगा। मैं सबसे बड़ा हूँ इसलिये मैं ही राजा बनूँगा।"

राजा चीते ने कहा — ठीक है ठीक है। तुम सबसे पहले इस मुकाबले हिस्सा ले सकते हो। पर इससे पहले कि तुम भाला आसमान में फेंको तुमको जीत का नाच करना पड़ेगा।"

हाथी ने उस खाली जगह में घूम घूम कर अपनी सूँड़ और पैर पटक पटक कर नाच किया। नाचने के कुछ मिनट बाद ही उसने भाला उठाया, उसको अपनी सूँड़ में लपेटा और अपना सिर थोड़ा सा पीछे करते हुए उस भाले को आसमान में फेंक दिया।

फिर उसने गिनती गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार।" और उसका भाला उसके चार कहते ही जमीन पर गिर गया। इस तरह हाथी यह मुकाबला हार गया। अपनी इस हार पर वह इतना गुस्सा था कि कि वह बहुत देर तक अपने पैर पटकता रहा।

राजा चीता बोला — "हाथी, तुमको एक मौका मिलना था सो वह तुमको मिल गया। अब दूसरे जानवरों को इस मुकाबले में हिस्सा लेने का मौका दिया जायेगा।" यह सुन कर हाथी वहाँ से चला गया।

हाथी के जाने के बाद जानवरों में फिर से कानाफूसी होने लगी कि फिर उन्होंने अपने पीछे से आती एक ज़ोर की आवाज सुनी। पीछे मुड़ कर देखा तो अबकी बार एक सूअर पैर पटकता चला आ रहा था।

आते आते सूअर कहता आ रहा था — "मेरे रास्ते से हटो। मैं राजा बनूँगा क्योंकि मैं बहुत ताकतवर हूँ।"

राजा चीता बोला — "ठीक है ठीक है। तुमको मुकाबले के नियम तो मालूम हैं सो भाला फेंकने से पहले तुम जीत का नाच नाचो उसके बाद भाला फेंकना।"

सो सूअर ने भी जीत का नाच नाचा। पहले वह जमीन पर गिर गया और फिर एक पैर पर खड़ा हो कर उस सारी खाली जगह में ऊपर नीचे कूदता रहा।

कुछ देर बाद उसने अपने तेज़ पंजों से जमीन में गड्ढा खोदा। वह गड्ढा इतना ज़्यादा गहरा था कि जब वह उसके अन्दर खड़ा हो गया तो केवल उसका सिर ही दिखायी दे रहा था।

उसने वह भाला अपने दॉतों में दबाया और ऊपर आसमान की तरफ फेंक दिया। फिर उसने गिनती गिननी शुरू की — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह।" और उसके छह कहते ही भाला नीचे जमीन पर गिर गया।

इस तरह सूअर भी वह मुकाबला हार गया। वह भी अपनी इस हार पर इतना ज़्यादा दुखी हुआ कि उसने अपने नथुनों से बहुत सारी हवा निकाली और बहुत सारी धूल उड़ायी।

राजा चीते ने कहा — "सूअर, तुमको भी एक मौका मिलना था सो मिल गया और तुम हार गये।" सो सूअर को भी वहॉ से जाना पड़ा।

सूअर के जाने के बाद जानवरों में फिर से फुसफुसाहट शुरू हुई — "यह तो बड़ा मुश्किल मुकाबला है। इस मुकाबले को तो हाथी

भी नहीं जीत सका जो कि बहुत बड़ा है और सूअर भी नहीं जीत सका। वह तो बहुत ताकतवर है। लगता है इस मुकाबले को कोई जीत ही नहीं सकेगा।"

तभी उन्होंने पीछे से आती हुई फिर से एक ज़ोर की आवाज सुनी। उन्होंने फिर पीछे मुड़ कर देखा तो उन्हें अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। एक बन्दर उछलता कूदता चला आ रहा था।

आते समय वह गा रहा था — "मैं यह कर सकता हूँ। मैं यह कर सकता हूँ। मुझे मालूम है कि मैं यह कर सकता हूँ।"

राजा चीता बोला — "ठीक है ठीक है बन्दर। आओ और आ कर पहले अपना जीत वाला नाच शुरू करो।"

बन्दर बोला — "यकीनन राजा जी, यकीनन। मुझे नाचना बहुत अच्छा लगता है। सब लोग पीछे हो जाओ ओर मुझे नाचने के लिये जगह दो।"

सारे जानवर थोड़ा थोड़ा पीछे हट गये ताकि बन्दर को नाचने के लिये थोड़ी और जगह मिल जाये और बन्दर ने नाचना शुरू कर दिया।

वह ऊपर नीचे, इधर उधर सब जगह कूद कूद कर उछलता रहा। फिर उसने जमीन पर पड़ी पेड़ की एक शाख उठा ली और उसको हिला हिला कर कूदता रहा।

राजा चीता बोला — "ठीक है बन्दर। अब यह लो यह रहा तुम्हारा भाला। फेंको इसको और गिनो दस तक।"

बन्दर ने भाला लिया, कुछ दूर पीछे हटा, फिर उसने अपनी बॉह पीछे की और हवा में कूद कर भाला आसमान में फेंक दिया।

उसने गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह, सात, आठ।" और आठ कहते न कहते उसका भाला भी जमीन पर आ गिरा। इस तरह बन्दर भी वह मुकाबला न जीत सका।

यह देख कर बन्दर बहुत परेशान हो गया। वह अपनी इस हार पर इतना गुस्सा हुआ कि चारों तरफ लोटने लगा और कई तरह की सफाई देने लगा।

उसने राजा से एक मौका और देने की प्रार्थना की पर राजा चीते ने कहा — "नहीं बन्दर नहीं। सभी जानवरों को केवल एक एक मौका ही दिया जा रहा है। तुमको भी एक मौका मिलना था सो तुम्हें मिल गया। अब तुम जा सकते हो।" सो बन्दर को भी वहॉ से जाना पड़ा।

बन्दर की हार के बाद तो जानवरों को विश्वास सा हो गया कि यह मुकाबला जीतना तो बहुत ही मुश्किल है।

एक जानवर बोला — "हे भगवान, यह मुकाबला कितना मुश्किल है। हम तो सोचते थे कि हमारा राजा कितना अक्लमन्द है पर वह तो अपनी अक्लमन्दी हमारे ही ऊपर दिखा रहा है।

यह भी हो सकता है कि वह जानता हो कि कोई भी यह भाला आसमान में इतना ऊँचा न फेंक सकता हो जो वह उसके गिरने से पहले दस तक गिनती गिन सके।

यह राजा हम सबको बेवकूफ साबित करना क्यों चाह रहा है। मैं यहाँ बेवकूफ बनने के लिये नहीं खड़ा मैं तो घर जा रहा हूँ।"

सो कुछ जानवरों ने अपने अपने घरों को जाना शुरू कर दिया पर जैसे ही वे अपने अपने घरों की तरफ जाने के लिये पलटे उन्होंने पीछे से आती हुई एक और आवाज सुनी।

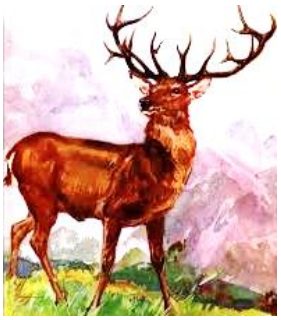

उन्होंने फिर पीछे मुड़ कर देखा तो उनकी ऑखें तो फटी की फटी रह गयीं। एक बहुत ही छोटा सा बारहसिंगा भीड़ में से चला आ रहा था। आगे आ कर वह बोला — "अभी रुको, मुझे भी कोशिश कर लेने दो। शायद मैं इसे कर सकता हूँ।"

यह सुन कर सारे जानवर हँस पड़े। हाथी बारहसिंगे से बोला — "क्या मतलब? क्या तुम सोचते हो कि तुम यह काम कर सकते हो? जब मैं यह काम नहीं कर सका तो तुम कैसे कर सकते हो। जाओ जाओ अपने घर वापस जाओ।"

इस पर तो जानवर और बहुत ज़ोर से हँस पड़े। जानवरों को हँसता देख कर राजा चीता चिल्लाया — "हँसो नहीं। मैं तुम लोगों को इस तरह से बारहसिंगे की हँसी उड़ाने की इजाज़त नहीं दे

सकता। यह कौन कहता है कि जो काम बड़े जानवर नहीं कर सकते वह कोई छोटा जानवर भी नहीं कर सकता।

अब अगर बारहसिंगा इस मुकाबले में हिस्सा लेना चाहता है तो उसको भी दूसरे जानवरों की तरह इस मुकाबले में हिस्सा लेने का मौका दिया जायेगा। सब शान्ति से खड़े रहो। अब बारहसिंगा अपना जीत का नाच नाचेगा।"

सो लाइबेरिया के जंगलों की उस मुकाबले की रात बारहसिंगा अपनी जीत का नाच नाचा। पर उसका नाच दूसरे जानवरों से काफी अलग था।

वह पहले तो कुछ देर तक अपने पैर बाहर निकाल कर और अपना सिर आसमान की तरफ उठा कर गोले में घूमता रहा जैसे वह भगवान को अपने ज़िन्दा रहने के लिये धन्यवाद दे रहा हो।

फिर वह जानवरों की तरफ घूमा जैसे कि वह उन जानवरों से कह रहा हो कि वह उनको बहुत प्यार करता है और उनके साथ इस समय बैठ कर उसे बहुत अच्छा लग रहा है।

आखीर में बारहसिंगे ने घूम कर राजा की तरफ देखा जैसे वह कह रहा हो कि वह अपने राजा को भी बहुत प्यार करता था जो अक्लमन्द होने के साथ साथ मेहरबान भी था।

फिर वह थोड़ा पीछे हटा, उसने अपने दॉतों में भाला दबाया और अपनी सारी ताकत के साथ भागना शुरू किया। जब वह उस

साफ जगह के बीच में पहुँचा जहाँ से उसको भाला फेंकना था तो वह ऊपर कूदा और भाला आसमान में फेंक दिया।

फिर वह चिल्लाया — "पाँच और पाँच दस।"

यह सुन कर सारे जानवर चुपचाप खड़े रह गये पर हाथी बोला — "यह क्या है?"

बन्दर ने भी सिर खुजलाते हुए कहा — "पाँच और पाँच दस?"

तब राजा चीता आगे आया और उसने सबको समझाया। वह बारहसिंगे से बोला — "बारहसिंगे, तुम ठीक कहते हो। पाँच और पाँच दस होते हैं और इसी तरह से तीन और सात भी दस होते हैं। और भी कई तरह से हम दस तक गिन सकते हैं।

दस तक गिनने का केवल एक ही तरीका नहीं होता – एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ... ।"

यह मुकाबला यह पता करने के लिये नहीं था कि कौन सबसे बड़ा जानवर है या कौन सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर है यह मुकाबला तो यह जानने के लिये था कि कौन सबसे ज़्यादा अक्लमन्द जानवर है।"

और इस तरह से राजा चीते के मरने के बाद जंगल का सबसे छोटा जानवर बारहसिंगा राजा बन गया। इसलिये नहीं कि वह सब

से बड़ा जानवर था या सबसे ज्यादा ताकतवर जानवर था बल्कि इस लिये कि वह सबसे ज़्यादा अक्लमन्द जानवर था।

19 तीन आश्चर्यजनक लड़के[37]

यह पश्चिमी अफ्रीका के सियरा लिओन देश की एक ऐसी कहानी है जिसे वहॉ के दादा लोग अपने पोते पोतियों को अक्सर आग के पास बैठ कर सुनाया करते हैं।

बहुत पुरानी बात है, कि एक आदमी के तीन आश्चर्यजनक बेटे थे। पहले बेटे की आश्चर्यजनक बात यह थी कि उसके कान बहुत तेज़ थे। अगर घास में कोई छोटे से छोटा कीड़ा भी चले तो उसके चलने की आवाज़ भी उसे सुनायी पड़ जाती थी।

उसके दूसरे बेटे की आश्चर्यजनक बात यह थी कि उसकी नजर बहुत तेज़ थी। वह रास्ते में एक मील दूर पड़ा एक छोटा सा दाना भी देख लेता था, या नदी के दूसरे किनारे पर खड़े केले के पेड़ पर भिनभिनाती मक्खियॉ भी साफ साफ देख सकता था।

और उसके तीसरे बेटे की आश्चर्यजनक खासियत यह थी कि वह जो देख लेता था वही गिन लेता था चाहे वे पेड़ की पत्तियॉ हों या आकाश के तारे।

अब हुआ यह कि एक दिन इन तीनों लड़कों ने अपने माता पिता से विदा ली और एक लम्बे सफर पर निकल पड़े। रास्ते में खाने के लिये उन्होंने अपने साथ एक बोरी बाजरा रख लिया।

[37] Three Wonderful Boys – a folktale of Sierra Leone, Western Africa

चलते चलते बीच में एक नदी पार करने की जरूरत पड़ी तो नदी पार करने के लिये उन्होंने एक नाव किराये पर ली। सँभल कर वे नाव पर चढ़े, देखभाल कर उन्होंने अपना बाजरे का बोरा भी नाव पर चढ़ाया और नाविक ने नाव खे दी।

कुछ ही देर में पहला लड़का चिल्लाया — "ज़रा रुको, बाजरे का एक दाना नदी में गिर पड़ा है। मैंने अभी अभी उसके गिरने की आवाज सुनी है"।

इतनी देर में तीसरा लड़का जो बोरे की ओर देख रहा था बोला —"तुम ठीक कहते हो, मैंने इस बोरी के सारे दाने गिन लिये हैं। इनमें से वास्तव में एक दाना कम है। जल्दी करो, उस दाने को खोज कर लाओ। हम तब तक आगे नही बढ़ेंगे जब तक हमें वह दाना नहीं मिल जायेगा।"

इस पर दूसरा लड़का जो दूर की चीज़ साफ साफ देख सकता था बोला — "यह बिल्कुल ठीक कह रहा है, वह रहा वह दाना। मैं अभी जाता हूँ और वह दाना ले कर आता हूँ।" इतना कह कर वह नदी में कूद गया। कुछ ही पल में वह दूसरा लड़का नदी से बाहर आ गया। उसके हाथ में बाजरे का एक दाना था।

वह बोला — "लो, यह रहा वह दाना। वाह, मेरे भाई ने कितना अच्छा किया जो उसके गिरने की आवाज सुन ली थी।" इतना कह कर उसने वह दाना बोरी में वापस रख दिया।

तीसरे लड़के ने कहा — "हॉ अब ठीक है। नाविक, अब तुम चल सकते हो। अब तुम हमें नदी के उस पार पहुँचा दो ताकि हम अपना सफर फिर से शुरू कर सकें।"

बच्चो, क्या तुम बता सकते हो कि इन तीनों में से कौन सा बेटा सबसे अधिक आश्चर्यजनक था? वह जो सुन सका, या वह जो देख सका, या फिर वह जो गिन सका?

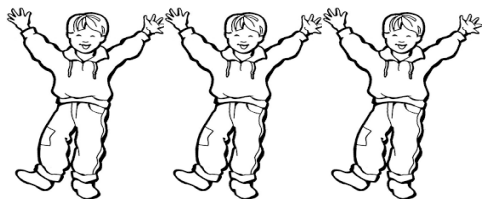

African Folk Tales Available in Hindi By Sushma Gupta

All available from hindifolktales@gmail.com

Desh Videsh Ki Lok Kathayen Series

Africa Ki Lok Kathayen. 19 tales. 170 p
Dakshin Africa Ki Lok Kathayen. 28 tales. 172 p
Africa Se Kachhua Aayaa-1. 17 tales. 132 p.
Africa Se Kachhua Aayaa-2. 21 tales. 158 p.
Anansi Makada Africa Mein-2. 24 tales. 228 p
Anansi Makada Duniyan Mein. 33 tales. 210 p
Chalak Khargosh Africa Mein. (23 tales. 226 p.
Ethiopia Ki Lok Kathayen-1. 26 tales. 126p – Published
Ethiopia Ki Lok kathayen-2. 19 tales. 92p - Published
Ethiopia Ki Lok Kathayen-3. (47 tales/204p)
Mishra Ki Lok Kathayen. (13 tales/180p)
Nigeria Ki Lok Kathayen-1. (30 tales/184p)
Nigeria Ki Lok Kathayen-2. (15 tales/164p)
Dakshinee Nigeria Ki Lok Kathayen. (39 tales/256p)

African Lok Kathaon Ki Classsic Pustaken Series

No 1. Zanzibar Ki Lok Kathayen. By George W Bateman. 1901. 10 tales. 170 p.
No 7. Nelson Mandela Ki Priya Africa Ki Lok Kathayen. 2002. 32 tales.
No 8. Chaudah Sau Kaudiyan…. By Fuja Abayomi. 1962. 31 tales.
No 12. Africa Ki Lok Kathayen. By Alessandro Ceni. 1998. 18 tales
No 13. Lavaris Ladki Aur Doosari Kahaniyan. By Buchi Offodile. 2001. 41 tales.
No 14. Gaaya Ki Poonchh Ka Chanwar…. By Harold Courlander and George Herzog. 1947. 17 tales.
No 15. Dakshinee Nigeria Ki Lok Kathayen. 1910. 40 tales.
No 20. Pashchimee Nigeria Ki Lok Kathayen. By William J Barker and Cecilia Sinclair. 1917. 35 tales.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022